इतिहास

परिचय

उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तक फैला यह उपमहाद्वीप भारतवर्ष के नाम से ज्ञात है, जिसे महाकाव्य तथा पुराणों में 'भारतवर्ष' अर्थात् 'भरत का देश' तथा यहां के निवासियों को भारती अर्थात् भरत की संतान कहा गया है। यूनानियों ने भारत को इंडिया तथा मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने हिन्द अथवा हिन्दुस्तान के नाम से संबोधित किया है।

- अतीत काल की घटनाओं की स्थिति की जानकारी देने वाले शास्त्र को ही हम **'इतिहास'** कहते हैं।
- प्राचीन भारतीय इतिहास समझने एवं सुविधा के लिए इतिहासकारों ने इसे तीन भागों में बांटा है–

(*i*) प्रागैतिहासिक काल

(*ii*) आद्य-ऐतिहासिक काल

(*iii*) ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल

- इस काल का इतिहास पूर्णत: पुरातात्विक साधनों पर निर्भर है। इस काल का कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है, क्योंकि मानव का जीवन अपेक्षाकृत असभ्य एवं बर्बर था।
- मानव सभ्यता के इस प्रारम्भिक काल को सुविधानुसार तीन भागों में बांटा गया है–

(*i*) पुरा पाषाण काल

(*ii*) मध्य पाषाण काल

(*iii*) नव पाषाण काल (उत्तर पाषाण काल)

भारतीय इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में बांटा गया है–प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत एवं आधुनिक भारत।

examtrix Free Education Platform

प्राचीन इतिहास (भारत) जानने के स्रोत

- प्राचीन इतिहास जानने के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण स्रोत हैं–

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशी यात्रियों के विवरण

पुरातात्विक स्रोत

- प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्रियां सर्वाधिक प्रामाणिक हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यत: **अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियां, चित्रकला** आदि आते हैं।

अभिलेख

- पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत अभिलेख हैं। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो 300 ई. पू. के लगभग हैं।
- **मास्की, गुज्जर्रा, निट्टूर** एवं **उडेगोलम** से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है। इन अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** में हैं। केवल उत्तरी पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख **खरोष्ठी लिपि** में हैं। खरोष्ठी लिपि फारसी लिपि की भांति दाईं से बाईं ओर को लिखी जाती है।
- प्रारम्भिक अभिलेख (गुप्त काल से पूर्व) प्राकृत भाषा में हैं किन्तु गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में हैं।
- ईरानी सम्राट से प्रभावित होकर अशोक ने अपने राज्य में अभिलेख जारी करवाया।

- सर्वप्रथम 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।

स्मरणीय प्रमुख अभिलेख

अभिलेख	शासक	विषय
• हाथी गुम्फा अभिलेख (तिथि रहित अभि.)	कलिंग राज खारवेल	खारवेल के शासन काल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण मिलता है।
• जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख	रुद्रदमन	रुद्रदमन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण प्राप्त होता है।
• नासिक अभिलेख	गौतमी लबश्री	गौतमी पुत्र सातकर्णी के सैनिक सफलताओं तथा (सातवाहन) अन्य कार्यों का विवरण मिलता है।
• प्रयाग स्तम्भ लेख	समुद्रगुप्त	समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूरा विवेचन मिलता है।
• मन्दसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोधर्मन	यशोधर्मन की सैनिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
• एहोल अभिलेख द्वितीय	पुलकेशिन	हर्ष-पुलकेशिन II के युद्ध का विवरण मिलता है।
• ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार नरेश भोज	गुर्जर-प्रतिहार शासकों के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है।
• भितरी तथा जूनागढ़ अभिलेख	स्कन्दगुप्त	स्कन्द गुप्त के जीवन के अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण मिलता है।
• देवपाड़ा अभिलेख	बंगाल शासक विजयसेन	विजयसेन के शासन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है।

examtrix Free Education Platform

सिक्के

- सिक्के के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। सिक्के **तांबा, चांदी, सोना** और **सीसा** धातु के बनते थे।
- आरम्भिक सिक्कों पर चिह्न मात्र मिलते हैं किन्तु बाद के सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम चित्र तथा तिथियां भी उल्लिखित मिलती हैं।
- **आहत सिक्के/पंचमार्क सिक्के**–भारत के प्राचीनतम सिक्के आहत सिक्के हैं जो ई. पू. **पंचवी** सदी के हैं। ठप्पा मारकर बनाये जाने के कारण भारतीय भाषाओं में इन्हें आहत मुद्रा कहते हैं।
- आहत मुद्राओं की सबसे पुरानी निधियां पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध में मिली हैं।
- आरम्भिक सिक्के अधिकतर **चांदी** के होते। ये सिक्के **पंचमार्क** सिक्के कहलाते थे। इन सिक्कों पर **पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्द्धचन्द्र** आदि आकृतियां बनी होती थीं।
- सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं जो विशेषत: सीसे, चांदी, तांबा एवं सोने के हैं। सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सर्वाधिक सिक्के जारी किये।

मूर्तियां

- कुषाण कालीन **गान्धार कला** पर विदेशी प्रभाव है जबकि **मथुरा कला** पूर्णत: स्वदेशी है।
- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्ति कला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।

स्मारक एवं भवन

- प्राचीन काल में महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- उत्तर भारत के मंदिर **'नागर शैली'** दक्षिण के **'द्राविड़ शैली'** तथा दक्षिण पथ के मंदिर **'वेसर शैली'** में है।

- दक्षिण पूर्व एशिया व मध्य एशिया से प्राप्त मंदिरों तथा स्तूपों से भारतीय संस्कृति के प्रसार पर प्रकाश पड़ता है।

चित्रकला

- चित्रकला से हमें उस समय के जीवन और समाज के विषय में जानकारी मिलती है।
- अजन्ता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रकला में 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्तकाल की कलात्मक उन्नति का पूर्ण आभास मिलता है।

अवशेष–अवशेषों में प्राप्त मुहरों से प्राचीन का इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिलती है।

- हड़प्पा, मोहन जोदड़ो से प्राप्त मुहरों से उनके धार्मिक अवस्थाओं का ज्ञान होता है।
- बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों से व्यापारिक श्रेणियों का ज्ञान होता है।

साहित्यिक स्त्रोत–साहित्यिक स्त्रोत दो प्रकार के हैं–

1. धार्मिक साहित्य
2. लौकिक साहित्य या धर्मेत्तर साहित्य

- धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रन्थ की चर्चा की जा सकती है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रन्थ आते हैं।
- ब्राह्मणेत्तर ग्रन्थों में बौद्ध एवं जैन साहित्यों से सम्बन्धित रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है।
- इसी प्रकार लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रन्थों, जीवनियों, कल्पना प्रधान तथा गल्त साहित्य का वर्णन किया जाता है।

ब्राह्मण साहित्य

- **वेद**–ब्राह्मण साहित्य में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन की जानकारी मिलती है।
- वेदों की संख्या चार है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अर्थर्ववेद।
- वैदिक युग की सांस्कृतिक दशा के ज्ञान का एक मात्रस्त्रोत वेद है।
- **ऋग्वेद**–इसकी रचना हम 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के बीच मानते हैं। ऋक् का अर्थ है - छन्दों एवं चरणों से युक्त मंत्र। यह एक ऐसा ज्ञान (वेद) है जो ऋचाओं में बद्ध है एवं ऋग्वेद कहलाता है।
- ऋग्वेद में कुल दस मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के मंत्रों को यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति हेतु होतृ ऋषियों द्वारा उच्चारित किया जाता था।
- ऋग्वेद में पहला एवं दसवां मण्डल सबसे अन्त में जोड़ा गया है।
- ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं–**ऐतरेय** एवं **कौषीतिकी** अथवा **शंखायन।**
- **यजुर्वेद**–यजु का अर्थ है 'यज्ञ'। इसमें यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है।
- यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में लिखे गये हैं।
- **सामवेद**–'साम' का शाब्दिक अर्थ है - गान। इसमें मुख्यत: यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे 'भारतीय संगीत का मूलाधार' कहा जा सकता है।
- सामवेद में मुख्यत: सूर्य की स्तुति के मंत्र हैं। सामवेद के मंत्रों को गाने वाला उद्गाता कहलाता था।
- **अथर्ववेद**–इसकी रचना सबसे अन्त में हुई। इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा 6000 मंत्र हैं। इसमें आर्य एवं अनार्य विचार-धाराओं का समन्वय मिलता है।

स्मरणीय तथ्य

- **संहिता**–चारों वेदों का सम्मिलित रूप।
- **वेद**–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- **वेदत्रयी**–ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के सम्मिलित संग्रह।
- **वेदांग**–कुल 6-ये गद्य में सूत्र रूप में लिखे गये हैं।

examtrix Free Education Platform

(1) शिक्षा (उच्चारण विधि)

(2) कल्प (कर्मकाण्ड)

(3) व्याकरण

(4) निरुक्त (भाषा-विज्ञान)

(5) छन्द

(6) ज्योतिष

- **कल्पसूत्र**–श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र।
- धर्म सूत्र से ही स्मृति ग्रन्थों का विकास हुआ।
- **व्याकरण ग्रन्थ**–पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, पतंजलिकृत महाभाष्य (टीका)
- **महाकाव्य**–रामायण एवं महाभारत।
- **ऋग्वेद** के दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में चारों वर्गों का उल्लेख है।

ब्राह्मण ग्रन्थ

- इनकी रचना संहिताओं की व्याख्या हेतु सरल गद्य में की गई है। ब्रह्म का अर्थ है - यज्ञ। अत: यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ 'ब्राह्मण' कहलाते हैं। प्रत्येक वेद के लिए अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में **राज्याभिषेक** के नियम तथा कुछ प्राची अभिषिक्त राजाओं के नाम दिये गये हैं।
- शतपथ ब्राह्मण में गान्धार, शल्य, कैकेय, कुरु, पांचाल, कोशल, विदेह आदि राजाओं के नाम का उल्लेख है।
- प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद **शतपथ ब्राह्मण** का स्थान।

आरण्यक

- यह ब्राह्मण ग्रन्थ का अंतिम भाग है जिसमें दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन किया गया है।

उपनिषद

- उपनिषद आरण्यकों के पूरक एवं भारतीय दर्शन के प्रमुख स्रोत हैं। वैदिक साहित्य के अंतिम भाग होने के कारण इन्हें **वेदान्त** भी कहा जाता है।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **'सत्यमेव जयते'** मुण्डकोपनिषद से उद्धत है। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, मोक्ष एवं पुनर्जन्म की अवधारणा मिलती है।
- **महाकाव्य**–वैदिक साहित्य के बाद भारतीय साहित्य में **रामायण और महाभारत** नामक दो महाकाव्यों का जिक्र आता है।
- **महाभारत महाकाव्य** की रचना ई. के आस-पास प्रतीत होता है।
- **महाभारत** की रचना वेद व्यास ने की थी। पहले इसमें केवल **8800 श्लोक** थे और इसका नाम **जय-संहिता** था। बाद में ये बढ़कर 24000 श्लोक हो गए और **भारत** नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा है।
- अन्त में एक लाख श्लोक होने के कारण इसे **शत साहस्त्री संहिता** या **महाभारत** कहा जाने लगा।
- **रामायण**–महर्षि बाल्मीकि जी द्वारा रचित **रामायण** में मुख्यत: 6000 श्लोक थे जो बाद में बढ़कर 12000 श्लोक हो गये पर अन्तत: इसमें 24000 श्लोक हो गये। इसकी रचना सम्भवत: ई. पू. पांचवीं सदी में शुरू हुई।
- **रामायण** हमारा आदि काव्य है। इसमें हमें हिन्दुओं तथा यवनों और शकों के संघर्ष का विवरण प्राप्त होता है।
- **रामायण** ओर **महाभारत** से हमें प्राचीन भारत वर्ष की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दशा का परिचय मिलता है।

ब्राह्मणेतर साहित्य

- **बौद्ध साहित्य**–भारतीय इतिहास के साधन के रूप में बौद्ध साहित्य का विशेष महत्व है। सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ **त्रिपिटक** है। इनके नाम हैं–**सुत पिटक, विनय पिटक** और **अभिधम्म पिटक।**

examtrix Free Education Platform

- **सुत पिटक**–बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह। इसे बौद्ध धर्म का **'इनसाइक्लोपीडिया'** भी कहा जाता है।
- प्राचीनतम बौद्ध ग्रन्थ पालि भाषा में है। पालि भाषा में लिखे गये बौद्ध ग्रन्थों को द्वितीय या प्रथम सदी ई. पू. का माना जाता है।
- बौद्ध ग्रन्थों को श्रीलंका में ई. पू. द्वितीय शताब्दी में संकलित किया गया।
- जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास **'कल्पसूत्र'** (लगभग चौथी शती ई. पू.) से ज्ञात होता है जिसकी रचना **भद्रबाहु** ने की थी।

लौकिक साहित्य

- लौकिक साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा जीवनियों का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। इससे राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की रूपरेखा स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण सहायोग मिलता है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख **अर्थशास्त्र** का किया जा सकता है।
- **अर्थशास्त्र**–इसे सम्भवत: भारत का पहला राजनीतिक ग्रन्थ माना जाता है। इसी रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्य (चाणक्य, विष्णु गुप्त) ने की थी।
- मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीति के ज्ञान के लिए अर्थशास्त्र ग्रन्थ एक प्रमुख स्रोत है। यह एक महत्वपूर्ण **विधि ग्रन्थ** है। **पन्द्रह अधिकरणों** या खण्डों में विभक्त अर्थशास्त्र का द्वितीय और तृतीय खण्ड सर्वाधिक प्राचीन है।
- अर्थशास्त्र प्राचीन राजतन्त्र तथा अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।
- विशाखदत्त के **मुद्राराक्षस**, सोमदेव के **कथा सरित्सागर** और क्षेमेन्द्र की **वृहत्कथा मंजरी** से मौर्य काल की कुछ घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।
- पतंजलि के **महाभाष्य** तथा कालिदास **मालविकाग्निमित्र** से शुंग काल के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। शूद्रक के **मृच्छकटिकम्** नाटक से तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्राप्त होता है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वाधिक महत्त्व कश्मीरी कवि कल्हण द्वारा रचित **'राजतरंगिणी'** का है। यह संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है।
- **राजतरंगिणी** की रचना (1149-50 ई.); **12वीं सदी** में हुई। इससे कश्मीर के इतिहास के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- मोहनजोदड़ो के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग टीले को **'स्तूपटीला'** भी कहा जाता है क्योंकि यहां पर कुषाण शासकों ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्य अवशेषों में ***'महाविद्यालय भवन', कांसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति, पुजारी (योगी) की मूर्ति, मुद्रा पर अंकित पशुपति नाथ (शिव) की मूर्ति, कुम्भकारों के छः भट्ठे, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खण्ड, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी, अंतिम स्तर पर बिखरे हुए एवं कुएं से प्राप्त नर कंकाल, घोड़े के दांत एवं गीली मिट्टी पर कपड़े के साक्ष्य*** मिले हैं।

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

हड़प्पा : यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मांटगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित प्रमुख नगर था। इसके बारे में जानकारी सन् 1921 में हुई थी। इसके उत्खनन कर्त्ता **दयाराम साहनी** थे।

मोहनजोदड़ो - यह भी पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के किनारे स्थित प्रमुख नगर था। इसकी खोज सर्वप्रथम सन् 1922 में हुई थी। मोहनजोदड़ो के उत्खनन कर्त्ता राखालदास बनर्जी थे।

लोथल - यह स्थल गुजरात राज्य के अहमदाबाद जिले के (खंभात की खाड़ी के ऊपर) भोगवा नदी (लिम्रिकोभीगवा) के किनारे स्थित है। यहां की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि हड़प्पा कालीन बंदरगाह की खोज है। इसका उत्खनन कार्य 1954-63 तक एस.आर. राव एवं वत्स के नेतृत्व में हुआ। यहां से प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है कि यहां के निवासी 1800 ई. पूर्व भी चावल उगाते थे।

कालीबंगा - यह स्थल वर्तमान राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। यहां पर हड़प्पा पूर्व संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसकी खुदाई 1953 में डॉ. ए. घोष ने कराई थी।

Examtrix Free Education Platform

बनावली – यह हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है। यहां पर दो सांस्कृतिक अवस्थाएं हड़प्पा पूर्व और हड़प्पाकालीन मिली हैं। यहां पर उन्नत किस्म का जो प्राप्त हुआ है। इसका उत्खनन 1973 में आर.एस. विष्ट ने कराया था।

चन्हूदड़ो – यह पाकिस्तान के सिंधु प्रांत में मोहनजोदड़ो से 30 किमी. दक्षिण में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। यहां पर मुहर, गुड़ियों के निर्माण के साथ-साथ हड्डियों से निर्मित विभिन्न वस्तुओं का निर्माण भी किया जाता था। इसकी खोज सन् 1931 में एन.जी. मजूमदार ने की थी।

धौला वीरा – यह गुजरात में अरब सागर के तट पर स्थित है। 1963-68 में जे.पी. जोशी ने इसकी खुदाई की थी।

सिंधु सभ्यता की विशेषताएं

नगर योजना – सिंधु सभ्यता को नगरीय सभ्यता कहा जाता है, क्योंकि यहां के नगरों का निर्माण सुनियोजित ढंग से किया गया था। सड़कें लम्बी- चौड़ी तथा एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। नगर आधुनिक व्यावसायिक शैली पर निर्मित थे। प्रत्येक गली में कुएं तथा भवनों में स्नानागार थे। नगर का प्रत्येक भाग लम्बाई एवं चौड़ाई में गलियों द्वारा मुहल्लों में विभाजित था। गंदे पानी के निकास हेतु नगर में छोटी, बड़ी तथा गहरी नालियों का जाल सा बिछा हुआ था। ईंट, चूना तथा खड़िया मिट्टी से निर्मित इन नालियों को बड़ी-बड़ी ईंटों तथा पत्थरों से ढका जाता था।

भवन निर्माण – सड़कों तथा गलियों के दोनों ओर भवनों का निर्माण एक पंक्ति में कच्ची तथा पक्की ईंटों के द्वारा किया जाता था। भवन में रसोईघर, स्नानघर, आंगन तथा शौचालयों का निर्माण किया जाता था। द्वार भवन छोटे-बड़े, एक मंजिले तथा दो मंजिले होते थे। भवनों के द्वार राजमार्गों की ओर न खुलकर गली में पीछे की ओर खुलते थे।

सार्वजनिक स्नानागार – उत्खनन में मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक विशाल सार्वजनिक स्नानागार प्राप्त हुआ है। पक्की ईंटों से निर्मित इस स्नानागार की लम्बाई *39 फीट (12 मीटर)*, *चौड़ाई 23 फीट (7 मीटर)* तथा गहराई *8 फीट (2.5 मीटर)* है। इसके चारों ओर स्नान हेतु चबूतरे तथा अंदर पहुंचने के लिए सीढ़ियां थीं।

अन्नागार – मोहनजोदड़ो का *अन्नागार 45.71 मीटर लम्बा* तथा *15.23 मीटर चौड़ा* है। हड़प्पा के दुर्ग में 6 अन्य अन्नागार मिले हैं जो कि 15.23 × 6.09 मीटर आकार के हैं। इसके दक्षिण में अनाज साफ करने हेतु ईंटों के गोलाकार चबूतरे बने हुए थे।

सामाजिक व्यवस्था

- समाज की इकाई परम्परागत तौर पर परिवार थी। मातृदेवी की पूजा तथा मुहरों पर अंकित चित्रों से यह परिलक्षित होता है कि हड़प्पा समाज सम्भवतः **मातृसत्तात्मक था।**
- नगर नियोजन दुर्ग, मकानों के आकार व रूपरेखा तथा शवों के दफनाने के ढंग को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सैन्धव समाज अनेक वर्गों जैसे **पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे** एवं **श्रमिकों** में विभाजित रहा होगा।
- सैन्धव सभ्यता के लोग युद्धप्रिय कम शान्तिप्रिय अधिक थे।
- सिन्धु सभ्यता के निवासी **शाकाहारी** एवं **मांसाहारी,** दोनों थे। भोज्य पदार्थों में गेहूं, जौ मटर, तिल, सरसों, खजूर, तरबूज, गाय, सुअर, बकरी का मांस, मछली, घड़ियाल, कछुआ आदि का मांस प्रमुख रूप से खाये जाते थे।
- वस्त्र सूती एवं ऊनी, दोनों प्रकार के पहले जाते थे। आभूषणों का प्रयोग पुरुष एवं महिलाएं दोनों करते थे।
- मनोरंजन के लिए पासे का खेल, नृत्य, शिकार, पशुओं की लड़ाई आदि प्रमुख साधन थे। धार्मिक उत्सव एवं समारोह भी समय-समय पर धूमधाम से मनाये जाते थे।
- शवों की अन्त्येष्टि संस्कार में तीन प्रकार के शवोत्सर्ग के प्रमाण मिले हैं–
  1. **पूर्ण समाधिकरण** में सम्पूर्ण शव को भूमि में दफना दिया जाता था।
  2. **आंशिक समाधिकरण** में पशु-पक्षियों के खाने के बाद बचे शेष भाग को भूमि में दफना दिया जाता था।
  3. **दाह संस्कार में शवों को संभवतः जला दिया जाता था।**

धार्मिक जीवन

- पुरास्थलों से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों, पत्थर की छोटी मूर्तियों, मुहरों, पत्थर निर्मित लिंग एवं योनियों, मृदभाण्डों पर चित्रित चिन्हों से यह परिलक्षित होता है कि धार्मिक विचारधारा **मातृदेवी, पुरुषदेवता (पशुपतिनाथ), लिंग-योनि, वृक्ष प्रतीक, पशु, जल** आदि की पूजा की जाती थी।

examtrix Free Education Platform

- **मोहनजोदड़ो** से प्राप्त एक सील पर तीन मुख वाला एक पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है। उसके सिर पर तीन सींग हैं। उसके बाई ओर एक **गैंडा** और **भैंसा** तथा दाई ओर एक **हाथी** एक **व्याघ्र** एवं **हिरण** है। इसे **पशुपति शिव** का रूप माना गया है। मार्शल ने इन्हें 'आद्यशिव' बताया।
- हड़प्ता में पकी मिट्टी की स्त्री-मूर्तिकाएं भारी संख्या में मिली हैं। एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। यह सम्भवत: पृथ्वी देवी की प्रतिमा है। हड़प्ता सभ्यता के लोग धरती की उर्वरता की देवी मानकर इसकी पूजा करते हैं।
- हड़प्पा सभ्यता से स्वास्तिक, चक्र और क्रॉस के भी साक्ष्य मिलते हैं। स्वास्तिक और चक्र सूर्य पूजा का प्रतीक था।
- धार्मिक दृष्टिकोण का आधार **इहलौकिक** तथा **व्यावहारिक** अधिक था। मूर्तिपूजा का आरम्भ सम्भवत: सैन्धव सभ्यता से होता है।

आर्थिक जीवन

- हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था सिंचित कृषि अधिशेष पशुपालन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आन्तरिक और विदेश व्यापार पर आधारित थी।
- सैन्धव सभ्यता में कोई फावड़ा या फाल नहीं मिला है परन्तु **कालीबंगा** में **हड़प्पा-पूर्व अवस्था** में कूड़ो (हल रेखा) से ज्ञात होता है कि हड़प्पा काल में राजस्थान के खेतों में हल जोते जाते थे।
- हड़प्पाई लोग शायद **लकड़ी के हलों** का प्रयोग करते थे। फसल काटने के लिए पत्थर के हंसियों का प्रयोग होता था।
- नौ प्रकार के फसलों की पहचान की गई है–**चावल** (गुजरात एवं राजस्थान), **गेहूं** (तीन किस्में), **जौ** (दो किस्में) **खजूर, तरबूज, मटर, राई, तिल** आदि। किन्तु सैन्धव सभ्यता के मुख्य खाद्यान्न **गेहूं** एवं **जौ** थे।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं कालीबंगा में अनाज बड़े-बड़े कोठारों में जमा किया जाता था।
- सर्वप्रथम **कपास** उत्पन्न करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को था इसीलिए यूनानियों ने इसे **सिंडोन** जिसकी उत्पत्ति सिन्धु से हुई है नाम दिया है।
- **पशुपालन**–हड़प्पाई लोग बैल, भेड़, बकरी, सुअर आदि पालते थे।
- घोड़े के अस्तित्व का संकेत **मोहनजोदड़ो** की एक ऊपरी सतह से तथा **लोथल** में एक सन्दिग्ध मूर्तिका (टेराकोटा) से मिला है।
- **गुजरात** के निवासी हाथी पालते थे।
- **शिल्प एवं तकनीक**–सैन्धव लोग पत्थर के अनेक प्रकार के औजार प्रयोग करते थे। तांबे के साथ टिन मिलाकर कांसा तैयार किया जाता था किन्तु हड़प्पा में **कांसे** के औजार बहुतायत से नहीं मिलते हैं।
- **तांबा** राजस्थान के **खेतड़ी** से, **टिन अफगानिस्तान से, सोना-चांदी** भी सम्भवत: **अफगानिस्तान** से तथा तांबा रत्न दक्षिण भारत से मंगाये जाते थे।
- इस काल में कुम्हार के **चाक** का खूब प्रचलन था और हड़प्पाई लोगों के मृदभाण्डों की अपनी खास विशेषताएं थीं। ये भाण्डों को **चिकने** ओर **चमकीले** बनाते थे।
- **मोहनजोदड़ो** के किसी बर्तन पर लेख नहीं मिलता परन्तु **हड़प्पा** के बर्तनों पर **लेख** भी मिलते हैं। हड़प्पा के कुछ बर्तनों पर **मानव आकृतियां** भी दिखाई देती हैं।

लिपि

- हड़प्पा लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 में मिला था और 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में आ गई, किन्तु अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
- हड़प्पा लिपि **भावचित्रात्मक** है और उनकी लिखावट क्रमश: दाई ओर से बाई ओर की जाती थी।
- अधिकांश अभिलेख मृण्मुद्राओं (सीलो) पर हैं, इन सीलों का प्रयोग धनाढ्य लोग अपनी निजी सम्पत्ति को चिह्नित करने और पहचानने के लिए करते होंगे।
- मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ तथा लोथल से हाथी दांत का बना हुआ एक-एक पैमाना (स्केल) मिला है इसका प्रयोग सम्भवत: लम्बाई मापने में किया जाता रहा होगा।

eXamtrix Free Education Platform

- **मृदभाण्ड**–हड़प्पा का भाण्डों पर आम तौर से वृत्त या वृक्ष की आकृतियां मिलती हैं। (यही प्रमुख चित्रकारी थी) कुछ ठीकरों पर मनुष्य की आकृतियां भी दिखाई देती हैं।
- **मुहरें**–हड़प्पा संस्कृति की सर्वोत्तम कलाकृतियां है उसकी मुहरें। अब तक लगभग 2000 मुहरें प्राप्त हुई हैं। इनमें से अधिकांश मुहरें लगभग 500 **मोहनजोदड़ो** से मिली हैं।
- अधिकांश मुहरों पर लघु लेखों के साथ-साथ एक सिंगी सांड़, भैस, बाघ, बकरी और हाथी की आकृतियां खोदी गई हैं।
- मुहरों के बनाने में सर्वाधिक उपयोग **सेलखड़ी** का किया गया है।
- लोथल और देसलपुर से तांबे की बनी मुहरें प्राप्त हुई है। सैन्धव मुहरें बेलनाकार, वर्गाकार, आयताकार एवं वृत्ताकार है।
- कुछ मुहरों पर देवी-देवताओं (जैसे पशुपति-शिव) की आकृतियों के चित्रित होने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सम्भवत: इनका धार्मिक महत्त्व भी रहा होगा।
- **लघु मृण्मूर्तियां**–सिन्ध प्रदेश में भारी संख्या में आग में पकी मिट्टी (जो **टेराकोटा** कहलाती है) की बनी मूर्तिकाएं (फिगरिन) मिली हैं। इनका प्रयोग या तो **खिलौने** के रुप में या पूज्य **प्रतिमाओं** के रूप में होता था। इनमें कुत्ते, भेंड़, गाय, बैल ओर बन्दर की प्रतिकृतियां मिलती हैं।
- यद्यपि नर और नारी, दोनों की मृण्मूर्तियां मिली हैं तथापि **नारी मृण्मूर्तियां संख्या में अधिक हैं।**

व्यापार

- सिन्धु सभ्यता के लोगों के जीवन में व्यापार का बड़ा महत्त्व था। इसकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा लोथल में अनाज के बड़े-बड़े **कोठारों तथा** ढेर सारी **सीलों** (मृण्मुद्राओं) एक रूप लिपि और मानकीकृत **माप-तौलों** के अस्तित्व से होती है।
- हड़प्पाई लोग व्यापार में धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे। सारे **आदान-प्रदान वस्तु विनिमय** द्वारा करते थे।
- स्थलीय व्यापार में **अफगानिस्तान तथा ईरान** तथा जलीय व्यापार में **मकरान** के नगरों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती थी। **बहरीन द्वीप** के व्यापारी दोनों देशों के बीच बिचौलियों का काम किया करते थे।
- मोहनजोदड़ो की मुहर पर एक ठीकरे के ऊपर सुमेरियन ढंग की नावों के चित्र अंकित है।
- **लोथल** से **फारस की मुहरें** तथा **कालीबंगा** से **बेलनाकार मुहरें** भी सिन्धु सभ्यता के व्यापार के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
- सिन्धु तथा मेसोपोटामिया, दोनों सभ्यताओं में **मातृ शक्ति** की उपासना होती थी तथा दोनों के निवासी बैल, बतख, पाषाण स्तम्भ को पवित्र मानते थे।
- सैन्धव सभ्यता की समृद्धि का प्रमुख कारण उसका विदेशी व्यापार था।
- हड़प्पा संस्कृति का अस्तित्व मोटे तौर पर 2500 ई. पू. से 1800 ई. पू. के बीच रहा। सारी जीवन पद्धति में एकरूपता बनी रही।
- हड़प्पा पूर्व बस्तियों के अवशेष पाकिस्तान के **निचले सिन्ध** और **बलूचिस्तान प्रान्त** में तथा राजस्थान के **कालीबंगा** में मिले हैं। हड़प्पा पूर्व किसान उत्तर गुजरात के **नागवाड़ा** में भी रहते थे।

पतन/बंदरगाह

- इस सभ्यता के पतनोन्मुख और अन्तत: विलुप्त हो जाने के अनेक कारण हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. बाह्य आक्रमण
2. भूतात्विक परिवर्तन
3. जलवायु परिवर्तन
4. विदेशी व्यापार में गतिरोध
5. साधनों का तीव्रता से उपभोग
6. बाढ़ एवं अन्य प्राकृतिक आपदा
7. प्रशासनिक शिथिलता

Examtrix Free Education Platform

स्मरणीय तथ्य

- हड़प्पा कालीन चार विशालतम नगर – **मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, गनेड़ीवाल** तथा **धौलावीरा** हैं। धौलावीरा को 7 सांस्कृतिक चरणों में बांटा है।
- हड़प्पा में शवों को दफनाने जबकि मोहनजोदड़ो में जलाने की प्रथा विद्यमान थी।
- सैन्धवकालीन मुहरें सर्वाधिक मोहनजोदड़ो से मिली है।
- कृषि हड़प्पा अर्थव्यवस्था का मूलाधार थी।
- हड़प्पा से एक मुद्रा पर पंजों में सांप को दबाये गरुड़ का चित्रण मिलता है।
- **स्वास्तिक चिह्न** सम्भवतः हड़प्पा सभ्यता की देन है। इस चिह्न से सूर्योपासना का अनुमान लगाया जाता है।
- **अग्निकुण्ड** लोथल एवं कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।
- सिन्धु सभ्यता के छः मुख्य नगर - हड़प मोहनजोदड़ो, लोथल, चन्हूदड़ो, कालीबंगा एवं बनवाली थे।
- कोटदीजी से बाणाग्र मिला है।
- सैन्धव नगरों में किसी भी मंदिर, समाधि आदि के अवशेष नहीं मिले हैं।
- **आंशिक** शवाधान हड़प्पा, **कलश** शवाधान मोहनजोदड़ो तथा **प्रतीकात्मक शवाधान कालीबंगा से मिले हैं।**
- मोहदजोदड़ो से प्राप्त एक सील पर तीन मुख वाले देवता (पशुपति नाथ) की मूर्ति मिली है। उनके चारों ओर **हाथी, गैंडा, चीता** एवं **भैसा** विराजमान हैं।
- हड़प्पा सभ्यता में मातृदेवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थीं।
- मुहरें सर्वाधिक सेलखड़ी (Steatite) की थीं।
- धान की भूसी लोथल एवं रंगपुर से प्राप्त हुई है।
- धातु निर्मित मूर्तियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक **नर्तकी की कांस्य मूर्ति है।**
- प्रस्तर मूर्तियों में सर्वप्रथम मोहनजोदड़ो से प्राप्त योगी अथवा पुरोहित की मूर्ति है।
- भारत में **लिंग पूजा** का प्रारम्भ सम्भवतः प्रोटो ऑस्ट्रेलायड जाति में हुआ था।
- **लोथल** एवं **सुरकोतटदा** भारत में हड़प्पा कालीन मुख्य बन्दरगाह था।
- **मनके** बनाने के कारखाने **लोथल** एवं **चन्हूदड़ो** से मिले हैं।
- लोथल एवं कालीबंगा से युग्म समाधियां मिली हैं।

वैदिक संस्कृति

- **सिन्धु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई, उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिए इस काल को हम वैदिक काल के नाम से जानते हैं।**
- **यह सभ्यता अपनी पूर्ववर्ती हड़प्पा सभ्यता से काफी भिन्न थी। इस सभ्यता के संस्थापक आर्य थे इसलिए कभी-कभी इसे आर्य सभ्यता भी काहा जाता है। यहां 'आर्य' शब्द का अर्थ है - श्रेष्ठ, उत्तम, उदात्त, अभिजात्य, कुलीन, उत्कृष्ट एवं स्वतन्त्र आदि।**

ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.-1000 ई. पू.)

ऋग्वेद की रचना दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम है। यह प्रक्रिया ई.पू. 1500 के लगभग से ई.पू. 1000 तक चली। अतः इसी समय को ऋग्वैदिक सभ्यता का समय माना जाता है।

- सिन्धु सभ्यता के विपरीत वैदिक सभ्यता मूलतः ग्रामीण थी। आर्यों का आरिम्भक जीवन मुख्यतः **पशुचारण** का था। **कृषि** उनका गौण धन्धा था।
- ऋग्वेद की अनेक बातें **अवेस्ता** में मिलती है। अवेस्ता **ईरानी** भाषा का प्राचीनतम् ग्रन्थ है।
- आर्यों के मूल निवास के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं। अधिकांश विद्वान प्रो. मैक्समूलर के विचारों से सहमत हैं कि आर्य मूल रूप से **मध्य एशिया** के निवासी थे।
- आर्यों की आरम्भिक इतिहास की जानकारी का मुख्य स्रोत ऋग्वेद है।

eXamtrix Free Education Platform

- ऋग्वेद में आर्यों के पांच कबीले के होने की वजह से उन्हें पंचजन्य कहा गया है। ये थे–**अनु, द्रुहय, पुरु, तुर्वस** तथा **युद्ध।**
- ग्राम, विश और जय उच्चतर इकाई थे। **ग्राम** सम्भवत: कई परिवारों के समूह को कहते थे। **'ग्रामणी'** ग्राम का प्रधान होता था।
- **विश** कई गांवों का समूह था। इसका प्रधान **'विशपति'** कहलाता था। अनेक विशों का समूह **जन** होता था। जन के अधिपति को **जनपति** या **राजा** कहा जाता था। देश या राज्य के लिए **राष्ट्र** शब्द आया है।
- राजा को कबीले का संरक्षक **(गोप्ता जनस्य)** तथा पुराभेत्ता (नगरों पर विजय पाने वाला) कहा गया है।
- ऋग्वेद में **सभा, समिति, विदथ** तथा **गण** जैसी अनेक कबीलाई परिषदों का उल्लेख है। ये संगठन (परिषदें) विचारात्मक सैनिक एवं धार्मिक कार्य देखते थे।
- ऋग्वेद में **'त्रित्सु'** दोनों आर्यों के शासक वंश थे और पुरोहित वशिष्ठ इन दोनों वंशों के सम्पर्क थे।
- भारत वंश के राजा सुदास तथा अन्य दस राजाओं के साथ युद्ध हुआ जिनमें **पांच आर्य** तथा **पांच आर्योत्तर** जनों के प्रधान थे। यह **दाशराज्ञ युद्ध** (दस राजाओं के साथ लड़ाई) **परुष्णी** नदी के तट पर हुआ।
- ऋग्वेद में **सेनानी** (सेनापति), **पुरोहित** तथा **ग्रामणी** नामक शासकीय पदाधिकारी का उल्लेख मिलता है जो राजा को सहायता के लिए होते थे। प्राय: **पुरोहित** का पद **वंशानुगत** होता था।
- **विदथ**–यह आर्यों की सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी। इसे **जनसभा** भी कहा जाता था।

सामाजिक व्यवस्था

- सामाजिक संगठन का आधार गोत्र या जन्ममूलक सम्बन्ध था। परिवार समाज की आधार भूत ईकाई थी। परिवार का प्रधान को **कुलप** या **गृहपति** कहा जाता था।
- आर्य समाज **पितृसत्तात्मक** था, परन्तु नारी को मातृरूप में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था।
- ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के चिह्न दिखाई देते हैं।
- ऋग्वेद के **दशवें मण्डल** में वर्णित **पुरुष सूक्त** में विराट द्वारा चार वर्गों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है। इसमें कहा गया है कि **ब्राह्मण** परम-पुरुष के **मुख** से, **क्षत्रिय** उसकी **भुजाओं** से वैश्य उसकी **जांघों** से एवं **शूद्र** उसके **पैरों** से उत्पन्न हुआ है।
- **शूद्र** शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद के **दसवें मण्डल** के **पुरुष सूक्त** में मिलता है।
- ऋग्वेद का नौवां मण्डल सोम देवता को समर्पित है।
- ऋग्वेद का प्रथम तथा आठवां सबसे अंत में जोड़ा गया।
- **विवाह**–समाज में बाल विवाह प्रचलित नहीं थे। अन्तर्जातीय विवाह भी होते थे।
- **पुनर्विवाह** भी होते थे। विधवा स्त्री अपने देवर या अन्य पुरुष से विवाह कर सकती थी।
- शतपथ ब्राह्मण में पत्नी को अर्द्धांगिनी कहा गया है।
- ऋग्वेदिक समाज में स्त्रियों को **राजनीति में भाग लेने** तथा सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार प्राप्त नहीं थे।
- **शिक्षा**–शिक्षा के द्वार स्त्रियों के लिए खुले थे। कन्याओं को वैदिक शिक्षा दी जाती थी।
- **पुत्री** का **'उपनयन संस्कार'** किया जाता था। स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार था।
- ऋग्वेद में **लोपा मुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला** एवं **विश्वारा** जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वैदिक काल में **दास प्रथा** का प्रचलन था।
- ऋग्वेद के प्रारम्भ में कबीलाई समाज तीन वर्गों में बंटा था–**योद्धा, पुरोहित** और **सामान्य लोग** (प्रजा)।
- आर्य मूलत: शाकाहारी थे परन्तु विशेष अवसरों पर मांस का प्रयोग भी करते थे। पेय पदार्थों में **सोमरस** का पान करते थे।

आर्थिक जीवन

- ऋग्वेद में **फाल** का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन के मूलभूत आधार **कृषि** एवं **पशुपालन** थे।
- ऋग्वेद में **'गव्य'** एवं **'गव्यति'** शब्द चारागाह के लिए प्रयुक्त हैं।

examtrix Free Education Platform

- वास्तव में आर्यों की आर्थिक स्थिति का मूलाधार पशुधन **'गाय'** मुद्रा की भांति समझी जाती थी। अधिकांश लड़ाइयां गायों के लिए लड़ी गयी थीं।
- ऋग्वेद में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते **हैं। बढ़ई** (तक्षा) सम्भवत: शिल्पियों का मुखिया होता था।
- प्रजा द्वारा राजा को स्वेच्छा से कर दान को बलि कहा गया है।
- **घोड़ा** आर्य समाज का अति उपयोगी पशु था। अन्य जानवर थे–हाथी, ऊंट, बैल, भेड़, बकरी, कुत्ते आदि।
- ऋग्वेद में एक ही अनाज अर्थात् **यव** का उल्लेख हुआ है।
- ऋग्वेद में कृषि सम्बन्धी प्रक्रिया से सम्बन्धित उल्लेख **'चतुर्थमण्डल'** में मिलता है जहां कीवाश (हलवाहा) लांगल (हल), बृक (बैल), उर्वरा (जुते खेत) सीता (हल से बनी नालियां) पर्जन्य (बादल) आदि प्रचलित कृषि संबन्धित नाम थे।

ऋग्वैदिक धर्म–

- ऋग्वैदिक लोग जिस सार्वभौमिक सत्ता में विश्वास रखते थे वह **एकेश्वरवाद** थी। उसमें अनेक देवताओं का अस्तित्व था।
- ऋग्वैदिक देवकुल में देवियों की नगण्यता थी। सभी देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे। प्रकृति के प्रतिनिधि के रूप में आर्यों के देवताओं की तीन श्रेणियां थी–
- **आकाश देवता**–सूर्य, द्यौस, वरुण, मित्र, पूषन विष्णु सवितृ, आदित्य उषा अश्विन आदि।
- **अंतरिक्ष के देवता**–इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु, पर्जन्य, आप: मातरिश्वन आदि।
- **पृथ्वी के देवता**–अग्नि, सोम, पृथ्वी, वृहस्पति, सरस्वती आदि।
- ऋग्वेद में सबसे महत्वपूर्ण देवता **इन्द्र** को 'पुरन्दर' भी कहा गया है। उन्हें वर्षा का देवता भी माना गया है। ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुति में 250 सूक्त हैं।
- **दूसरा** महत्वपूर्ण देवता **आग्नि** है। वैदिक काल में अग्नि देवताओं व मनुष्यों के मध्य मध्यस्थ था। इसके माध्यम से देवताओं की आहुतियां दी जाती थीं।
- ऋग्वेद में अग्नि की स्तुति में **200 सूक्त** मिलते हैं।
- **तीसरा** प्रमुख देवता **वरुण** था जो **जलनिधि** का प्रतिनिधित्व करता है।
- **सोम** को पेय पदार्थ का देवता माना जाता है। ऋग्वेद का **नवम्** मण्डल सोम की स्तुति करता है।
- **मरुत**–आंधी-तूफान के देवता है।
- ऋग्वेद में उषा, अदिति, सूर्या आदि देवियों का भी उल्लेख है।
- देवताओं की उपासना की मुख्य रीति **स्तुतिपाठ करना व यज्ञ बलि** अर्पित करना था। **स्तुति पाठ** पर अधिक जोर था।
- **इन्द्र** और **अग्नि** समस्त जन द्वारा दी गई बलि ग्रहण करने के लिए आहूत होते थे।
- ऋग्वैदिक काल के लोग अपने देवताओं से **सन्तति, पशु, अन्न, धान्य, आरोग्य** आदि पाने की कामना से उनकी उपासना करते थे।
- **पूषन ऋग्वैदिक** काल में **पशुओं** के देवता थे जो **उत्तर वैदिक काल में शूद्रों** के देवता हो गये।
- **सिन्धु** आर्यों की सर्वप्रमुख नदी थी जबकि **सरस्वती** का दूसरा स्थान था।
- **अथर्ववेद** 'सभा एवं समिति' को प्रजापति की दो पुत्रियों के समान माना गया है।
- ऋग्वेद की प्रारम्भिक कबीलाई समाज **तीन** वर्गो में बंटा था–**योद्धा, पुरोहित** ओर **सामान्य लोग** (प्रजा)। चौथा वर्ग जो **शूद्र** कहलाता था ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम मिलता है।
- ऋग्वेद में **जन** का उल्लेख **275 बार** तथा **विश** शब्द का उल्लेख **170 बार** हुआ है।
- ऋग्वेद में किसी परिवार का एक सदस्य कहता है–"मैं कवि हूं। मेरे पिता वैद्य है और माता चक्की चलाने वाली है। भिन्न-भिन्न व्यवसायों से जीविकोपार्जन करते हुए साथ रहते हैं।"

examtrix Free Education Platform

- **दासों** के विषय में स्पष्ट उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।
- बढ़ई शिल्पियों का मुखिया होता था।
- वरुण जल या समुद्र का देवता तथा प्राकृति संतुलन का रक्षक था।
- भारत में आर्य लोग जहां सर्वप्रथम बसे वह सारा प्रदेश **सप्त सैन्धव** प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- ऋग्वैदिक काल में विवाह की उम्र सम्भवत: **सोलह-सत्रह** वर्ष थी।
- बलि या आहूति में **शाक, जौ** आदि वस्तुएं दी जाती थीं। यज्ञाहुति के अवसर पर **आनुष्ठानिक** या **याज्ञिक** मन्त्र नहीं पढ़े जाते थे।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

- भारतीय इतिहास में उस काल को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई, को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है।
- इस युग की सभ्यता का केन्द्र पंजाब से बढ़कर कुरुक्षेत्र (दिल्ली और गंगा-यमुना दोआब का उत्तर भाग) में आ गया था।
- उत्तर वैदिक काल के अंतिम दौर में 600 ई. पू. के आस-पास आर्य लोग **कोशल, विदेह** एवं **अंग** राज्य से परिचित थे।
- पुरु एवं भरत मिलकर **कुरु** और तुर्वश एवं क्रिवि मिलकर **पांचाल** कहलाए।
- **मगध** व **अंग** आर्य क्षेत्र के बाहर थे।

राजनीतिक व्यवस्था

- **राष्ट** शब्द दो प्रदेश का सूचक है, पहली बार उत्तर वैदिक काल में प्रकट हुआ। आरम्भ में पांचाल एक कबीले का नाम था परन्तु बाद में वह प्रदेश का नाम हो गया।
- उत्तर वैदिक काल में **पांचाल** सर्वाधिक विकसित राज्य था। **शतपथ ब्राह्मण** में इन्हें वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है।
- अथर्ववेद में परीक्षित को **'मृत्युलोक का देवता'** बताया गया है।
- **सभा** एवं **समिति** वैदिकोत्तर काल भी राजा की निरंकुशता पर रोक लगाती थी।
- **सभा** श्रेष्ठ जनों की **संस्था** थी तथा **समिति** राज्य की केन्द्रीय संस्था थी जिसे जनसामान्य की संस्था भी कहते थे। समिति की अध्यक्षता राजा स्वयं करता था।
- **राजसूय**–यह राजा के **राज्याभिषेक** हेतु होता था। इन आनुष्ठानिक यज्ञों से प्रजा को यह विश्वास हो जाता था कि उसके सम्राट को **दिव्य शक्ति** मिल गई है। इसमें **सोम रस** परोसा जाता था।
- **अश्वमेध**–इस यज्ञ में राजा द्वारा छोड़ा गया घोड़ा जिन-जिन क्षेत्रों से बिना किसी प्रतिरोध के गुजरता था उन सभी क्षेत्रों पर राजा का एकक्षत्र राज्य स्थापित हो जाता था अर्थात् यह शक्ति का द्योतक था। यह राजकीय यज्ञों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण यज्ञ था।
- **वाजपेय**–इस यज्ञ में राजा रथों की दौड़ का आयोजन करता था जिनमें राजा को सहयोगियों द्वारा विजयी बनाया जाता था। यह खाद्य एवं पान से सम्बन्धित था।
- **पंच महायज्ञ**–गृहस्थ आर्यों को पंच महायज्ञों का अनुष्ठान करना पड़ता था।
  1. **ब्रह्म यज्ञ या ऋषियज्ञ**–पठन-पाठन या प्राचीन ऋषि के प्रति कृतज्ञता।
  2. **देवयज्ञ**–हवन द्वारा देवताओं की पूजा-अर्चना।
  3. **पितृ यज्ञ**–पितरों का तर्पण (जल और भोजन) द्वारा।
  4. **नृयज्ञ या मनुष्य यज्ञ**–अतिथि सत्कार द्वारा।
  5. **भृत यज्ञ या बलि**–समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के तौर पर चीटियों, पक्षियों, श्वानों आदि को भोजन देना।

सामाजिक संगठन

examtrix Free Education Platform

- उत्तर वैदिक काल का समाज चार वर्गों में विभक्त था–ब्राह्मण, राजन्य या क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र।
- इस काल में **यज्ञ** का अनुष्ठान अत्यधिक बढ़ गया था जिससे ब्राह्मणों की शक्ति में अपार वृद्धि हुई।
- इस काल में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म पर आधारित न होकर **जाति पर** आधारित हो गया था तथा वर्णों में कठोरता आने लगी थी।
- ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्त्तव्यों का वर्णन मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में केवल **वैश्य** ही कर चुकाते थे। **ब्राह्मण एवं क्षत्रिय,** दोनों वैश्यों से वसूले राजस्व पर ही जीते थे।
- शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान पर क्षत्रियों को ब्राह्मणों से श्रेष्ठ बताया गया है।
- **ब्राह्मण, क्षत्रिय** तथा **वैश्य** – इन तीनों को द्विज कहा जाता था। ये उपनयन संस्कार के अधिकारी थे।
- चौथा वर्ण (शूद्र) उपनयन संस्कार का अधिकारी नहीं था और यहीं से शूद्रों को अपात्र या आधारहीन मानने की प्रक्रिया शुरू हो गई।
- उत्तर वैदिक काल में **गोत्र प्रथा** स्थापित हुई। फिर गोत्र वहिर्विवाह की प्रथा चल पड़ी।
- उत्तर वैदिक ग्रन्थों में केवल तीन आश्रमों **(ब्रह्मचर्य, गृहस्थ** तथा **वानप्रस्थ)** की जानकारी मिलती है। चौथे अश्रम **संन्यास** की अभी स्पष्ट स्थापना नहीं हुई थी।
- उत्तर वैदिक काल में **स्त्रियों** के लिए **उपनयन संस्कार** प्रतिबन्धित हो गया था।

आर्थिक जीवन

- कृषि इस काल में आर्यों का मुख्य व्यवसाय था। **शतपथ ब्राह्मण** में कृषि की चारों क्रियाओं–जुताई, बुआई, कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख हुआ है।
- **कायिक संहिता** में **24 बैलों** द्वारा खींचे जाने वाले हलों का उल्लेख मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल के लोगों में **लाल मृदभाण्ड** सबसे अधिक प्रचलित था जबकि **चित्रित धूसर मृदभाण्ड** इस युग की विशेषता थी।
- स्वर्ण तथा लोहे के अतिरिक्त इस युग में आर्य टिन, तांबा, चांदी, सीसा आदि धातुओं से परिचित हो चुके थे।
- **व्यापार**–उत्तर वैदिक काल में **मुद्रा** का प्रचलन हो चुका था परन्तु सामान्य लेन-देन में या व्यापार **वस्तु विनिमय** द्वारा ही होता था।

धार्मिक जीवन

- उत्तर वैदिक काल में उत्तरी **दो-आब** ब्राह्मणों के प्रभाव में आर्य संस्कृति का केन्द्र स्थल बन गया।
- **यज्ञ** इस संस्कृति का मूल था और यज्ञ के साथ-साथ अनेकानेक अनुष्ठान और मंत्रविधियां प्रचलित हो गई।
- ऋग्वैदिक काल के दो प्रमुख देवता **इन्द्र** औद **अग्नि** का अब पहले जैसा महत्त्व नहीं रहा। उनके स्थान पर उत्तर वैदिक काल में **प्रजापति** जो देवकुल में **सृष्टि के निर्माता** थे, को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो गया।
- पशुओं के देवता **रुद्र** इस काल में एक महत्त्वपूर्ण देवता बन गये। उत्तर वैदिक काल में इनका पूजा **शिव** के रूप में होने लगी।
- **पूषन** शूद्रों के देवता के रूप में प्रचलित थे। ऋग्वैदिक काल में वह पशुओं के देवता थे।
- उत्तर वैदिक काल में **मूर्ति पूजा** के आरम्भ होने का कुछ आभास मिलने लगता है।

प्रमुख दर्शन एवं रचयिता

दर्शन	प्रवर्तक
1. चर्वाक (भौतिकवादी)	चर्वाक
2. सांख्य	कपिल
3. योग	पतंजलि (योग सूत्र)
4. न्याय	गौतम (न्याय सूत्र)

examtrix Free Education Platform

5. पूर्व मीमांसा	जैमिनी
6. उत्तर मीमांसा	बादरायण (ब्रह्म सूत्र)

- उपनिषदों में स्पष्टत: **यज्ञों तथा कर्मकाण्डों** की निन्दा की गई है तथा ब्रह्म की एक मात्र सत्ता स्वीकार की गई है। प्रारम्भिक उपनिषदों में केवल तीन आश्रमों का विधान मिलता है–**ब्रहाचर्य, गृहस्थ** तथा **वानप्रस्थ** परन्तु कालान्तर में संन्यास नाम से एक चौथा आश्रम इस व्यवस्था का अंग बन गया। प्रत्येक द्विज को इन चारों आश्रमों से होकर जीवन यापन करना आवश्यक बताया गया है।

वैदिक शब्दावली एवं उनके अर्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
• वेद	ज्ञान	• आर्य	नेक, भद्र
• यव	जौ	• गोवाल	भैंस
• गोहन्ता	अतिथि	• अघन्य	गाय
• दुहित्री	बेटी	• अयस	कांसा या तांबा
• सदानीरा	गंडक नदी	• परुष्णी	रावी (नदी)
• विपाशा	व्यास	• सतुद्री	सतलज
• गोपति	जन, राजन		
• पुरन्दर	किलों को तोड़ने वाला		
• ग्रामणी	लड़ाकू दल का नेता, ग्राम का नेता		
• कुलप	परिवार प्रधान (मुखिया)		
• गविष्टि	गाय की गणना करना, युद्ध कुएं		
	बलि, भाग, शुल्क कर		
• निष्क	मूल्य की इकाई, सोने का हार		

examtrix Free Education Platform

भारतीय दर्शन

न्याय दर्शन

- इसकी रचना **गौतम ऋषि** ने की।
- इसके अनुसार, समस्त अध्ययन का आधार तर्क है।
- यह संदेह के सिद्धांत की चर्चा करता है।
- इसमें पुनर्जन्म की अवधारणा मान्य है।
- ब्रह्म एवं ईश्वर में विश्वास।
- मोक्ष के लिए ज्ञान आवश्यक।

वैशेषिक दर्शन

- इसकी रचना **कणाद** ने की। यह पदार्थों से संबंधित है।

सांख्या दर्शन

- इसकी रचना **कपिल ऋषि** ने की।
- इसके अनुसार, पुरुष एवं प्रकृति ईश्वर से पृथक हैं।
- सत्व, रजस और तमस – तीनों गुणों से प्रकृति का विकास।
- सत्व गुण–अच्छाई और आनंद का स्रोत।
- रजस गुण–कर्म तथा दु:ख का स्रोत।
- तमस गुण–अज्ञान, आलस्य तथा उदासीनता का स्रोत।
- ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं, विश्व यथार्थ नहीं।

- केवल प्रकृति शाश्वत, पुरुष अमर और जीव पुनर्जन्म में बंधे हैं।
- प्रकृति और पुरुष ईश्वर पर आश्रित न होकर स्वतंत्र हैं।
- यथार्थ ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति।
- यथार्थ ज्ञान अनुमान, प्रत्यक्ष और शब्द से होता है।
- यह वैज्ञानिक अनुसंधान का मार्ग था मगर इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ईश्वर में विश्वास और अध्यात्मवाद ने फंसा लिया और इसमें भी स्वर्ग और मोक्ष समा गये।

योग दर्शन

- इसके प्रवर्तक महर्षि पातंजलि थे।
- इसके अनुसार, योग द्वारा मनुष्य जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति पा सकता है। आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति के लिए सात उपाय-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान और समाधि थे।
- ईश्वर ही चिंतन का लक्ष्य और वही हमारी उद्देश्य प्राप्ति में सहायक।

पूर्व मीमांसा

- इसकी रचना **जैमिनी ऋषि** ने की।
- वेदों की महत्ता स्वीकार्य।
- देवताओं की उपासना।
- यह केवल कर्मकांड तक सीमित है।
- परम सत्य का हल ढूंढ़ने की चेष्टा नहीं।

उत्तर मीमांसा

- इसकी रचना **बादरायण ऋषि** ने की।
- यह चार अध्यायों में विभक्त है और इसमें 555 सूत्र हैं।
- **पहले अध्याय** में ब्रह्म की प्रकृति और विश्व तथा अन्य जीवों के साथ उसके संबंध बताये गये हैं। **दूसरा अध्याय** आपत्तियों से संबंधित है। **तीसरे अध्याय** में ब्रह्म विद्या की चर्चा है। **चौथे अध्याय** में ब्रह्म विद्या से लाभ तथा मृत्यु के उपरांत आत्मा के भविष्य के संबंध में बताया गया है।
- मूल ग्रंथ ब्रह्म सूत्र है।

पुराण

- पुराणों की संख्या 18 है। इसकी रचना **वेदव्यास मुनि** ने की थी। ये 18 पुराण निम्नलिखित हैं–

1. ब्रह्म पुराण
2. पद्म पुराण
3. विष्णु पुराण
4. शिव पुराण
5. श्रीमद्भागवत पुराण
6. नारद पुराण
7. अग्नि पुराण
8. ब्रह्म वैवर्त्त पुराण
9. वराह पुराण
10. स्कन्द पुराण
11. मार्कण्डेय पुराण
12. वामन पुराण
13. कूर्म पुराण
14. मत्स्य पुराण
15. गरुड़ पुराण
16. ब्रह्मांड पुराण
17. लिंग पुराण
18. भविष्य पुराण।

जैन धर्म

वर्धमान महावीर को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। यद्यपि वे 24वें तीर्थंकर थे किन्तु ऋषभदेव पहले तीर्थंकर थे। पारसनाथ 23वें और वर्धमान महावीर 24वें व अंतिम तीर्थंकर थे किन्तु यही सर्वाधिक प्रसिद्ध थे। उनके पिता सिद्धार्थ थे जो कि वैशाली के एक कबीले के मुखिया थे। वर्धमान महावीर स्वैच्छिक गृहत्याग के 14 वर्ष बाद

examtrix Free Education Platform

ज्ञान-प्रकाश से आलोकित हुए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य उनकी शिक्षाएं जैन धर्म के रूप में जानी जाती हैं। यज्ञ जैसे धर्म-संस्कारों को वे समय की बरबादी समझते हैं। मानवता में जो कुछ भी महान, शक्तिशाली व नैतिक है, वही ईश्वर है। इसके अनुयायी शरीर की साधना, उपवास, अनुशासन, दयालुता, सेवा और तपस्या करते हैं। यह अहिंसा पर अधिक बल देता है। पशु-पौधों व पत्थरों को भी आहत करने से मना किया जाता है, क्योंकि उनकी धारणा है कि इनमें भी जीवन होता है। महावीर का देहावसान 527 ई. पूर्व में हुआ। उनके अनुयायी बाद में दो संप्रदायों में बंट गये-दिगम्बर और श्वेताम्बर। पहले निर्वसन रहते हैं तथा दूसरे वस्त्र पहनते हैं। यह विभाजन ईसा पूर्व तीसरी सदी में पहली बार हुआ।

- ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर थे।
- पार्श्वनाथ जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर थे।
- महावीर जैनधर्म के 24वें और अन्तिम तीर्थंकर थे।

जैन धर्म के तीन रत्न (त्रिरत्न)

मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन साधन :

1. **सम्यक ज्ञान** – सच्चा और पूर्ण ज्ञान
2. **सम्यक दर्शन** – तीर्थंकर में पूर्ण विश्वास
3. **सम्यक चरित्र** – जैन धर्म के पांच सिद्धांतों का आचरण

महात्मा बुद्ध

बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध महावीर के समकालीन थे। नेपाल की तराई में स्थिति लंबिनी में 563 ई.पू. गौतम सिद्धार्थ का जन्म हुआ था और ज्ञान प्राप्त करने के बाद इन्हें बुद्ध कहा जाने लगा था, उनके पिता का नाम शुद्धोधन था जो कपिलवस्तु के एक क्षत्रीय शासक थे। माता का नाम महामाया था। उन्होंने सांसारिक दु:खों से मुक्ति पाने के लिए 29वें वर्ष में गृहत्याग किया। कई वर्षों की तपस्या के बाद एक दिन गया के निकट एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान का बोध हुआ और वे तब से बुद्ध हो गये। वह वृक्ष बोधि वृक्ष के रूप में अमर हो गया। उन्हेंने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया। 487 ई.पू. में वे मृत्यु को प्राप्त हो गये। अंत तक वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों को धर्म-दीक्षा देते घूमते रहे।

जन्म	:	563 ईसा पूर्व लुंबिनी (वर्तमान रुम्मिनदेई) में
गृहत्याग	:	534 ईसा पूर्व 29 वर्ष की अवस्था में
ज्ञान प्राप्ति	:	528 ईसा पूर्व 35 वर्ष की अवस्था में निरंजना नदी (फल्गु) के तट पर बोधगया में
प्रथम उपदेश	:	ऋषिपत्तन (सारनाथ), काशी के पास
महापरिनिर्वाण	:	483 ईसा पूर्व, 80 वर्ष की अवस्था में मल्लों की राजधानी कुशीनगर (वर्तमान देवरिया जिला में) में हिरण्यवती नदी के तट पर।

बुद्ध के जीवन से जुड़े प्रतीक

1. हाथी – बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक
2. कमल – जनम का प्रतीक
3. सांड़ – यौवन का प्रतीक
4. घोड़ा – गृहत्याग का प्रतीक
5. पीपल – ज्ञान का प्रतीक
6. शेर – समृद्धि कर प्रतीक
7. पद्चिह्न – निर्वाण का प्रतीक
8. स्तूप – मृत्यु का प्रतीक

संघ में प्रवेश–उपसंपदा को कहा जाता था

examtrix Free Education Platform

गौतम बुद्ध के जीवन की घटनाएं

1. **महाभिनिष्क्रमण** गृह त्याग को घटना
2. **सम्बोधि** ज्ञान प्राप्त होने की घटना
3. **धर्म चक्रप्रवर्तन** उपदेश देने की घटना

ई. पू. छठी शताब्दी के धार्मिक आन्दोलन

- छठी शताब्दी ई.पू. में मध्य गंगा की घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ जिनमें **जैन** और **बौद्ध** सम्प्रदाय प्रमुख थे।

गौतम बुद्ध - एक परिचय

- इनकी माता का नाम **महामाया** तथा पिता का नाम **शुद्धोधन** था। जन्म के सातवें दिन माता का देहान्त हो जाने से सिद्धार्थ का पालन पोषण उनकी मौसी **प्रजापति गौतमी** ने किया।
- 16 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह शाक्य कुल की कन्या **यशोधरा** से हुआ जिनका बौद्ध ग्रंथों में अन्य नाम **बिम्बा, गोपा, भद्कच्छना** मिलता है। सिद्धार्थ से यशोधरा को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम **राहुल** था।
- सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर सिद्धार्थ ने **29 वर्ष** की अवस्था में गृह त्याग दिया। इस त्याग को बौद्ध ध र्म में **महाभि-निष्क्रमण** कहा गया है।
- **सात वर्ष** तक वे ज्ञान की खोज में इधर-उधर भटकते रहे। सर्वप्रथम वैशाली के समीप **अलार कलाम** (सांख्या दर्शन का आचार्य) नामक संन्यासी के आश्रम में आए। इसके उपरान्त वे उरुवेला (बोधगया) के लिए प्रस्थान कर गए।
- **छः वर्ष** तक अथक परिश्रम एवं घोर तपस्या के बाद **35 वर्ष** की आयु में **वैशाख पूर्णिमा** की एक रात **पीपल (वट) वृक्ष** के नीचे निरंजना (पुनपुन) नदी के तट पर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी दिन से वे **तथागत** हो गये।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम **बुद्ध** के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- बोध **गया** से बुद्ध **सारनाथ** आये, यहां पर उन्होंने **पांच ब्राह्मण संन्यासियों** को अपना **प्रथम उपदेश** दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में **'धर्म चक्र-प्रवर्तन'** नाम से जाना जाता है। बौद्ध संघ में प्रवेश सर्वप्रथम यहीं से प्रारम्भ हुआ।
- बुद्ध ने अपने जीवन का सर्वाधिक उपदेश **कोशल** देश की राजधानी **श्रावस्ती** में दिया। परन्तु **मगध** को अपना प्रचार केन्द्र बनाया।
- इन धार्मिक सम्प्रदायों ने **उपनिषदों** द्वारा तैयार वैधानिक पृष्ठभूमि के आधार पर पुरातन वैदिक ब्राह्मण धर्म के अनेक दोषों पर प्रहार किया, इसीलिए इनको **सुधार वाले आन्दोलन** धार्मिक अथवा आन्दोलन भी कहा गया है।

बौद्ध धर्म

- बुद्ध के प्रधान शिष्य **उपालि** व **आनन्द** थे। **सारनाथ** में ही बौद्धसंघ की स्थापना हुई।
- बुद्ध के प्रसिद्ध अनुयायी शासकों में **बिम्बिसार, प्रसेनजित** तथा **उदयन** थे।
- महात्मा बुद्ध अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में हिरण्यवती नदी के तट पर स्थित **कुशीनारा** पहुंचे जहां पर **483 ई. पू.** में 80 वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हो गई। इसे बौद्ध परम्परा में **महापरिनिर्वाण** के नाम से जाना जाता है।
- मृत्यु से पूर्व कुशीनारा के परिव्राजक **सुभच्छ** को उन्होंने अपना अंतिम उपदेश दिया। महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में विभाजित किया गया।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं एवं सिद्धान्त

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं-**बुद्ध, धम्म** तथा **संघ।**

महाजनपद

छठी शताब्दी ई.पू. में उत्तरी भारत अनेक जनपदों में विभक्त था। जनपदों की संख्या 16 थी, जिन्हें षोडश महाजनपद कहा जाता था। ये जनपद इस प्रकार थे-

1. **काशी :** इसकी राजधानी वाराणसी थी जो वरुणा तथा असी नदी के संगम पर बसी थी।
2. **कौशल :** इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। यह राज्य उत्तर प्रदेश के मध्य उत्तर की ओर स्थित था।

examtrix Free Education Platform

3. **अंग :** इसकी राजधानी चम्पानगरी थी। मगध राज्य के पूर्व में यह राज्य स्थित था।
4. **मगध :** इसकी राजधानी राजगृह थी। यह बिहार के गया एवं पटना जिले के मध्य स्थित था।
5. **वज्जि :** यह आठ राज्यों का एक संघ था। इसकी राजधानी वैशाली थी। यह राज्य आधुनिक बिहार राज्य के उत्तरी भाग में विस्तृत था।
6. **मल्ल :** यह गणराज्य वज्जि संघ राज्य के उत्तर में स्थित दो भागों में विभाजित था। एक भाग की राजधानी कुशीनगर तथा दूसरे की पावापुरी थी।
7. **चेदि :** केन नदी के तट पर स्थित 'शुक्तिमति' इसकी राजधानी थी। यह राज्य आधुनिक बुंदेलखंड में स्थित था।
8. **वत्स :** इसकी राजधानी कौशाम्बी (आधुनिक इलाहाबाद के समीप) थी। यह राज्य वर्तमान प्रयाग के आसपास विस्तृत था।
9. **कुरु :** इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली के समीप) थी। यह राज्य वर्तमान प्रयाग के आसपास विस्तृत था।
10. **पांचाल :** यह राज्य आधुनिक रुहेलखण्ड तथा गंगा-यमुना के दोआब में स्थित था। महाभारत के अनुसार उत्तरी पंचाल की राजधानी **'अहिच्छत्र'** तथा दक्षिणी पांचाल की राजधानी **'काम्पिल्य'** थी।
11. **अस्सक :** इसकी राजधानी **'पाटेन'** थी। अवन्त के दक्षिण में गोदावरी के तट पर यह राज्य स्थित था।
12. **मत्स्य :** इसकी राजधानी **'विराट नगरी'** थी। यह राज्य वर्तमान जयपुर, अलवर, भरतपुर के कुछ भाग में विस्तृत था।
13. **शूरसेन :** इसकी राजधानी **मथुरा** थी। यह राज्य मत्स्य राज्य के दक्षिण में स्थित था।
14. **गांधार :** इसकी राजधानी तक्षशिला थी। यह राज्य आधुनिक कश्मीर तथा आसपास के क्षेत्र में विस्तृत था।
15. **कम्बोज :** इसकी राजधानी राजपुर थी। यह राज्य कश्मीर, गांधार (पाकिस्तान स्थित) तथा पामीर के भू-भाग में विस्तृत था।
16. **अवन्ति :** इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। यह राज्य मालवा प्रदेश (वर्तमान मध्य प्रदेश तथा मध्य मालवा) में स्थित था।

examtrix Free Education Platform

मगध साम्राज्य का उदय

- मगध के सबसे प्राचीन वंश का संस्थापक जरासंध का पिता **बृहद्रथ** था।
- बिम्बसार ने मगध में लगभग 545 ई.पू. में हर्यक वंश की स्थापना किया एवं **राजगृह** को अपनी राजधानी बनाया। उसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन कोशला देवी से, वज्जि संघ की राजकुमारी चेल्लना एवं मद्र (पंजाब) की राजकुमारी खेमा से विवाह कर एवं अंगशासक ब्रह्मदत्त को पराजित कर मगध साम्राज्य का विस्तार किया।
- महात्मा बुद्ध की सेवा में बिम्बसार ने अपने राजवैद्य **जीवक** को भेजा।
- बिम्बसार ने जीवक को अवन्ति के रोगग्रस्त राजा प्रद्योत की चिकित्सा के लिए भेजा।
- बिम्बसार का उपनाम **श्रेणिक** था और वे बुद्ध के समकालीन एवं उसके अनुयायी थे।
- **अजातशत्रु** ने अपने पिता बिम्बसार की हत्या कर 493 ई.पू. में मगध की गद्दी पर बैठा। उसे **कुणिक** उपनाम से भी जाना जाता था।
- अजातशत्रु ने कोशल के राजा प्रसेनजित को पराजित कर काशी का प्रदेश प्राप्त किया और उसकी पुत्री वाजिरा से विवाह किया।
- उदयन ने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र (पाटिलग्राम) की स्थापना की तथा उसे मगध की राजधानी बनाया।
- अजातशत्रु ने अपने मंत्री सुनिध एवं वस्सकर की मदद से वज्जि संघ में फूट डलवाकर उसकी शक्ति को तोड़ दिया। इनके साथ लड़ाइयों में रथमूशल एवं महाशिलाकण्टक नामक हथियार का प्रयोग किया।
- अजातशत्रु की हत्या 461 ई.पू. में उसके पुत्र उदयन ने की एवं गद्दी पर बैठा।
- **'नागदशक'** हर्यक वंश का अंतिमशासक था, जिसकी हत्या उसके अमात्य शिशुनाग ने 412 ई.पू. में कर दी और **'शिशुनाग वंश'** की स्थापना की।
- शिशुनाग ने मगध साम्राज्य में अवन्ति एवं वत्सराज को जीतकर मिलाया।

- शिशुनाग ने पाटलिपुत्र के स्थान पर वैशाली को अपनी राजधानी बनाया।
- शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक (काकवर्ण) ने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- शिशुनाग वंश का अन्तिम राजा **नंदिवर्द्धन** था।
- पुराण के अनुसार **नन्द वंश** का संस्थापक **महापद्म नंद** एक शूद्रशासक था। उसने सर्वक्षत्रान्तक एवं एकराट की उपाधियाँ धारण की।
- नंद वंश का अंतिमशासक **घनानन्द** था। वह सिकन्दर का समकालीन था। ग्रीक लेखकों ने उसे अग्रमीज एवं जैन्द्रमीज कहा। घनानंद का विनाश चन्द्रगुप्त मौर्य ने किय अपने गुरु चाणक्य की सहायता से अन्तिम नंदशासक घनानंद को 322 ई.पू. में पराजित कर 25 वर्ष की आयु में चन्द्रगुप्त मौर्य ने **मौर्यसाम्राज्य** की स्थापना की।
- मुद्राराक्षस ने चन्द्रगुप्त को वृषाल (निम्न कुल) एवं नन्दराज का पुत्र कहा है।
- यूनानी लेखक चन्द्रगुप्त मौर्य को **एंड्रोकोटस या सैंट्रोकोटस** कहा है।
- प्लूटार्क के अनुसार उसके पास 6 लाख सेनाए थीं, जिसे जस्टिन ने **डाकुओं का गिरोह** कहा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को 'चन्द्रगुप्त' संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है।
- एप्पियस के अनुसार 305 ई.पू. में यूनानीशासक सेल्युकस को चन्द्रगुप्त मौर्य ने हराया।
- सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य से अपनी पुत्री का विवाह किया एवं एरिया, अराकोसिया, जेड्रोसिया एवं पेरीपेमिसदाई का क्षेत्र दिया। बदले में चन्द्रगुप्त ने उपहार स्वरूप 500 हाथी दिया।
- तमिल ग्रंथ **अहनामूर** एवं **मुरनानुरू** से चन्द्रगुप्त के दक्षिण विजय का पता चलता है।
- **मेगास्थनीज** सेल्युकस निकेटर का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त के दरबार में आया था। उसने इंडिका लिखा। स्ट्रेबो ने मेगास्थनीज के वृत्तांत को पूर्णतः अविश्वसनीय बताया है।
- कौटिल्य (अन्य नाम-विष्णुगुप्त, चाणक्य) ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ लिखा, जिसका संबंध राजनीति से है। इसमें 15 अधिकरण एवं 130 प्रकरण हैं।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन साधु भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा ली और श्रवण बेलगोला में स्थित चन्द्रगिरि पहाड़ी पर करीब 295 ई.पू. में सालेखन द्वारा शरीर त्याग किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य का अगला उत्तराधिकारी बना।
- जैन परंपराओं में बिन्दुसार की माता का नाम दुर्धरा मिलता है।
- बिन्दुसार को वायु पुराण में भद्रसार, जैन ग्रंथ में सिंहसेन, यूनानी लेख अमित्रोचेडस एवं संस्कृत ग्रंथ में अमित्रघात कहा गया है। अमित्रघात अर्थात् शत्रु विनाशक।
- दिव्यावदान में बिन्दुसार के समय में **तक्षशिला** में हुए दो विद्रोह का वर्णन है। जिसे दबाने के लिए पहले अशोक को और बाद में सुसीम को भेजा।
- स्ट्रैबो के अनुसार यूनानीशासक ऐण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में **डाइमेकस** नाम के राजदूत को भेजा। डाइमेकस को मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- **एथीनिअस** के अनुसार बिन्दुसार ने एण्टियोकस से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी।
- प्लिनी के अनुसार मिश्र राजा फिलाडेल्फस (टलमी-II) ने **डियानीसिकस** नाम के राजदूत को पाटिलपुत्र भेजा था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बौद्ध विद्वान तारानाथ ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया है।
- अशोक ने बिन्दुसार के काल में खम तथा नेपाल को जीता।
- **विन्दुसार के पश्चात् उसका पुत्र अशोक** मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर 273 ई.पू. में बैठा, किन्तु उसका राज्याभिषेक 269 ई.पू. में हुआ।
- राजगद्दी पर बैठने के समय अशोक अवन्ती प्रांत का राज्यपाल था।

- अभिलेख में अशोक को देवनामपिय, देवनामपियदशि एवं राजा नाम से संबोधित किया गया है।
- पुराण में अशोक को अशोकवर्धन कहा गया है।
- राजतरंगिणी के अनुसार अशोक ने कश्मीर में वितस्ता नदी के किनारे **श्रीनगर** नामक नगर की स्थापना की।
- अशोक ने अपने अभिषेक के 8वें वर्ष लगभग 261 ई.पू. में कलिंग पर आक्रमण किया और **कलिंग की राजधानी तोसली** पर अधिकार कर लिया।
- तिब्बती जनश्रुति के अनुसार अशोक ने नेपाल में **ललितपत्तन** नामक नगर बसाया और उसकी पुत्री चारुमती ने **देवपत्तन** नामक नगर बसाया।
- राजतरंगिणी के अनुसार अशोक भगवान शिव की पूजा करता था।
- ह्वेनसांग के अनुसार अशोक को उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षुक ने बौद्ध-धर्म में दीक्षित किया।
- बाराबर पहाड़ियों में अशोक ने आजीवकों के रहने हेतु चार गुहाओं का निर्माण करवाया, जिनका नाम कर्ण, चोपार, सुदामा व विश्व झोपड़ी था।
- भाब्रू शिलालेख में बुद्ध, धम्म एवं संघ (त्रिरत्न) का वर्णन है।
- अशोक अपने राज्याभिषेक के दसवें वर्ष में धम्मयात्रा के अन्तर्गत बोधगया पहुँचा।
- अशोक ने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष में कनकमुनि बौद्ध स्तूप की लम्बाई दुगुना करवाया।
- दिव्यावदान के अनुसार अशोक की माँ का नाम सुभद्रांगी था।
- अशोक की पत्नियाँ- महादेवी, कारुवाकि (अभिलेख में वर्णित), असंघिमित्रा एवं तिष्यरक्षिता थीं।
- अशोक का पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा थी, जिसे धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा।
- अशोक प्रथम शासक है जिसने अभिलेखों के द्वारा अपनी प्रजा को संबोधित किया ।

शिलालेख	वर्णित विषय
प्रथम	अहिंसा पर बल, पशुबलि की निंदा एवं समारोह पर प्रतिबंध।
दूसरा	समाज कल्याण हेतु कार्य, मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सा की व्यवस्था एवं पड़ोसी राज्य चोल-पाण्ड्य- सत्यपुत्र एवं केरलपुत्र का वर्णन।
तीसरा	ब्राह्मणों तथा श्रमणों से उदारतापूर्ण व्यवहार। इसमें राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि वे हर पाँचवें वर्ष दौरा पर जाएँ।
चौथा	मेरी घोष की जगह धम्मघोष की घोषणा की गयी है। पशु हत्या को बहुत हद तक रोके जाने का दावा है।
पाँचवाँ	शासन के 13वें वर्ष धम्म महामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति का चर्चा।
छठवाँ	आत्म-नियंत्रण की शिक्ष दी गयी है।
सातवाँ	सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता।
आठवाँ	अशोक के धर्म (तीर्थ) यात्राओं का उल्लेख।
नवाँ	सच्ची भेंट एवं सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख।
दशम्	इसमें ख्याति एवं गौरव की निंदा की गयी है तथा धम्म कीर्ति की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है।
ग्यारहवाँ	धर्म के वरदान को सर्वोत्कृट एवं धम्म की व्याख्या।
बारहवाँ	सभी प्रकार के विचारों का सम्मान, विभिन्न सम्प्रदायों के बीच टकराहट एवं महिला महामात्रों की नियुक्ति।
तेरहवाँ	कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय परिवर्तन की बात एवं पड़ोसी राजाओं का वर्णन है।
चौदहवाँ	जनता को धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। इसमें कहा गया है कि लेखक की गलतियों के कारण इसमें कुछ अशुद्धियाँ हो सकती हैं।

- 1750 ई. में सर्वप्रथम टी. फैन्थेलर ने दिल्ली में अशोक स्तम्भ लेख का पता लगाया।

examtrix Free Education Platform

- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई. में पढ़ा।
- दो भाषाओं का शिलालेख (ग्रीक+अरामाइक)शार-ए-कुना (कन्धार) से प्राप्त हुआ।
- ये शिलालेख आठ अलग-अलग स्थानों से मिले हैं। ये हैं–शहबाजगढ़ी, मानसेहरा (दोनों खरोष्ठी), गिरनार, धौली, कालसी, जौगढ़, सोपारा एवं एर्रगुड़ी (सभी ब्राह्मी लिपि में)। अशोक का धम्म राहुलोवादसुत से लिया गया है।
- लघु शिलालेख के माध्यम से अशोक के व्यक्तिगत जीवन के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।
- अशोक के स्तम्भ लेखों (ब्राह्मी लिपि में) की संख्या 7 है जो 6 स्थानों से मिलता है–

1. **प्रयाग स्तम्भ लेख**–यह पहले कौशाम्बी में स्थित था, जिसे अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित करवाया। इसे रानी अभिलेख भी कहा जाता है।
2. **दिल्ली टोपरा**–यह स्तम्भ लेख टोपरा से दिल्ली फिरोजशाह तुगलक द्वारा लाया गया। इस पर अशोक के सातों अभिलेखों का उल्लेख है।
3. **दिल्ली मेरठ**–यह स्तम्भ लेख मेरठ से दिल्ली फिरोजशाह तुगलक द्वारा लाया गया।
4. **रामपुरवा** (5) **लौरिया अरराज** एवं (6) **लौरियानन्दगढ़**– तीनों चम्पारण (बिहार) में हैं।
   - लघु स्तम्भ लेखों से अशोक की राजकीय घोषणाओं का उल्लेख मिलता है।
   - अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ लेख रुम्मिनदेई है, जिसकी खोज फीहरर ने की। इससे भू-राजस्व दर कम करने का प्रमाण मिला है।
   - प्रथम पृथक शिलालेख– सभी प्रजा मेरी सन्तान हैं।
   - अशोक के परवर्तीशासक दशरथ (उपाधि देवानांपिय), सम्प्रति (जैन), शालिशूक, वर्धमान, शतधन्नव एवं वृहद्रथ हैं।
   - वृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिमशासक था जिसे उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मार कर 185 ई.पू. में शुंग वंश की स्थापना की।

प्रथम साम्राज्य (मौर्य प्रशासन)

चन्द्रगुप्त मौर्य (324-300 ई.पू.) : चंद्रगुप्त मौर्य के माता-पिता के बारे में मतभेद है। कुछ के मत में वह मुरा नामक दासी का पुत्र एवं शूद्र था। कुछ के मत में वह क्षत्रिय राजकुमार था जिसका राज्य मगध के राजा नंद ने छीन लिया था। वह नंद की सेना में उच्च पद तक पहुंचा और अपने स्वामी की अलोकप्रियता का फायदा उठाते हुए चाणक्य की सहायता से उसे उखाड़ फेंका और मगध का शासक बना। बाद में उसने सेल्यूकस को हराया। गुजरात, काठियावाड़ तथा दक्षिण के कुछ हिस्से को उसने जीत लिया।

बिन्दुसार (300-273 ई. पू.) : यह चंद्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी पुत्र था। उसने संभवत: ई.पू. 300 से 273 ई. पू. तक राज्य किया। अपने पिता के साम्राज्य को उसने बनाए रखा। विदेश संबंधों में उसने पश्चिमी यूनानी शासकों से पिता द्वारा स्थापित मैत्री बनाए रखी।

अशोक (273-236 ई.पू.) : बिंदुसार की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अशोक राज्यारूढ़ हुआ। ई.पू. 273 में सत्तारूढ़ होने के चार वर्ष बाद ई.पू. 269 में उसका राज्याभिषेक हुआ। इस समय कलिंग को छोड़कर पूरा देश उसके साम्राज्य में था। उसने ई.पू. 261 में कलिंग पर आक्रमण किया। उसकी विजय हुई किन्तु युद्ध में हुए नरसंहार से उसे बहुत ग्लानि हुई। तब वह बुद्ध का अनुयायी बन गया और अहिंसावादी हो गया। 'बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मम शरण गच्छामि'। अशोक का राज एवं धर्म संदेश हो गया। देश का शासन वह बुद्धप्रणीत नैतिक नियमों के आधार पर करने लगा। बौद्ध धर्म का प्रचार भी उसने शुरू किया। चट्टानों तथा स्तंभों पर बुद्ध की शिक्षाएं उत्कीर्ण की गई। बौद्ध मठों को राज्याश्रव प्राप्त हुआ। बौद्ध धर्मप्रचारक संघ गठित किये गये। बौद्ध धर्म के पवित्र तीर्थस्थल **लुंबिनी** - जहां बुद्ध जन्मे थे, **गया** - जहां उन्हें बोध प्राप्त हुआ था **कुशीनगर** - जहां उनका महानिर्वाण हुआ था आदि की उसने यात्रा की। उसने कई **विहार** - जहां बौद्धभिक्षु रह सकते थे, बनवाए। मगध में इतने विहार बने कि वह विहारों का देश तथा बाद में बिहार कहलाया।

सरनाथ के एक अशोक स्तंभ में (वाराणसी के पास) चारसिंहों की आकृति है। यही भारत सरकार की राजमुद्रा में अंकित है। दूसरा प्रतीक चक्र जो चट्टानों और स्तंभों पर उत्कीर्ण है, वह बुद्ध के **धर्मचक्र प्रवर्त्तन** का चिह्न है। यह भारत के राष्ट्रध्वज के बीच में अंकित है। यह 24 तीलियों का चक्र है।

examtrix Free Education Platform

अशोक की मृत्यु ई.पू. 236 में हुई। उसने चार दशक तक राज्य किया।

अशोक के शिलालेख : अशोक ने लोगों तक धर्मसंदेश पहुंचाने की एक नयी पद्धति अपनाई। उसने देश के कई भागों में स्तंभ स्थापित किए और शिलालेख उत्कीर्ण करवाए। कुछ चट्टानों के पृष्ठों को चिकना कर उन पर भी शिलालेख लिखवाए। उन पर अशोक के शिलालेखीय दस्तावेजों का अनूठा संग्रह है। वे हमें उसकी आंतरिक भावनाओं, आदर्शों, जीवन तथा शासन का प्रचुर ब्यौरे देते हैं। इस प्रकार का ब्यौरा अन्य किसी प्राचीन भारतीय शासक के बारे में नहीं मिलता। भारत के इतिहास में पहली बार हम एक राजा के मौलिक अभिलेखों से रू-ब-रू होते हैं। ये स्वयं उसके द्वारा रचित, अविनाशी प्रस्तरों व स्तंभों पर उत्कीर्ण है। इनसे हम अशोक के प्रशासन तथा उसके साम्राज्य विस्तार के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

भारतीय संस्कृति पर यूनानी प्रभाव

1. भारतीय (हिन्दू) फलित ज्योतिष तथा खगोल ज्योतिष पर यूनानी विद्वानों का प्रभाव पड़ा, जिन्हें **'यवनाचार्य'** कहा जाता था।
2. सिक्के ढालने की कला पर यूनानी प्रभाव पड़ा। दोतरफा मुखौटे वाले गोल सिक्के यूनानी मूल के समझे जाते हैं।
3. स्थापत्य कला पर यूनानी प्रभाव काफी पड़ा। तक्षशिला और पेशावर के पास पायी गयी कई मूर्तियों पर यूनानी छाप है यह कला **'गंधार शैली'** कहलाई। यह अफगानिस्तान तथा उत्तर पंजाब के इलाकों में पनपी, जिन्हें सामूहिक रूप से गांधार कहा जाता था। महात्मा बुद्ध की मूर्तियां एवं जीवनवृत इसी शैली में चित्रित हुई।
4. यूनानियों ने भारतीय दर्शन शास्त्र पर कोई प्रभाव नहीं डाला, धर्म तथा सहित्य पर भी नहीं। स्वयं यूनानी इनसे प्रभावित हुए। केवल महायान संप्रदाय पर कुछ यूनानी छाप नजर आती है।

मौर्य प्रशासन

- साम्राज्य में प्रधानमंत्री, पुरोहित एवं अन्य अधिकारियों की नियुक्ति के पूर्व इनके चरित्र को खूब जांचा परखा जाता था, जिसे 'उपधा परीक्षण' कहा जाता था।
- राजा के सप्तांग सिद्धान्त– राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र की सर्वप्रथम व्याख्या कौटिल्य ने की।
- मौर्यकाल में सम्राट की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी, जिसकी जानकारी डायोडोरस, स्ट्रेबो एवं एरियन के विवरणों से भी मिलती है।
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में **तीर्थ** का उल्लेख मिलता है, इन्हें **महामात्र** भी कहा जाता था, जिसकी संख्या 18 होती थी।
- अर्थशास्त्र में 28 अध्यक्षों का विवरण मिलता है, जो विभिन्न विभागों में अध्यक्ष के रूप में मंत्रियों के नीचे काम करते थे। यूनानी लेखकों ने इन्हें मजिस्ट्रेट कहा।
- अशोक के समय प्रांतों की संख्या पाँच थी।
- प्रांतों के प्रशासक को कुमार या आर्यपुत्र कहा जाता था।
- प्रांतों को आहार या विषय में बाँटा गया था, जो विषयपति के अधीन होते थे।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसका मुखिया 'ग्रामिक' कहलाता था।
- मेगास्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मण्डल करता था। ये मण्डल 6 समितियों में विभाजित थे, प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- अर्थशास्त्र में नवाध्यक्ष के उल्लेख से मौर्यों के पास नौ-सेना होने का प्रमाण मिलता है।
- युद्ध क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक होता था।
- सेना विभाग का सबसे प्रधान अधिकारी सेनापति होता था, जिसका वेतन 48,000 पण वार्षिक था एवं नायक का 12000 पण वार्षिक था।
- मौर्यकाल में दो प्रकार के न्यायालय थे– (1) धर्मस्थीय एवं (2) कण्टकशोधक।
- धर्मस्थीय न्यायालय के न्यायाधीश- **व्यावहारिक**, कण्टकशोधक के प्रदेष्ट्रि एवं जनपदीय न्यायालय का न्यायाधीश राजुक कहलाता था।

examtrix Free Education Platform

- गुप्तचर विभाग 'महामात्यापसर्प' नामक अमात्य के अधीन कार्य करता था।
- अर्थशास्त्र में गुप्तचर को **गूढ़ पुरुष** कहा गया है, जो दो प्रकार से कार्य करते थे– (1) संस्था (एक ही स्थान पर रुक कर) एवं (2) संचार (विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करके)।
- शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अर्थशास्त्र में **रक्षिन** का उल्लेख किया गया है।
- अशोक ने धर्मप्रचार एवं उदंड क्रिया कलापों को नियंत्रित करने के लिए धर्ममहामात्र की नियुक्ति की।
- **प्रतिवेदक** राजा को हर तरह की सूचना देता था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर (सौराष्ट्र प्रांत) पुष्यगुप्त ने उर्जयंत पर्वत पर एक सेतु का निर्माण करवा कर सुदर्शन झील का सिंचाई के लिए निर्माण करवाया।
- मौर्यकालीन मुद्रायें– सुवर्ण (सोना), कर्षापण, पण, धारण (चाँदी) एवं भाषक, काकणी (ताँबा)।
- मेगास्थनीज ने एग्रोनोमई नामक मार्ग निर्माण अधिकारी का उल्लेख किया है।
- मिश्रशासक टालमी ने भारत एवं मिश्र के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए लाल सागर के तट पर **बरनिस** नाम के बन्दरगाह की स्थापना की।
- कौटिल्य ने शूद्रों को आर्य कहा और उन्हें दास बनाना प्रतिबन्धित था।
- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज को सात भागों में विभाजित किया– (1) दार्शनिक (2) किसान (3) अहीर (पशुपालक) (4) कारीगर (शिल्पी) (5) सैनिक (6) निरीक्षक एवं (7) सभासद।
- स्वतंत्र गणिका एवं वेश्यावृत्ति वाली महिलाएँ रूपाजीवा कहलाती थीं।
- कौटिल्य ने नौ प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
- मौर्य युगीन लोक कला में दीदारगंज (पटना) से मिली चामरग्राहिणी यक्षी एवं वेसनगर से मिली यक्षी की मूर्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- अशोक के सारनाथ स्तम्भ पर अंकित चार बैठे हुए सिंहों की आकृति को स्वतंत्र भारत में राजकीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया है।
- ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया।
- फाह्यान ने मौर्य प्रसाद की भव्यता के कारण उसे देव निर्मित कहा।

examtrix Free Education Platform

ब्राह्मण साम्राज्य

- इस साम्राज्य के अन्तर्गत प्रमुख वंश थे– शुंग, कण्व, आन्ध्र, सातवाहन एवं वाकाटक।
- बाणभट्ट ने शुंगवंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग को अनार्य कहा है।
- गार्गी संहिता एवं मालविकाग्निमित्रम् से यवन-शुंग संघर्ष का विवरण मिलता है।
- पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने सिंधु नदी के तट पर यवन सेनापति मिनाण्डर को हराया।
- मालविकाग्निमित्रम के अनुसार पतंजलि के नेतृत्व में पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध यज्ञ करवाया।
- भरहुत स्तूप एवं साँची स्तूप की वेदिकाओं का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया।
- शुंगशासक भागभद्र के दरबार में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस आया।
- अंतिम शुंगवंशीशासक देवभूति की हत्या उसके अमात्य कण्ववंशी वासुदेव ने कण्व वंश की स्थापना की। कण्व वंश का अन्तिमशासक सुशर्मा हुआ।
- पुराण सातवाहनों को आंध्रभृत्य तथा आंध्रजातीय कहते हैं। कृष्णा और गोदावरी नदी की घाटी के मध्य सिमुक नामक व्यक्ति ने सातवाहन वंश की नींव डाली। इसकी राजधानी पैठन या प्रतिष्ठान थी।
- शातकर्णी प्रथम इस वंश का वास्तविक राजा था। उसने दो अश्वमेध यज्ञ एवं एक राजसूय यज्ञ सम्पन्न कर सम्राट की उपाधि धारण की। इसके अतिरिक्त उसने दक्खिनपथपति एवं अप्रतिहतचक्र की उपाधि धारण की।
- मत्स्य पुराण के अनुसार हाल सातवाहन वंश का 17वां राजा था। उसने गथासप्तशती नामक ग्रंथ की रचना की। उसके काल में गुणाढ्य ने पैशाची भाषा वृहदकथा लिखा।
- गौतमी पुत्रशातकर्णी सातवाहन वंश का 23वाँ राजा था। उसने वेणकटक स्वामी की उपाधि धारण की और वेणकटक

नामक नगर बसाया। उसने नासिक के बौद्ध संघ को अजकालकीय एवं कर्ले भिक्षु संघ को करजक क्षेत्र दान दिया।

- शून्यवाद के संस्थापक नागार्जुन गौतमीपुत्रशातकर्णी के समकालीन थे।
- वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी ने शकशासक रुद्रदामन की पुत्री से विवाह किया। उसने नवनगर की स्थापना किया एवं नवनगरस्वामी तथा दक्षिणापथेश्वर की उपाधि धारण किया।
- यज्ञ श्री इस वंश का अन्तिम प्रतापी राजा था।
- सातवाहनों ने सर्वाधिक सीसे के सिक्के एवं टीन, ताँबे और कांसे का सिक्का चलाया।
- सातवाहनों ने सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमिदान एवं जागीर देने की प्रथा आरम्भ की।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी थी।
- गौतमीपुत्रशातकर्णी ने वर्ण संकर कुप्रथा को रोकने के लिए चार वर्णों की प्रथा को पुनः स्थापित किया।
- सातवाहनों ने कार्ले का चैत्य बनवाया।
- वाकाटक वंश का संस्थापक विन्ध्यशक्ति था। इसकी तुलना इन्द्र एवं विष्णु से की जाती थी।
- गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त-II ने प्रभावती (पुत्री) का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन-II से किया।
- वाकाटकशासक प्रवरसेन-II ने सेतुबन्ध (रावणवध) ग्रंथ की रचना की।
- कलिंग में चेदि वंश की स्थापना महामेघवाहन ने की और इसका प्रतापी राजा खारवेल था।
- खारवेल जैनधर्म का अनुयायी था। हाथी गुम्फा अभिलेख उससे संबंधित है।
- खारवेल ने दक्षिण भारत एवं पाटलिपुत्र पर सफल सैन्य अभियान किया।

मौर्यकालीन लोक कला

1. परखम की यक्ष मूर्ति
2. दीदारगंज (पटना) की चावरग्रहिणी यक्षिणी
3. बेसनगर (विदिशा) की यक्षिणी की मूर्ति
4. पटना से प्राप्त यक्ष मूर्ति

प्रमुख विदेशी यात्री/दूत

1. **मेगास्थनीज**–सेल्यूकस का चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत (305 ई.पू.) था इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक लिखी।
2. **फाह्यान**–चीनी यात्री चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय भारत आया। (399-414 ई.)
3. **ह्वेनसांग**–हर्षवर्द्धन के शासन काल में भारत आया (629-643 ई.)
4. **इत्सिंग**–चीनी विद्वान नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया (675-695 ई)
5. **अलबरुनी**–मध्य एशियाई विद्वान। इसने महमूद गजनवी की सेना के साथ भारत भ्रमण किया। इसने 'तहकीक-ए-हिन्द' नामक पुस्तक की रचना की।
6. **मार्कोपोलो**–वेनिस यात्री, चीन जाते समय पांड्य राज्य का भ्रमण किया।
7. **इब्नबूतता**–मोरक्को का यात्री, इसने मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में भारत भ्रमण किया। इसने 'रेहला' नामक पुस्तक लिखी।
8. **निकोली कोंटी**–इटली यात्री, देवराय प्रथम (विजयनगर) के काल में भारत आया।

गुप्त साम्राज्य

- गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी सदी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ।
- गुप्त वंश का संस्थापक श्री गुप्त (240-180 ई0) था एवं उसका उत्तराधिकारी घटोत्कच हुआ।
- गुप्त वंश का प्रथम महान् राजा चन्द्रगुप्त प्रथम था। उसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। लिच्छ्वि कुल की कन्या कुमार देवी से विवाह किया और अपने राज्याभिषेक के वर्ष 320 ई. में गुप्त संवत् की शुरुआत की।
- चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (335-753 ई.) था।
- समुद्रगुप्त के दरबार में प्रसिद्ध कवि हरिषेण रहता था, जिसने इलाहाबाद के प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त के विजय

examtrix Free Education Platform

अभियानों का उल्लेख किया।

- वी.ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त के निरन्तर विजयों को देखते हुए उसे **भारत का नेपोलियन** कहा है।
- समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और अश्वमेधहर्ता की उपाधि धारण की। वह विष्णु का उपासक था। साथ ही उसे कविराज भी कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त ने गरुड़ (सर्वाधिक लोकप्रिय), धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, व्याघ्रहन्ता एवं वीणासरण (वीणा बजाता हुआ समुद्रगुप्त- संगीत प्रेम) प्रकार के सिक्के चलाये।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से गया में एक बुद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति माँगी थी।
- समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (380 ई.-412 ई.) हुआ। इसने परमभागवत राजाधिराज, नरेन्द्र, शकारि इत्यादि उपाधि धारण की। इसे देवगुप्त या देवराज भी कहा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उज्जैन को गुप्त साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया।

गुप्तकालीन अधिकारी

महासेनापति	**सेना का सर्वोच्च अधिंकारी**
महापीलुपति	**गजसेना का अध्यक्ष**
महाश्वपति	**अश्वसेना का अध्यक्ष**
महासंधिविग्राहिक	**युद्ध औरशांति का मंत्री**
दण्डपाशिक	**पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी**
चाट एवं भाट	**साधारण कर्मचारी (पुलिस)**
विनयस्थित स्थापक	**धार्मिक मामलों का मुख्य अधिकारी**
शौल्किक	**शुल्क वसूलने वाला (व्यापार)**

- **चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न थे। ये हैं- अमरसिंह, कालिदास, वेतालभट्ट, घटकर्पर, क्षपनक, वररुचि, शंकु, धन्वतंरि (आयुर्वेदाचार्य) तथा वराहमिहिर।**
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी यात्री फाह्यान (399-414 ई.) ने भारत भ्रमण किया।
- बौद्ध विद्वान दिक्नाथ को संरक्षण दिया, जिसे मध्यकालीन न्याय का पिता कहा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का उत्तराधिकारी कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य (415-454 ई.) हुआ।
- ह्वेनसांग ने कुमारगुप्त को शक्रादित्य कहा है। वह कार्तिकेय का उपासक था।
- कुमार गुप्त के समय ही पुष्यमित्र जातियों का विद्रोह हुआ।
- नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्थापक कुमार गुप्त था। उसने अश्वमेध यज्ञ किया।
- कुमारगुप्त का उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य (455-67 ई.) हुआ।
- स्कन्दगुप्त ने सौराष्ट्र में पर्णदत्त को गवर्नर नियुक्त किया एवं उसके पुत्र चक्रपालित को सुदर्शन झील के पुनरुद्धार का कार्य सौंपा। चक्रपालित ने झील के किनारे एक विष्णु मंदिर बनवाया।
- स्कन्दगुप्त ने सौ राजाओं के स्वामी की उपाधि धारण की। उसने चीन में अपना राजदूत भेजा।
- स्कंदगुप्त के समय प्रथम हूण आक्रमण हुआ।
- गुप्त साम्राज्यों का विभाजन प्रांतों में हुआ, जिसे भुक्ति/अवनि/देश कहा जाता था। जिसका प्रधान उपरिक कहलाता था।
- भुक्ति के नीचे विषय होता था, जिसके प्रमुख विषयपति कहलाते थे।
- गुप्तवंश का अन्तिमशासक विष्णुगुप्त था।
- सीमा प्रांत का प्रशासक गोप्ता कहलाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसके प्रमुख **ग्रामीक** कहलाते थे।

examtrix Free Education Platform

- ग्राम समूहों की छोटी इकाई को **पेठ** कहा जाता था।
- **भाग**- राजा का भूमि के उत्पादन से प्राप्त होने वाला छठा हिस्सा।
- **भोग**- राजा को हर दिन फल एवं सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर।
- **उपरिकर एवं उद्रंकर**- एक प्रकार का भूमिकर था।
- भूमि का स्वामी कृषकों से बेगार या विष्टि लिया करता था।
- कृषि से जुड़े हुए कार्यों को महाक्षपटलिक एवं कारणिक देखता था।
- सिंचाई के लिए रहट या घटी यंत्र का प्रयोग होता था।
- श्रेणियाँ, व्यावसायिक उद्यम एवं निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। श्रेणी का प्रधान **ज्येष्ठक** (वंशानुगत) होता था। श्रेणियाँ आधुनिक बैंक का भी काम करती थीं।
- श्रेणी से बड़ी संस्था निगम थी, जिसका प्रधान **श्रेष्ठि** कहलाते थे। व्यापारिक कारवाँ का नेतृत्व करने वाला **सार्थवाह** कहलाते थे।
- मंदसौर अभिलेख के अनुसार रेशम बुनकरों की श्रेणी ने एक सूर्य मंदिर बनवाया।
- स्कन्द गुप्त के इंदौर ताम्रपत्र अभिलेख में तैलिक श्रेणी का उल्लेख मिलता है।
- कुमार गुप्त के दामोदर ताम्रपत्र में भूमि बिक्री संबंधी क्रियाकलापों का उल्लेख है।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के को दीनार कहा जाता था।
- गुप्तकाल में उज्जैन सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल था। गुप्त काल के अन्तिम चरण में पाटलिपुत्र, मथुरा, सोनपुर, सोहगौरा एवं गंगाधाटी के कुछ नगरों का ह्रास हुआ।
- गुप्तकाल में शूद्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
- दासों को दासत्व भाव से मुक्त कराने का प्रथम प्रयास नारद स्मृति ने किया।
- सर्वप्रथम **सती-प्रथा** का प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के **एरण अभिलेख** से मिलता है। जिसमें किसी गोपराज (सेनापति) की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है।
- नारद एवं पराशर स्मृति में विधवा विवाह के प्रति समर्थन जताया गया है।
- वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों को **गणिका** एवं वृद्ध वेश्या को **कुट्टनी** कहा जाता था।
- गुप्त स्थापत्य ने **नागर शैली** का आधार तैयार किया।
- अजन्ता में निर्मित कुल 29 गुफाओं में वर्तमान में केवल 6 ही (1, 2, 9, 10, 16 एवं 17) शेष हैं, जिनमें 16 एवं 17 गुप्कालीन हैं। इसमें गुफा संख्या 16 में उत्कीर्ण मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रशंसनीय है।
- गुफा संख्या 17 को चित्रशाला कहा गया है। इस चित्रशाला में बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रिमण एवं महापरिनिर्वाण की घटनाओं से संबंधित चित्रशामिल हैं।
- गुप्तकाल की मूर्तियों में कुषाणकालीन नग्नता एवं कामुकता का पूर्णतः लोप हो गया।
- ग्वालियर के समीप विन्ध्यपर्वत को काटकर बाघ की गुफायें बनाई गयीं।
- अजन्ता का चित्र महायानशाखा एवं बाघ गुफाओं का चित्र लौकिक जीवन से संबंधित हैं।
- विष्णु शर्मा का पंचतंत्र (संस्कृत) बाइबिल के पश्चात् विश्व का दूसरा लोकप्रिय ग्रंथ है।
- गुप्त काल में पुराणों की रचना प्रारम्भ हुई, जिसमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है।
- बुद्धघोष (हीनयान) ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इसका प्रसिद्ध ग्रंथ विसुद्दिमग्ग' है।
- जैन दार्शनिक आचार्य सिद्धसेन ने न्याय दर्शन पर न्यायावतारम् ग्रंथ लिखा।
- **वराहमिहिर** प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। इनके ग्रंथ वृहत्संहिता तथा पञ्चसिद्धान्तिका हैं। वृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्र, इतिहास, भौतिक भूगोल जैसे विषयों का वर्णन है।
- **आर्यभट्ट** (गणितज्ञ) ने आर्यभट्टीयम एवं सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रंथ लिखे। इन्होंने **दशमलव प्रणाली** का विकास किया। सर्वप्रथम उसी ने बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इन्होंने सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण होने के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला।

examtrix Free Education Platform

- **ब्रह्मगुप्त** ने ब्रह्म सिद्धान्त में बताया कि प्राकृतिक नियमानुसार समस्त वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
- वागभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ **अष्टांग हृदय** की रचना की।
- सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है।

गुप्तकालीन लोकप्रिय नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार
मालविकाग्निमित्रम	कालिदास
विक्रमोर्वशीयम	कालिदास
अभिज्ञानशाकुन्तलम	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
देवी चन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त
मृच्छकटिकम	शूद्रक
स्वप्नवासवदत्ता	भास
चारूदत्त	भास

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख वंश

शासक गुलाम वंश	शासन काल (ईस्वी सन)
कुतुबुद्दीन	1206–1210
इल्तुतमिश	1211–1236
रजिया बेगम	1236–1240
नासिरूद्दीन महमूद	1246–1266
बलबन	1266–1287

सल्तनत कालीन निर्माण कार्य

क्रमइमारत	निर्माणकर्ता
1. कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद (दिल्ली)	कुतुबुद्दीन ऐबक
2. कुतुबमीनार (दिल्ली)	ऐबक एवं इल्तुतमिश
3. ढाई दिन का झोंपड़ा (अजमेर)	कुतुबुद्दीन एबेक
4. नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा (दिल्ली)	इल्तुतमिश
5. इल्तुतमिश का मकबरा (दिल्ली)	इल्तुतमिश
6. अलाई दरवाजा (दिल्ली)	अलाउद्दीन खिलजी
7. तुगलकाबाद (दिल्ली)	गयासुद्दीन तुगलक
8. गयासुद्दीन का मकबरा (दिल्ली)	मुहम्मद तुगलक
9. बारहखंभा (दिल्ली)	मुहम्मद तुगलक
10. कुष्क-ए-फिरोजाबाद (दिल्ली)	फिरोज तुगलक
11. फिरोजशाह कोटला (दिल्ली)	फिरोज तुगलक
12. मोठ मस्जिद (दिल्ली)	फिरोज तुगलक
13. पांडुआ की अदीना मस्जिद (बंगाल)	सिकंदर शाह
14. अटाला मस्जिद (जौनपुर उ.प्र.)	इब्राहिम शर्की
15. मांडू का किला (मांडू)	हुशंगशाह व महमूद खिलजी
16. जहाज महल	महमूद प्रथम

examtrix Free Education Platform

प्रमुख लड़ाइयां/युद्ध

तराईं का प्रथम युद्ध (1191) : इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया।

तराईं का द्वितीय युद्ध (1192) : इस युद्ध में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।

चन्दावर का युद्ध (1194) : इस युद्ध में मुहम्मद गौरी ने जयचंद को पराजित किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) : इस युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया।

खान्वाह का युद्ध (1527) : इस युद्ध में बाबर ने मेवाड़ के राणा सांगा को पराजित किया।

चंदेरी का युद्ध (1528) : इस युद्ध में बाबर ने राणा सांगा के सशक्त सामंत मेदनीराय को पराजित किया।

घाघरा का युद्ध (1529) : इस युद्ध में बाबर ने अफगानों को पराजित किया।

चौसा का युद्ध (1539) : इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूं को पराजित किया।

कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध (1540) : इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूं को हराकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556) : इस युद्ध में सम्राट अकबर ने अफगान सरकार हेमू को पराजित किया।

हल्दीघाटी का युद्ध (1576) : इस युद्ध में अकबर ने महाराणा प्रताप को पराजित किया।

असीरगढ़ का युद्ध (1601) : अकबर द्वारा लड़ा गया यह अन्तिम युद्ध था।

प्लासी का युद्ध (1757) : इस युद्ध में लॉर्ड क्लाइव ने सिराजुद्दौला को पराजित किया।

वांडीवास का युद्ध (1760) : दक्षिण भारत में हुए इस युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को पराजित कर दिया।

पानीपत का तृतीय युद्ध (1761) : इस युद्ध में अहमदशाह अब्दाली ने मराठों को पराजित किया।

बक्सर का युद्ध (1764) : इस युद्ध में अंग्रेजों ने मीरकासिम, शुजाउद्दौला एवं अहमदशाह की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया।

प्रथम मैसूर युद्ध (1767-69) : यह युद्ध हैदरअली, हैदराबाद के निजाम तथा अंग्रेजों के मध्य हुआ। युद्ध से निजाम अलग हो गया। यह युद्ध निर्णायक नहीं हुआ।

द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84) : यह युद्ध चार वर्ष तक चला। इस युद्ध में हैदरअली की मृत्यु हो गई।

तृतीय मैसूर युद्ध (1790-92) : इस युद्ध में अंग्रेजों ने टीपू सूल्तान को पराजित किया।

चतुर्थ मैसूर युद्ध (1799) : इस युद्ध में लड़ते-लड़ते टीपू सुल्तान वीरगति को प्राप्त हुआ।

भारत आने वाले कुछ प्रमुख विदेशी यात्री

अलबरुनी–महान महान तुर्की-विद्वान अलबरुनी भारत में सबसे पहले आने वाले पर्यटकों में से एक था, जिसका प्रसिद्ध ग्रन्थ **किताब-उल-हिन्द** के नाम से प्रसिद्ध है।

इब्नबतूता–इसका वास्तविक नाम **अबू अब्दुल्ला** था। यह 1333 ई. में भारत आया था।

अब्दुर्रज्जाक–रज्जाक एक ईरानी राजदूत था और विजयनगर सम्राट के दरबार में आया था। वहां वह 1442 ई. से 1443 ई. तक रहा।

मार्कोपोलो कोण्टी–कोण्टी इटली का पर्यटक था। वह 1520 ई. में भारत आया था।

डोमिंगोज पेइज–पेइज पुर्तगाली यात्री था।

मध्यकालीन भारत

भारत पर अरबो का आक्रमण

- **मुहम्मद बिन कासिम** के नेतृत्व में अरबों ने भारत पर पहला सफल आक्रमण किया।
- अरबों ने **सिन्ध** पर 712 ई. में विजय पायी थी।
- भारत पर अरबवासियों के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन-दौलत लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था।

महमूद गज़वी

- **अलप्तगीन** नामक एक तुर्क सरदार **गजनी** साम्राज्य का संस्थापक था।
- अपने पिता के काल में गज़नी **खुरासान** का शासक था।

eXamtrix Free Education Platform

- **महमूद गज़नवी** 27 वर्ष की अवस्था में 997 ई. में गद्दी पर बैठा।
- महमूद गज़नी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- महमूद गज़नी का 1008 ई. में नगरकोट के विरूद्ध हमले को मूर्तिवाद के विरुद्ध पहली महत्त्वपूर्ण जीत बतायी जाती है।
- महमूद गज़नी का सबसे चर्चित आक्रमण 1024 ई. में सोमनाथ मंदिर *(सौराष्ट्र)* पर हुआ। इस मंदिर की लूट में उसे करीब **20 लाख** दीनार की संपत्ति हाथ लगी। सोमनाथ की रक्षा में सहायता करने के कारण अन्हिलवाड़ा के शासक पर महमूद ने आक्रमण किया।
- सोमनाथ मंदिर लूट कर ले जाने के क्रम में महमूद पर **जाटों** ने आक्रमण किया था और कुछ सम्पत्ति लूट ली थी।
- महमूद गज़नी का अन्तिम भारतीय आक्रमण 1027 ई. में **जाटों** के विरुद्ध था।
- महमूद गज़नी की मृत्यु 1030 ई. में हो गयी।
- **अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी** तथा **फरूखी** महमूद गज़नी के दरबार में रहते थे।
- दिल्ली का **कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद** एवं अजमेर का **ढाई दिन का झोपड़ा** नामक मस्जिद का निर्माण **ऐबक** ने करवाया था।
- प्राचीन **नालंदा विश्वविद्यालय** को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक **बख्तियार खिलजी** था।

मुगल साम्राज्य (1526 ई. से 1707 ई.)

- मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** था। बाबर एवं उत्तरवर्ती मुगल शासक **तुर्क** एवं **सुन्नी** मुसलमान थे। बाबर ने मुगल वंश की स्थापना के साथ ही **पद-पदाशाही** की स्थापना की, जिसके तहत शासक को **बादशाह** कहा जाता था।

बाबर (1526-1530 ई.)

- बाबर का जन्म 24 फरवरी, 1483 ई. में हुआ था।
- बाबर के पिता **उमरशेख मिर्जा** फरगाना नामक छोटे राज्य के शासक थे।
- बाबर फरगाना की गद्दी पर 8 जून, 1494 ई. में बैठा।
- बाबर के चार पुत्र थे–हुमायूं, कामरान, असकरी तथा हिंदाल।
- बाबर ने भारत पर **पांच बार** आक्रमण किया।
- बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण पंजाब के शासक **दौलत खां लोदी** एवं मेवाड़ के शासक **राणा सांगा** ने दिया था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार **तुगलमा युद्ध नीति** एवं **तोपखाने** का प्रयोग किया था। **उस्ताद अली** एवं **मुस्तफा** बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे, जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।

बाबर द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	पक्ष परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध	21 अ.,1526 इ.	इब्राहिम लोदी एवं बाबरबाबर विजयी
खानवा का युद्ध	17 मा., 1527	राणा सांगा एवं बाबर बाबर विजयी
चन्देरी का युद्ध	29 ज., 1528	मेदनी राय एवं बाबर बाबर विजयी
घाघरा का युद्ध	6 मई, 1529	अफगानों एवं बाबर बाबर विजयी

- बाबर को अपनी उदारता के लिए **कलन्दर** की उपाधि दी गयी।
- खानवा युद्ध में विजय के बाद बाबर ने **'गाजी'** की उपाधि धारण की थी।
- करीब 48 वर्ष की आयु में 26 दिसम्बर, 1530 ई. को **आगरा** में बाबर की मृत्यु हो गयी।
- प्रारंभ में बाबर के शव को **आगरा के आरामबाग** में दफनाया गया, बाद में काबुल में उसके द्वारा चुने गए स्थान पर दफनाया गया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा **बाबरनामा** की रचना की, जिसका अनुवाद बाद में फारसी भाषा में **अब्दुल रहीम खानखाना** ने किया।

examtrix Free Education Platform

- बाबर का उत्तराधिकारी **हुमायूं** हुआ।

हुमायूं (1530-1556 ई.)

- नसीरुद्दीन हुमायूं 29 दिसम्बर, 1530 ई. को आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा। गद्दी पर बैठने से पहले हुमायूं **बदख्शां** का सूबेदार था।
- अपने पिता के निर्देश के अनुसार हुमायूं ने अपने राज्य का बंटवारा अपने भाइयों में कर दिया। इसने कामरान को **काबुल** और **कंधार, मिर्जा असकरी** को **संभल, मिर्जा हिंदाल** को **अलवर** एवं **मेवाड़** की जागीरें दीं। अपने चचेरे भाई **सुलेमान मिर्जा** को हुमायूं ने **बदख्शां प्रदेश** दिया।
- **चौसा का युद्ध** 25 जून, 1539 ई. में शेर खां एवं हुमायूं के बीच हुआ। इस युद्ध में शेर खां विजयी रहा। इसी युद्ध के बाद शेर खां ने शेरशाह की पद्वी ग्रहण कर ली।
- **बिलग्राम** या कन्नौज युद्ध 17 मई, 1540 ई. में शेर खां एवं हुमायूं के बीच हुआ। इस युद्ध में भी हुमायूं पराजित हुआ। शेर खां ने आसानी से **आगरा** एवं **दिल्ली** पर कब्जा कर लिया।
- 1555 ई. में हुमायूं ने पंजाब के शूरी शासक सिकन्दर को पराजित कर पुन: दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- 1 जनवरी, 1556 ई. **को दिन पनाह** भवन में स्थित **पुस्तकालय की सीढ़ियों** से गिरने के कारण हुमायूं की मृत्यु हो गयी।
- **हुमायूंनामा** की रचना **गुल-बदन बेगम** ने की थी।
- हुमायूं ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए इसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए।

शेरशाह (1540-1545 ई.)

- सूर साम्राज्य का संस्थापक **अफगानवंशीय** शेरशाह **सूरी** था।
- शेरशाह का जन्म **1472 ई.** में बजवाड़ा *(होशियारपुर)* में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम **फरीद खां** था। यह **सुर वंश** से संबंधित था।
- इनके पिता हसन खां **जौनपुर** राज्य के अन्तर्गत सासाराम के **जमींदार** थे।
- फरीद ने एक शेर को तलवार के एक ही वार से मार दिया था। उसकी इस बहादुरी से प्रसन्न होकर बिहार के अफगान शासक सुल्तान **मुहम्मद बहार खां लोहानी** ने उसे **शेर खां** की उपाधि प्रदान की।
- शेरशाह बिलग्राम युद्ध *(1540 ई.)* के बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- शेरशाह की मृत्यु कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में 22 मई. 1545 ई. को हो गयी। मृत्यु के समय वह **उक्का** नाम का आग्येशास्त्र चला रहा था।
- शेरशाह का मकबरा **सासाराम** में झील के बीच ऊंचे टीले पर निर्मित किया गया है।
- शेरशाह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र **इस्लाम शाह** था।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंकवाला **सिकन्दरी गज** एवं **सन की डंडी** का प्रयोग किया।
- शेरशाह ने 178 ग्रेन चांदी का **रुपया** एवं 380 ग्रेन तांबे के दाम चलवाया।
- शेरशाह ने रोहतासगढ़ के दुर्ग एवं कन्नौज के स्थान पर **शेरसूर** नामक नगर बसाया।
- शेरशाह ने **1541 ई.** में **पाटलिपुत्र** को **पटना** के नाम से पुन: स्थापित किया।
- शेरशाह ने बंगाल से पेशावर (पाकिस्तान) तक जाने वाले **ग्रैंड ट्रक रोड** की मरम्मत करवायी।
- मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह के समकालीन थे।
- **डाक-प्रथा** का प्रचलन शेरशाह के द्वारा किया गया।

अकबर (1542-1605 ई.)

- सम्राट् अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को हमीदा बानू बेगम के गर्भ में से अमरकोट के राणा वीर साल के महल में हुआ।
- अकबर का राज्यभिषेक 14 फरवरी, 1556 ई. को पंजाब के **कलानौर** नामक स्थान पर हुआ।

examtrix Free Education Platform

- अकबर का शिक्षक अब्दुल लतीफ ईरानी विद्वान था।
- यह **जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाही गाजी** की उपाधि से राजसिंहासन पर बैठा।
- **बैरम खां** 1556 से 1560 ई. तक अकबर का संरक्षक रहा।
- **पानीपत की दूसरी लड़ाई** 5 नवम्बर, 1556 ई. को अकबर और हेमू के बीच हुई थी।
- मई, 1562 ई. में अकबर **ने 'हरम-दल'** से अपने को पूर्णतः मुक्त कर लिया।
- हल्दीघाटी का युद्ध 18 जुन, 1576 ई. को मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप एवं अकबर के बीच हुआ। इस युद्ध में अकबर विजयी हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व **मान सिंह** एवं **आसफ खां** ने किया था।
- अकबर का सेनापति **मान सिंह** था।
- महाराणा प्रताप की मृत्यु 57 वर्ष की उम्र में 19 जनवरी, 1597 ई. में हो गयी।
- **दीन-ए-इलाही** धर्म का प्रधान पुरोहित **अकबर** था।
- दीन-ए-इलाही धर्म स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अन्तिम हिन्दू शासक **बीरबल** था।
- अकबर ने जैन धर्म के **जैनाचार्य हरिविजय सूरि** को **जगतगुरु** की उपाधि प्रदान की थी।
- राजस्व प्राप्ति की **जब्ती प्रणाली** अकबर के शासनकाल में प्रचलित थी।
- अकबर के दीवान **राजा टोडरमल** ने 1580 ई. में **दहशाल बन्दोबस्त** व्यवस्था लागू की।
- अकबर के दरबार का प्रसिद्ध संगीतकार **तानसेन** था।
- अकबर के दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार **अब्दुलसमद** था।
- **दसवंत** एवं **बसावन** अकबर के दरबार के चित्रकार थे।
- अकबर के शासनकाल के प्रमुख गायक **तानसेन, बाजबहादुर, बाबा रामदास एवं बैजू** बाबरा थे।
- अकबर की शासन-प्रणाली की प्रमुख विशेषता **मनसबदारी प्रथा** थी।
- अकबर के समकालीन प्रसिद्ध सूफी सन्त शेख **सलीम चिश्ती** थे।
- स्थापत्यकला के क्षेत्र में अकबर की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं–**दिल्ली में हुमायूं का मकबरा, आगरा का लालकिला, फतेहपुर सीकरी में शाहीमहल, दीवाने खास, पंचमहल, बुलंद दरवाजा, जोधाबाई का महल, इबादतखाना, इलाहाबाद का किला और लाहौर का किला।**
- अकबर के दरबार को सुशोभित करने वाले नौ रन्त इस प्रकार थे–(*i*) बीरबल, (*ii*) अबुल फजल, (*iii*) टोडरमल, (*iv*) भगवान दास, (*v*) तानसेन, (*vii*) अब्दुर्रहीम खानखाना, (*viii*) मुल्ला दो प्याजा, (*ix*) हकीम हुकाम।
- अबुल फजल ने **अकबरनामा** ग्रंथ की रचना की। वह दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था।
- संगीत सम्राट् तानसेन का जन्म ग्वालियर में हुआ था। इनकी प्रमुख कृतियां थीं – मियां की तोड़ी, मियां की मल्हार मियां का सारंग आदि।
- **कण्ठारभरण वाणीविलास** की उपाधि अकबर ने तानसेन को दी थी।
- युसुफजाइयों के विद्रोह को दबाने के दौरान **बीरबल** की हत्या हो गयी।
- मुगल सम्राट् अकबर ने **'अनुवाद विभाग'** की स्थापना की। नकीब खां, अब्दुल कादिर बदायूंनी तथा शेख सुल्तान ने रामायण एवं महाभारत का फारसी अनुवाद किया व महाभारत का नाम 'रज्मनामा' *(युद्धों की पुस्तक)* रखा।
- पंचतंत्र का फारसी भाषा में अनुवार **अबुल फजल** ने **अनवर-ए-सादात** नाम से तथा **मौलाना हुसैन फैज** ने **यार-ए-दानिश** नाम से किया। हाजी इब्राहिम सरहदी ने 'अथर्ववेद' का, मुल्लाशाह मोहम्मद ने राजतरंगिणी का, अब्दुर्रहीम खानखाना ने **'तुजुक-ए-बाबरी'** का तथा फैजी ने **लीलावती** का फारसी में अनुवाद किया। फैजी ने नल दमयन्ती *(सूरदास द्वारा रचित)* कथा का फारसी में अनुवाद कर उसका नाम 'सहेली' रखा।
- अकबर के काल को **हिन्दी साहित्य** का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- अकबर ने **बीरबल** को **कविप्रिय** एवं **नरहरि** को **महापात्र** की उपाधि प्रदान की।
- **बुलन्द दरवाजे** का निर्माण अकबर ने गुजरात-विजय के उपलक्ष्य में करवाया था।

eXamtrix Free Education Platform

- चार बाग बनाने की परंपरा अकबर के समय शुरू हुई।

जहांगीर (1605-1627 ई.)

- अकबर का उत्तराधिकारी **सलीम** हुआ, जो 24 अक्टूबर, 1605 ई. को **नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाही गाजी** की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठा।
- जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. में हुआ था।
- अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम सूफी संत शेख सलीम श्चिती के नाम पर रखा।
- जहांगीर द्वारा शुरू की गई **'तुजुके-ए-जहांगीरी'** नामक आत्मकथा को पूरा करने का श्रेय **मौतबिंद खां** को है।
- जहांगीर के सबसे बड़े पुत्र खुसरो ने 1606 ई. में अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। खुसरो और जहांगीर की सेना के बीच युद्ध जालंधर के निकट **भैरावल** नामक मैदान में हुआ। खुसरो को पकड़कर कैद में डाल दिया गया।
- खुसरो की सहायता देने के कारण जहांगीर ने सिक्खों के 5वें गुरु **अर्जुनदेव** को फांसी दिलवा दी।
- 1622 ई. में कंधार मुगलों के हाथ से निकल गया। शाह अब्बास ने इस पर अधिकार कर लिया।
- **नूरजहां** ईरान निवासी मिर्जा गयास बेग की पुत्री नूरजहां का वास्तविक नाम **मेहरुन्निसा** था। 1594 ई. में नूरजहां का विवाह अली कुली बेग से सम्पन्न हुआ। जहांगीर ने एक शेर **मारने** के कारण अली कुली वेग को **शेर अफगान** की उपाधि प्रदान की। 1607 ई. में शेर अफगान की मृत्यु के बाद मेहरुन्निसा अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा में नियुक्त हुई। सर्वप्रथम जहांगीर ने नवरोज त्योहार के अवसर पर मेहरुन्निसा को देखा और उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर मई, 1611 ई. में उससे विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात् जहांगीर ने उसे नूरजहां की उपाधि प्रदान की। नूरजहां के सम्मान में जहांगीर ने चांदी के सिक्के जारी किए।
- नूरजहां की मां **अस्मत बेगम ने गुलाब से इत्र** निकालने की विधि खोजी थी।
- **महावत खां** ने झेलम नदी के तट पर 1626 ई. में जहांगीर, नूरजहां एवं उसके भाई आसफ खां को बन्दी बना लिया था।
- जहांगीर के पांच पुत्र थे–(1) खुसरो, (2) परवेज, (3) खुर्रम, (4) शहरयार, (5) जहांदार।
- 28 अक्टूबर, 1627 ई. को **भीमवार** नामक स्थान पर जहांगीर की मृत्यु हो गयी। उसे **शाहादरा** (लाहौर) में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।
- मुगल चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर **जहांगीर** के शासनकाल में पहुंची।
- जहांगीर ने आगा रजा के नेतृत्व में आगरा में एक **चित्रणशाला** की स्थापना की।
- जहांगीर के समय को **चित्रकला का स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- अशोक के कौशाम्बी स्तम्भ *(वर्तमान में प्रयाग)* पर समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति तथा जहांगीर का लेख उत्कीर्ण है।
- जहांगीर के मकबरे का निर्माण **नूरजहां** ने करवाया था।
- जहांगीर के शासनकाल में कैप्टन **हॉकिन्स, सर टॉमस रो, विलियम फिंच** एवं **एडवर्ड टैरी** जैसे यूरोपीय यात्री आए थे।

शाहजहां (1627-1657 ई.)

- जहांगीर के बाद सिंहासन पर शाहजहां बैठा।
- जोधपुर के शासक मोटा राजा उदय सिंह की पुत्री **जगत गोसाई** के गर्भ से 5 जनवरी, 1592 ई. को खुर्रम *(शाहजहां)* का जन्म लाहौर में हुआ था। 1612 ई. में में खुर्रम का विवाह आसफ खां की पुत्री **अरजुमन्द बानो बेगम** से हुआ, जिसे शाहजहां ने मलिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की। 7 जून, 1631 ई. में प्रसव पीड़ा के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- शाहजहां ने आसफ खां को **वजीर** पर एवं महावत खां को **खानखाना** की उपाधि प्रदान की।
- इसने नूरजहां को दो लाख रु. प्रतिवर्ष की पेंशन देकर लाहौर जाने दिया, जहां 1645 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।
- अपनी बेगम मुमताज महल की याद में शाहजहां ने ताजमहल का निर्माण आगरे में उसकी कब्र के ऊपर करवाया।
- ताजमहल का निर्माण करनेवाला मुख्य स्थापत्य कलाकार **उस्ताद अहमद लाहौरी** था।

examtrix Free Education Platform

- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहां ने करवाया था। इसका मुख्य कलाकार **बे बादल खां** था।
- शाहजहां के शासनकाल को **स्थापत्य कला का स्वर्णयुग** कहा जाता हैं, शाहजहां द्वारा बनवायी गयी प्रमुख इमारतें हैं–दिल्ली का लालकिला, दीवाने आम, दीवाने खास, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद तथा ताजमहल आदि।
- शाहजहां ने 1638 ई. में अपनी राजधानी को **आगरा** से **दिल्ली** लाने के लिए यमुना नदी के दाहिने तट पर **शाहजहांनाबाद** की नींव डाली।
- आगरे की जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहां की पुत्री जहांआरा ने करवाई।
- शाहजहां के दरबार के प्रमुख चित्रकार **मुहम्मद फकीर** एवं **मीर हासिम** थे।
- शाहजहां ने संगीतज्ञ **लाल खां** को **'गुण समन्दर'** की उपाधि दी थी।
- सितम्बर, 1657 ई. में शाहजहां के गंभीर रूप से बीमार पड़ने और मृत्यु का अफवाह फैलाने के कारण उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध प्रारंभ हुआ। उस समय शूजा बंगाल, मुराद गुजरात एवं औरंगजेब दक्कन में था दारा एवं औरंगजेब के बीच **धरमट का युद्ध** हुआ। इस युद्ध में दारा की पराजय हुई।
- शाह बुलंद इकबाल *(king of Lofty fortune)* के रूप में दारा शिकोह जाना जाता है।
- 8 जून, 1658 ई. को औरंगजेब ने शाहजहां को बंदी बना लिया। आगरे के किले में अपने कैदी जीवन के आठवें वर्ष अर्थात् 22 जनवरी, 1666 ई. को 74 वर्ष की अवस्था में शाहजहां की मृत्यु हो गयी।

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 24 अक्टूबर, 1618 ई. को **दोहाद** *(गुजरात)* नामक स्थान पर हुआ था।
- औरंगजेब के बचपन का अधिकांश समय **नूरजहां** के पास बीता। 18 मई, 1637 ई. को फारस के राजघराने की **'दिलरास बानो बेगम'** के साथ औरंगजेब का निकाह हुआ।
- आगरा पर कब्जा कर जल्दबाजी में औरंगजेब ने अपना राज्यभिषेक **'अबुल मुजफ्फर मुहउद्दीन मुजफ्फर औरंगजेब बहादुर आलमगीर'** की उपाधि से 31 जुलाई, 1658 को करवाया। देवराई के युद्ध में सफल होने के बाद 15 मई, 1659 को औरंगजेब ने दिल्ली में प्रवेश किया और शाहजहां के शानदार महल में 5 जून, 1659 को दूसरी बार राज्यभिषेक करवाया।
- औरंगजेब के गुरु थे–**मीर मुहम्मद हकीम**।
- औरंगजेब **सुन्नी धर्म** को मानता था। उसे **जिन्दा पीर** कहा जाता था।
- मई, 1666 ई. को आगरे के किले के दीवाने आम में औरंगजेब के समक्ष शिवाजी उपस्थित हुए। यहां शिवाजी को कैद कर **जयपुर भवन** में रखा गया।
- इस्लाम नहीं स्वीकार करने के कारण सिक्खों के 9वें **गुरु तेगबहादुर की हत्या** औरंगजेब ने 1675 में दिल्ली में करवा दी थी।
- औरंगजेब ने 1679 ई. को **जाजिया कर** को पुनः लागू किया।
- औरंगजेब ने बीबी का मकबरा का निर्माण 1679 ई. को औरंगाबाद *(महाराष्ट्र)* में करवाया।
- 1686 ई. में **बीजापुर** एवं 1697 ई. में **गोलकुण्डा** को औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- औरंगजेब के समय में हिन्दु मनसबदारों की संख्या लगभग 337 थी, जो अन्य मुगल सम्राटों की तुलना में अधिक थी।
- औरंगजेब के पुत्र **(अकबर)** ने दुर्गादास के बहकावे में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्रोह किया।
- औरंगजेब ने दरबार में संगीत पर पाबन्दी लगा दी तथा सरकारी संगीतज्ञों को अवकाश दे दिया गया। शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के ही शासनकाल में लिखी गयी। औरंगजेब स्वयं वीणा बजाने में दक्ष था।
- औरंगजेब ने 1665 ई. में हिन्दू मंदिरों को तोड़ने का आदेश दिया। इसके शासनकाल में तोड़े गए मंदिरों में सोमनाथ का मंदिर, बनारस का विश्वनाथ मंदिर एवं वीर सिंह देव द्वारा जहांगीर काल में मथुरा में निर्मित केशव राय मंदिर

Examtrix Free Education Platform

थे।

- औरंगजेब की मृत्यु 20 फरवरी, 1707 ई. को हुई। इसे खुलदाबाद *(Khuldabad)*, जो अब रोजा *(Roza)* कहलाता है, में दफनाया गया। औरंगजेब के समय सूबों की संख्या 20 थी।
- औरंगजेब **दारुल हर्ब** *(काफिरों का देश)* को **दारुल इस्लाम** *(इस्लाम का देश)* में परिवर्तित करने को अपना महत्त्वपूर्ण लक्ष्य मानता था।
- ***औरंगजेब के शासन काल में मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे।***

मुगल शासन व्यवस्था

- बाबर के शासनकाल में **वजीर** पद काफी महत्त्वपूर्ण था।
- सम्राट् के बाद शासन के कार्यों को संचालित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी **वकील** था, जिसके कर्त्तव्यों को अकबर ने **दीवाना, मीरबख्शी, सद्र-उस-सद्र** एवं मीर समन में विभाजित कर दिया।
- लगानहीन भूमि *(मदद-ए-माश)* का निरीक्षण **सद्र** करता था।

मुगल काल में प्रमुख अधिकारी एवं कार्य

पद	कार्य
सूबेदार	प्रांतों में शान्ति स्थापित करना (प्रांत कार्यकारिणी का प्रधान)
दीवान	प्रांतीय राजस्व का प्रधान *(सीधे शाही दीवान के प्रति जवाबदेह)*
बख्शी	प्रांतीय सैन्य प्रधान
फौजदार	जिले का प्रधान फौजी अधिकारी
आमिल या अमलगुजार	जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी
कोतवाल	नगर प्रधान
शिकदार	परगने का प्रमुख अधिकारी
आमिल	ग्राम के कृषकों से प्रत्यक्ष संबंध बनाना एवं लगान निर्धारित करना

- सूचना एवं गुप्तचन विभाग का प्रधान **दरोगा-ए-डाक चौकी** कहलाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी, जिसे **मावदा** या **दीह** कहते थे। मावदा के अन्तर्गत छोटी-छोटी बस्तियों को **नागला** कहा जाता था।
- शाहजहां के शासनकाल में सरकार एवं परगना वे मध्य **चकला** नाम की एक नई इकाई की स्थापना की गयी थी।
- भूमिकर के विभाजन के आधार पर मुगल साम्राज्य की समस्त भूमि 3 वर्गों विभाजित थी–

1. **खालसा भूमि :** प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में।
2. **जागीर भूमि :** तनख्वाह के बदले दी जाने वाली भूमि।
3. **सयूरगल या मदद-ए-माश :** अनुदान में दी गई लगानहीन भूमि। इसे **मिल्क** भी कहा जाता था

- शेरशाह द्वारा भूराजस्व हेतु अपनायी जानेवाली पद्धति **राई** का उपयोग अकबर ने भी किया था।
- 1580 ई. में अकबर ने **दहसाला** नाम की नवीन कर प्रणाली प्रारंभ की। इस व्यवस्था को 'टोडरमल बन्दोबस्त' भी कहा जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि को चार भागों में विभाजित किया गया–

1. **पोलज :** इसमें नियमित रूप से खेती होती थी। *(वर्ष में दो बार फसल)*
2. **परती :** इस भूमि पर एक या दो वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।
3. **चाचर :** इस पर तीन से चार वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।
4. **बंजर :** यह खेती योग्य भूमि नहीं थी। इस पर लगान नहीं वसुला जाता था।

- 1570-71 ई. में टोडरमल ने खालसा भूमि पर भू-राजस्व की नवीन प्रणाली **जब्ती** प्रारंभ की। इसमें कर निर्धारण की दो श्रेणी थी। एक को **तखशीस** एवं दूसरे को **तहसील** कहते थे।

examtrix Free Education Platform

- औरंगजेब ने अपने शासनकाल में **नस्क प्रणाली** को अपनाया और भू-राजस्व की राशि को उपज का आधार कर दिया।
- मुगल काल में रुपये की सर्वाधिक ढलाई **औरंगजेब** के समय में हुई।
- **आना सिक्के** का प्रचलन **शाहजहां** ने करवाया।
- जहांगीर ने अपने समय में सिक्कों पर अपनी आकृति बनवाई। साथ ही उस पर अपना एवं नूरजहां का नाम अंकित करवाया।
- मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार **चांदी** का रुपया था।
- मुगल सेना चार भागों में विभक्त थी।
- मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था पूर्णत: **मनसबदारी** प्रथा पर आधारित थी। इसे अकबर ने प्रारंभ किया था।
- जात से व्यक्ति के **वेतन** एवं **प्रतिष्ठा** का ज्ञान होता था। **सवार पद** से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था।

भक्ति आंदोलन

- शंकराचार्य ने 9वीं शताब्दी में अद्वैतवाद की स्थापना की।
- रामानुज ने 12वीं शताब्दी में विशिष्टाद्वैत की स्थापना की।
- निम्बार्काचार्य–भेदाभेद (बारहवीं शताब्दी)
- माधवाचार्य–द्वैतवाद (बारहवीं शताब्दी)
- रामानन्द–रामभक्ति को प्राथमिकता
- नामदेव–15वीं शताब्दी
- वल्लभाचार्य–शुद्ध अद्वैतवाद (पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी)
- तुकाराम–बरकरी पंथ सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में
- दादू–दादू पंथ
- तुलसीदास–राम भक्ति (16वीं-17वीं शताब्दी)
- कबीर–कबीर पंथ
- रामानंद, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु, ज्ञानेश्वर, नामदेव, रामदास आदि इस काल के अन्य प्रमुख हिन्दू धर्म सुधारक थे।

सूफी आन्दोलन

- निजामुद्दीन औलिया बाबा फरीद के शिष्य थे।
- महबूब-ए-इलाही निजामुद्दीन औलिया को कहा जाता था।
- अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।
- निजामुद्दीन औलिया की दरगाह ग्यासपुर (दिल्ली) में है।
- गयासुद्दीन तुगलक को निजामुद्दीन औलिया ने कहा था "अभी दिल्ली दूर है।"
- चिश्ती शाखा के सबसे महान सूफी संत शेख सलीम चिश्ती हुए।
- चिश्ती पंथ के लोग संगीत, योग और अद्वैतवाद के सिद्धान्त में विश्वास करते थे।
- भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के प्रवर्तक बहाउद्दीन जकारिया हुए।
- सुहरावर्दी संतों का सिद्धान्त था "यदि हृदय निर्मल है तो धन के संचय और वितरण तथा आरामदेह जीवन बिताने में कोई दोष नहीं है।"
- कादिरी सिलसिला की स्थापना शेख अब्दुल कादिर ने की।
- दारा शिकोह कादिरी सिलसिला से सम्बन्धित था।
- 'मजमा-उल-बहरैन' दारा शिकोह ने लिखा था।
- दारा शिकोह द्वारा किये गये सभी उपनिषदों का फारसी अनुवाद 'सिर-ए-अकबर' नाम से हुआ।

examtrix Free Education Platform

- भारत में नक्शबन्दी सिलसिला के प्रवर्तक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।
- अहमद फारुख सरहिन्दी ख्वाजा बाकी बिल्लाह के शिष्य थे।
- शेख अहमद सरहिन्दी ने **बहादत-उश-शुहूद** सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- अकबर द्वारा प्रतिपादित **दी-ए-इलाही** धर्म का खण्डन शेख अहमद सरहिन्दी ने किया।

मुगलकालीन निर्माण कार्य

क्र.	निर्माण	स्थान	निर्माणकर्ता
1.	काबुली बाग	पानीपत	बाबर
2.	जामी मस्जिद	संभल (रुहेलखंड)	बाबर
3.	आगरे की मस्जिद	आगरा	हुमायूं
4.	दीनपनाह नगर	दिल्ली	हुमायूं
5.	पुराना किला	दिल्ली	शेरशाह सूरी
6.	किला-ए-कुहना	दिल्ली	शेरशाह सूरी
7.	रोहतास का किला	रोहतास	शेरशाह सूरी
8.	शेरशाह का मकबरा	सासाराम	शेरशाह सूरी
9.	हुमायूं का मकबरा	दिल्ली	हाजी बेगम
10.	आगरे का किला	आगरा	अकबर
11.	जहांगीरी महल	आगरा	अकबर
12.	फतेहपुर सीकरी महल	फतेहपुर सीकरी	अकबर
13.	जोधाबाई का महल	फतेहपुर सीकरी	अकबर
14.	मरियम की कोठी	फतेहपुर सीकरी	अकबर
15.	बीरबल का महल	फतेहपुर सीकरी	अकबर
16.	पंचमहल	फतेहपुर सीकरी	अकबर
17.	तुर्की सुल्तान की कोठी	फतेहपुर सीकरी	अकबर
18.	खास महल	फतेहपुर सीकरी	अकबर
19.	जामा मस्जिद	फतेहपुर सीकरी	अकबर
20.	बुलंद दरवाजा	फतेहपुर सीकरी	अकबर
21.	सलीम चिश्ती का मकबरा	फतेहपुर सीकरी	अकबर
22.	इस्लाम शाह का मकबरा	फतेहपुर सीकरी	अकबर
23.	लाहौर का किला	लाहौर	अकबर
24.	इलाहाबाद का किला	इलाहाबाद	अकबर
25.	अकबर का मकबरा	सिकंदरा	जहांगीर
26.	एतमातुद्दौला का मकबरा	आगरा	नूरजहां
27.	जहांगीर का मकबरा	शाहदरा (लाहौर)	नूरजहां
28.	आगरा महल	आगरा	शाहजहां
29.	शीशमहल	आगरा	शाहजाहं
30.	खास महल	आगरा	शाहजहां
31.	मुसम्मन बुर्ज	आगरा	शाहजहां
32.	नगीना मस्जिद	आगरा	शाहजहां

examtrix Free Education Platform

33. मोती मस्जिद	आगरा	शाहजहां
34. जामा मस्जिद	आगरा	शाहजहां
35. ताजमहल	आगरा	शाहजहां
36. शाहजहांनाबाद	दिल्ली	शाहजहां
37. लाल किला	दिल्ली	शाहजहां
38. दीवान-ए-आम	दिल्ली	शाहजहां
39. दीवान-ए-खास	दिल्ली	शाहजहां
40. रंगमहल	दिल्ली	शाहजहां
41. जामा मस्जिद	दिल्ली	शाहजहां
42. बादशाही मस्जिद	लाहौर	औरंगजेब
43. बीबी का मकबरा	औरंगाबाद	औरंगजेब

भारत में विदेशी राज्य की स्थापना

पुर्तगाली

भारत का यूरोपियों से व्यापारिक संबंध बहुत पुराना है। भारत के साथ व्यापार के लिए नये रास्ते की खोज का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है। सन् 1497 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्को डि गामा** ने अपनी यात्रा लिस्बन से प्रारंभ की तथा 'केप ऑफ गुड होप' होते हुए भारत के कालिकट तट पर 1498 ई. में समाप्त की।

अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। पुर्तगालियों ने दमन, सलसेट, चोल, बम्बई, मद्रास के निकट सेंट टोमे (मैलपुर) तथा बंगाल में हुगली में अपने केन्द्र स्थापित किये। 1510 ई. में उसने गोवा पर अधिकार कर लिया। सत्रहवीं सदी में इनकी शक्ति क्षीण होने लगी जब हॉलैंड और इंग्लैंड ने उनके उपनिवेश हथिया लिये। अंत में उनके उपनिवेशों में सिर्फ गोवा, दमन, दीव ही बच गये जो 1961 ई. में स्वतंत्र हुए।

डच

नीदरलैंड (हॉलैंड) के निवासी डच कहलाते हैं। 1596 ई. में **कारनीलेस द हस्तमैन** केप ऑफ गुड होप होते हुए सुमात्रा तथा बनटम पहुंचने वाला पहला डच नागरिक था। इससे डचवासियों को आगे के प्रयासों के लिए प्रोत्साहन मिला। इसके बाद कुछ सालों में ही भारतीय व्यापार के लिए नई कम्पनियों का गठन हुआ। 20 मार्च, 1602 को इन सभी का प्रादुर्भाव हुआ। कम्पनी को युद्ध संधि, प्रदेश पर अधिकार तथा किलेबंदी का अधिकार प्रदान किया गया। 1605 ई. में डचों ने अम्बायना तथा 1619 ई. तक मसाला द्वीपों पर अधिकार कर लिया। उन्होंने भारत के साथ व्यापार शुरू किया तथा इस क्रम में कोरोमण्डल तट, बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात तथा बंगाल में कारखाने स्थापित किए। उनके प्रमुख कारखाने पुलीकट (1610 ई.), सूरत (1616 ई.), बिमलिपटम (1641 ई.), चिनसुरा (1653 ई.), बारानगौर, कासिमबाजार, बालासोर, पटना, नागपट्टनम (1658 ई.) तथा कोचीन (1663 ई.) में थे। जब डच अपना ध्यान मलय द्वीपसमूह पर केन्द्रित कर रहे थे, उस समय अंग्रेज अपना ध्यान भारत पर केन्द्रित कर रहे थे। हुगली के निकट अंग्रेजों के हाथों पराजय (1759 ई.), भारत में डच आधिपत्य के पतन का कारण बनी।

फ्रांसीसी

भारत में सबसे अंत में फ्रांसीसियों का आगमन हुआ। 1664 ई. में लुई चौदहवें के मन्त्री **कोल्बर्ट** के प्रयास से फ्रेंच ईस्ट कम्पनी की स्थापना हुई। कम्पनी ने व्यापार प्रारंभ किया तथा हिन्द महासागर में बॉरबोन और मॉरीशस नामक दो द्वीपों पर अधिकार कर लिया। 1667 ई. में **फ्रैंकोस कैरों** ने नेतृत्व में पहला फ्रांसीसी प्रयास हुआ तथा उसने सूरत में अपनी फैक्टरी स्थापित की। 1669 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान की मंजूरी से **मरकारा** ने दूसरा कारखाना मसुलिपट्टम में स्थापित किया। 1690 ई. में बंगाल में फ्रांसीसियों ने प्रसिद्ध चन्दरनगर में अपनी बस्ती स्थापित की। 1740 ई. में डुप्ले के आने के बाद फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा शुरू हुई, जो भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने की थी लेकिन अर्काक के घेरे पर वांडीवास के युद्ध में उसे क्लाइव के कारण पराजय देखनी पड़ी। 1760 ई. में फ्रांस की शक्ति भारत में क्षीण हो गयी। 1956 ई. में फ्रांस ने पांडिचेरी, नगर हवेली, माही आदि पर अपना अधिकार छोड़ दिया जिसका अन्ततः भारत में विलय हो गया।

examtrix Free Education Platform

अंग्रेज

स्पेनी जलसेना पर विजय तथा अपार भारतीय धन के विवरण ने अंग्रेजों को भारत से व्यापारिक संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। 31 दिसम्बर, 1600 ई. को इस संबंध में एक मुख्य कदम के रूप में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने एक चार्टर द्वारा **'द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टु द ईस्ट इंडिज्'** का गठन किया तथा इसे 15 सालों के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया। इंग्लैण्ड निवासियों की ईस्ट इंडिया कम्पनी 1600 ई. में भारत आई जो कालान्तर में भारत पर ब्रिटिश शासन का जरिया बनी।

भारत में विदेशी कंपनी - शासन की स्थापना

प्रमुख यूरोपीय कम्पनियां	स्थापना वर्ष
• पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	1498 ई.
• अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी	1600 ई.
• डच ईस्ट इंडिया कंपनी	1602 ई.
• डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1616 ई.
• फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी	1664 ई.
• स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1731 ई.

- 1498 ई. में पुर्तगाल के वास्को डी गामा ने यूरोप से भारत तक का एक नया और पूरी तरह से समुद्री मार्ग ढूंढ़ निकाला। वह केप ऑफ गुड होप (आशा अंतरीप) होते हुए अफ्रीका का पूरा चक्कर लगाकर कालीकट पहुंचा।
- भारत में भी पुर्तगाल ने कोचीन, गोवा, दमन और दीव में अपने व्यापारिक केन्द्र खोले। पुर्तगालियों ने आरंभ से ही व्यापार के साथ शक्ति का भी प्रयोग किया।
- 1602 ई. में डच संयुक्त कम्पनी की स्थापना हुई। उन्होंने पश्चिम भारत में गुजरात के सूरत, भड़ौच, कैंबे और अहमदाबाद, केरल के कोचीन, मद्रास के नागपत्तनम, आंध्र के मसोलीपट्टम, बंगाल के चिन्सुरा, बिहार के पटना और उत्तर प्रदेश के आगरा नगरों में भी व्यापारिक केन्द्र खोले। 1658 ई में उन्होंने पुर्तगालियों से श्रीलंका को भी जीत लिया।
- 1599 ई में मर्चेंट एडवेंचरर्स नाम से पहचाने जाने वाले कुछ व्यापारियों ने पूर्व से व्यापार करने के लिए एक कंपनी बनाई। इस कंपनी को ईस्ट इंडिया कंपनी का नाम दिया गया। 1608 ई. में इस कंपनी ने भारत के पश्चिमी तट पर सूरत में एक फैक्ट्री खोलने का निश्चय किया। कंपनी ने तब कैप्टन हॉकिन्स को जहांगीर के दरबार में शाही आज्ञा लेने के लिए भेजा। परिणामस्वरूप एक शाही फरमान के द्वारा परिश्चमी तट की अनेक जगहों पर अंग्रेज कंपनी की फैक्ट्रियां खोलने की आज्ञा मिल गई। मगर इस छूट से अंग्रेज संतुष्ट नहीं थे। 1615 ई में उनका दूत, सर टॉमस रो मुगल दरबार में पहुंचा। रो मुगल साम्राज्य के सभी भागों में व्यापार करने और फैक्ट्रियां खोलने का अधिकार देने वाला एक शाही फरमान जारी करने में सफल रहा। जब सम्राट चार्ल्स द्वितीय ने एक पुर्तगाली राजकुमारी से शादी की तो पुर्तगालियों ने उसे बंबई का द्वीप दहेज में दे दिया। अंततः गोवा, दमन और दीव को छोड़कर पुर्तगालियों के हाथ से भारत में उनके कब्जे के सारे इलाके निकल गए।
- अंग्रेजों ने दक्षिण में अपनी पहली फैक्ट्री मसोलीपट्टम में 1611 ई में स्थापित की। पूर्वी भारत में अंग्रेजी कंपनी ने अपनी आरंभिक फैक्ट्रियों में से एक की स्थापना 1633 ई. में उड़ीसा में की थी। 1651 ई में उसे बंगाल के हुगली नगर में व्यापार की इजाजत मिल गई। तब कंपनी ने जल्द ही पटना, बालासोर, ढाका और बंगाल-बिहार के दूसरे स्थानों पर भी फैक्ट्रियां खोल लीं। अब उसकी इच्छा थी कि बंगाल में उसकी एक स्वतंत्र बस्ती होनी चाहिए। अब वह भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के सपने देख रही थी ताकि मुगलों को मजबूर करके व्यापार में मनमानी करने की छूट ले ली जाए।
- भारत में फ्रांसीसियों की पहली कोठी सूरत में 1668 ई. में स्थापित की गई। गोलकुण्डा रियासत के सुल्तान के अधिकार पत्र प्राप्त करने के बाद फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी की स्थापना 1669 ई. में मसोलीपट्टम में की।

examtrix Free Education Platform

मराठों का उत्कर्ष

- मराठा साम्राज्य का संस्थापक **शिवाजी** थे।
- शिवाजी का जन्म 6 अप्रैल, 1627 ई. में **शिवनेर दुर्ग** *(जुन्नार के समीप)* में हुआ था।
- शिवाजी के पिता का नाम **शाहजी भोंसले** एवं माता का नाम **जीजाबाई** था।
- शिवाजी के गुरु **कोंडदेव** थे।
- शिवाजी का विवाह **साइबाई निम्बालकर** से 1640 ई. में हुआ।
- अपने सैन्य अभियान के अन्तर्गत 1644 ई. में शिवाजी ने सर्वप्रथम बीजापुर के **तोरण** नामक पहाड़ी किले पर अधिकार किया।
- 1656 ई. में शिवाजी ने **रायगढ़** को अपनी राजधानी बनाया।
- शिवाजी ने **सूरत** को 1664 ई. एवं 1679 ई. में लूटा।
- **पुरन्दर की संधि** 1665 ई. में महाराजा जयसिंह एवं शिवाजी के मध्यम सम्पन्न हुई।
- शिवाजी को औरंगजेब ने **मई, 1666 ई.** में **जयपुर भवन** में कैद कर लिया, जहां से वे 16 अगस्त, 1666 ई. में भाग निकले।
- मात्र 53 वर्ष की आयु में 3 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।
- शिवाजी के मंत्रिमंडल को **अष्टप्रधान** कहा जाता था। अष्टप्रधान में पेशवा का पद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सम्मान का होता था।
- शिवाजी ने दरबार में **मराठी** को भाषा के रूप में प्रयोग किया।
- शिवाजी की सेना तीन महत्त्वपूर्ण भागों में विभक्त थी–
  1. **पागा सेना :** नियमित घुड़सवार सैनिक।
  2. **सिलहदार :** अस्थायी घुड़सवार सैनिक।
  3. **पैदल :** पैदल सेना।
- **चौथ** एवं **सरदेशमुखी** नामक कर शिवाजी के द्वारा लगाया गया। **चौथ**–किसी एक क्षेत्र को बरबाद न करने के बदले दी जाने वाली रकम को चौथ कहा गया है। **सरदेशमुखी**–इसके हक का दावा करके शिवाजी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ देशमुख प्रस्तुत करना चाहते थे।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शिवाजी का उत्तराधिकारी शम्भाजी था। शम्भाजी ने उज्जैन के हिन्दी एवं संसकृत के प्रकाण्ड विद्वान **कवि कलश** को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- मार्च, 1689 ई. को मुगल सेनापति **मखर्रव खां** ने संगमेश्वर में छिपे हुए शम्भाजी एवं कवि कलश को गिरफ्तार कर लिया और उसकी हत्या कर दी।
- शम्भाजी के बाद 1689 ई. में **राजाराम** को नए छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किया गया।
- राजाराम मुगलों से संघर्ष करता हुआ 1700 ई. में मारा गया।
- राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी **ताराबाई** अपने 4 वर्षीय पुत्र **शिवाजी**-II का राज्याभिषेक करवाकर **मराठा साम्राज्य** की वास्तविक संरक्षिका बन गई।
- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद शम्भाजी के पुत्र साहू (जो औरंगजेब के कब्जे में था) भोपाल के निकट के मुगल शिविर से वापस महाराष्ट्र आया।
- साहू एवं ताराबाई के बीच 1707 ई. में **खेड़ा का युद्ध** हुआ, जिसमें साहू विजयी हुआ।
- साहू ने 22 जनवरी, 1708 ई. को **सतारा** में अपना राज्याभिषेक करवाया।
- 1713 ई. में साहू ने **बालाजी विश्वनाथ** को पेशवा बनाया। इनकी मृत्यु 1720 ई. में हुई। इसके बाद पेशवा बाजीराव प्रथम हुए।
- दिल्ली पर आक्रमण करने वाला प्रथम पेशवा **बाजीराव प्रथम** था, जिसने 29 मार्च, 1737 ई. को दिल्ली पर धावा

examtrix Free Education Platform

बोला था। उस समय मुगल बादशाह मुहम्मदशाह दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार हो गया था।

- 1740 ई. में बाजीराव प्रथम की मृत्यु हो गयी। बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद **बालाजी बाजीराव** 1740 ई. में पेशवा बना।
- बालाजी बाजीराव को **नाना साहब** के नाम से भी जाना जाता था।
- अंतिम पेशवा राघोवा का पुत्र **बाजीराव-II** था, जो अंग्रेजों की सहायता से पेशवा बना था। मराठों के पतन में सर्वाधिक योगदान इसी का था। यह सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम मराठा सरदार था।
- **प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध** 1775-82 ई. तक चला। इसके बाद 1776 ई. में पुरन्दर की संधि हुई। इसके तहत कम्पनी ने रघुनाथ राव के समर्थन को वापस लिया।

आधुनिक भारत

- उत्तराधिकार युद्ध में **गुरु गोविन्द सिंह** ने **बहादुरशाह** का साथ दिया था।
- मुगलकालीन इतिहास में सैयद बन्धु **हुसैन अली खां** एवं **अब्दुल्ला खां** को शासक निर्माता के रूप में जाना जाता है।
- सुन्दर युवतियों के प्रति अत्यचिाक रुझान के कारण **मुहम्मदशाह** को **रंगीला बादशाह** कहा जाता था।
- ईरान *(फ़ारस)* के सम्राट **नादिरशाह** ने 1739 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली का शासक **मुहम्मदशाह** था। नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है।
- नादिरशाह लगभग 70 करोड़ रुपये की धनराशि और शाहजहां का बनवाया हुआ तख्ते ताऊस (Peacock throne) तथा कोहिनूर हीरा लेकर फ़ारस वापस लौटा।
- **तख्ते ताऊस** *(मयूर सिंहासन)* पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मुहम्मदशाह था।
- बहादुरशाह जफर अंतिम मुगल सम्राट् था।
- 1857 ई. को क्रांति में भाग लेने के कारण अंग्रेजों द्वारा बहादुरशाह जफ़र को बंदी बना लिया गया एवं रंगून भेज दिया।
- अहमदशाह अब्दाली का वास्तविक नाम **अहमद खां** था। इसने **आठ बार** भारत पर आक्रमण किया।

examtrix Free Education Platform

बंगाल पर अंग्रेजों का आधिपत्य

- मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत आनेवाले प्रांतों में बंगाल सर्वाधिक सम्पन्न राज्य था।
- प्लासी का युद्ध 23 जून, 1757 ई. को अंग्रेजों के सेनापति रॉबर्ट क्लाइव एवं बंगाल नवाब **सिराजुद्दौला** के बीच हुआ, जिसमें नवाब अपने सेनापति **मीरजाफर** की धोखाधड़ी करने के कारण पराजित हुआ। अंग्रेजों ने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया।
- क्लाइव के हाथों की कठपुतली नवाब मीरजाफर को अंग्रेजों ने 1760 ई. में हटाकर उसके दामाद **मीरकासिम** को बंगाल का नवाब बनाया।
- बक्सर का युद्ध 1764 ई. में अंग्रेजों एवं मीरकासिम, अवध के नवाब शुजाद्दौला एवं मुगल सम्राट् शाहआलम द्वितीय के बीच हुआ। इस युद्ध में भी अंग्रेज सेना विजयी हुई। इस युद्ध में अंग्रेज सेनापति हेक्टर मुनरो था।
- बक्सर के युद्ध के बाद एक बार फिर मीरकासिम की जगह मीरजाफर को नवाब बना दिया गया। 5 जनवरी, 1765 ई. में मीरजाफर की मृत्यु हो गयी।

अंग्रेजों के मैसूर से संबंध

- 1761 ई. में **हैदर अली** मैसूर का शासक बना।
- हैदरअली की मृत्यु 1782 ई. में द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान हो गयी।
- हैदरअली का उत्तराधिकारी उसका पुत्र **टीपू सुल्तान** हुआ।
- 1787 ई. में टीपू ने अपनी राजधानी श्री रंगपत्तनम में 'पादशाह' की उपाधि धारण की।

सिक्ख धर्म का उदय

- सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय **गुरु नानक** *(प्रथम गुरु)* को है। गुरु नानक के अनुयायी ही **सिक्ख** कहलाए।

ये बादशाह बाबर एवं हुमायूं के समकालीन थे।

- सन् 1496 ई. की कार्तिक पूर्णिमा को नानक को आध्यात्मिक पुनर्जीवन का आभास हुआ। गुरु नानक ने **गुरु का लंगर** नाम से नि:शुल्क सहभागी भोजनालय स्थापित किए।
- गुरु नानक ने अनेक स्थानों पर **संगत** *(धर्मशाला)* और **पंगत** *(लंगर)* स्थापित किए।
- गुरु नानक की सन् 1539 ई. में **करतारपुर** में मृत्यु हो गयी।
- **गुरुमुखी लिपि** का आरंभ गुरु अंगद ने किया।
- अकबर ने बीबी भानी को 500 बीघा भूमि दी। गुरु रामदास ने इसी भूमि पर अमृतसर नामक जलाशय खुदवाया और अमृतसर नगर की स्थापना की। गुरु रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन को गुरु का पद सौंपा। इस प्रकार इन्हें गुरु-पद को पैतृक बनाया।
- गुरु अर्जुन *(सन् 1581-1605 ई.)* सिक्खों के पांचवें गुरु हुए। इन्होंने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ **आदिग्रंथ** की रचना की। इसमें गुरु नानक की प्रेरणाप्रद प्रार्थनाएं और गीत संकलित हैं।
- गुरु अर्जुन ने अमृतसर जलाशय के मध्य में **हरमिन्दर साहब** का निर्माण कराया।
- राजकुमार खुसरो की सहायता करने के कारण **जहांगीर** ने 1606 ई. में **गुरु अर्जुन** को मरवा दिया।
- सिक्खों के नौवें गुरु तेगबहादुर *(1664-75 ई.)* हुए। इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने इन्हें वर्तमान **गुरुद्वारा शीशगंज** के निकट कत्ल करवा दिया।
- सिक्खों के दसवें एवं अंतिम गुरु, **गुरु गोविन्द सिंह** *(1675-1707)* हुए। इनका जन्म **1666 ई.** में **पटना** में हुआ था।
- **गुरु गोविन्द सिंह** अपने को **सच्चा बादशाह** कहा। इन्होंने सिक्खों के लिए **पांच 'ककार'** अनिवार्य किया अर्थात् प्रत्येक सिक्ख को **केश, कंघा, कृपाण, कच्छा** और **कड़ा** रखने की अनुमति दी और सभी लोगों को अपने नाम के अन्त में **'सिंह'** शब्द जोड़ने के लिए कहा।
- 1699 ई. में वैशाखी के दिन गुरु गोविन्द सिंह ने **खालसा पंथ** की स्थापना की।
- **पाहुल प्रणाली** की शुरुआत गुरु गोविन्द सिंह ने किया।
- गुरुगोविन्द सिंह ने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ **आदिग्रंथ** को वर्तमान रूप दिया और कहा कि अब 'गुरुवाणी' सिक्ख सम्प्रदाय के **गुरु** का कार्य करेगी।
- गुरुगोविन्द सिंह की हत्या 1708 ई. में **नांदेड़** नामक स्थान पर **गुल खां** नामक पठान ने कर दी।
- **रणजीत सिंह :** रणजीत सिंह का जन्म गुजरांवाला में में 2 नवम्बर, 1780 ई. को **सुकरचकिया मिसल** के मुखिया **महासिंह** के यहां हुआ था। इनके दादा **चरतसिंह** ने 12 मिसलों में **सुकरचकिया मिसल** को प्रमुख स्थान दिला दिया।
- 1798-99 ई. में रणजीत सिंह **लाहौर** का शासक बना। 25 अप्रैल, 1809 ई. को चार्ल्स मेटकाफ और महाराजा रणजीत सिंह के बीच **अमृतसर की संधि** हुई।
- रणजीत सिंह का राज्य चार सूबों में बंटा था–**पेशावर, कश्मीर, मुल्तान** एवं **लाहौर**।
- 7 जून, 1839 ई. को रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1845-46 ई. में एवं द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध 1849 ई. में हुआ।

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध महत्त्वपूर्ण विद्रोह

आन्दोलन/विद्रोह	प्रभावित क्षेत्र	समय
1. सन्यासी विद्रोह	बिहार, बंगाल	1760-1800 ई.
2. फकीर विद्रोह	बंगाल	1776-77 ई.
3. चुआरो विद्रोह	बाकुड़ा *(बंगाल)*	1798 ई.
4. भील विद्रोह	पश्चिमी घाट	1825-31 ई.
5. पागलपंथी विद्रोह	असम	1825-27 ई.
9. अहोम विद्रोह	असम	1828 ई.

examtrix Free Education Platform

6. वहावी आन्दोल	बिहार, उत्तर प्रदेश	1831 ई.
7. कोल आन्दोल	छोटानागपुर (झारखंड)	1831-32 ई.
8. खासी विद्रोह	असम	1833 ई.
9. नील विद्रोह	बंगाल, बिहार	1854-62 ई.
10. संथाल विद्रोह	बंगाल एवं बिहार	1855-56 ई.
11. मुंडा विद्रोह	बिहार	1899-1900 ई.
12. नील आन्दोलन	बंगाल	1859-60 ई.
13 मोपला विद्रोह	मालाबार *(केरल)*	1920-22 ई.
14. कूका आन्दोलन	पंजाब	1840-41 ई.
15. तानाभगत आन्दोलन	बिहार	1914 ई.
16. तेलंगाना आन्दोलन	आन्ध्र प्रदेश	1946 ई.

1857 का विद्रोह

स्थल	विद्रोही नेता/ संचालन	विद्रोह की तिथि
दिल्ली	बहादुरशाह जफर	11,12 मई 1857
कानपुर	नाना साहब+तात्या टोपे	5 जून 1857
झांसी, ग्वालियर	लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे	4 जून 1857
जगदीशपुर, बिहार	कुँवर सिंह, अमर सिंह	अगस्त 1857
इलाहाबाद	लियाकत अली	जून 1857
फैजाबाद	मौलवी बहादुर खाँ	जून 1857
बरेली	खान बहादुर खाँ	जून 1857
फतेहपुर	अजीमुल्ला	1857

examtrix Free Education Platform

भारत का स्वतंत्रता-संघर्ष : महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अंग्रेज विरोधी पहला संघर्ष संन्यासियों के द्वारा (1760 से 1800 तक) शुरू किया गया।
- संन्यासी-विद्रोह का उल्लेख बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में किया गया है।
- 1887 ई. में दादा भाई नरैरोजी ने इंगलैंड में **भारतीय सुधार समिति** की स्थापना की।
- **डफरिन** ने कहा, "कांग्रेस केवल सूक्ष्मदर्शी अल्पसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।"
- कर्जन ने कहा, "कांग्रेन अपने पतन की ओर लड़खड़ाती हुई जा रही है।"
- अरविन्द धोष के अनुसार कांग्रेस क्षयरोग से मरने ही वाली है।
- बंकिमचंद्र चटर्जी ने कहा "कांग्रेस के लोग पदों के भूखे राजनीतिज्ञ" हैं।
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स का चुनाव लड़ने वाले सर्वप्रथम भारतीय **दादाभाई नौरोजी** थे। इन्होंने लिबरल पार्टी के उम्मीदवार के रूप में फिंसवरी से, 1892 ई. में चुनाव जीता था। लॉर्ड कर्जन ने 20 जुलाई, 1905 ई. को बंगाल-विभाजन के निर्णय की घोषणा की।
- बंगाल विभाजन के विरोध में 7 अगस्त, 1905 ई. को कलकत्ता के टाऊन हॉल में स्वदेशी आन्दोलन की घोषणा की गयी। बंगाल-विभाजन 16 अक्टूबर, 1905 ई. को प्रभावी हुआ। इस दिन पूरे बंगाल में शोक दिवस मनाया गया। स्वदेशी आन्दोलन में **वन्दे मातरम्, विभाजन नहीं चाहिए** एवं **बंगाल एक है,** आदि नारे लगाए गए।
- 1906 ई. में कलकत्ता में हुए कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए दादाभाई नौराजी ने पहली बार स्वराज्य की मांग प्रस्तुत की
- स्वदेशी आन्दोल चलाने के तरीके को लेकर ही कांग्रेस 1907 ई. के सूरत अधिवेशन में उग्रवादी *(गरम दल)* एवं उदारवादी *(नरम दल)* नामक दो दलों में विभाजित हो गयी। इस सम्मेलन की अध्यक्षता रास बिहारी बोस ने की थी।

- स्वदेशी आन्दोलन के अवसर पर ही रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपना प्रसिद्ध गीत **आमार सोनार बंगला** लिखा। बाद में यहीं गीत बाङ्ला देश का राष्ट्रीय गीत बना।
- **बाल गंगाधर तिलक** पहले कांग्रेस नेता थे, जिन्होंने देश के लिए कई बार जेल की यात्रा की।
- बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा को **बरिन्द्र कुमार घोष** एवं **भूपेन्द्रनाथ दत्त** ने फैलाया। 1905में बरिन्द्र कुमार घोष ने **'भवानी मंदिर'** नाम की पुस्तिका लिखी: जिसमें क्रांतिकारी कार्यों को संगठित करने की जानकारी दी गई थी। 1906 ई. में इन दोनों ने मिलकर 'युंगातर' नामक समाचारपत्र का प्रकाशन किया।
- महाराष्ट्र में विनायक दामोदर सावरकर ने 1904 ई. में "अभिनव भारत" संस्था स्थापित की। अभिनव भारत संगठन के सदस्य **पी.एन. वापट बम** बनाने की कला सीखने के लिए पेरिस गए।
- महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन उभारने का श्रेय तिलक के पत्र **'केसरी'** को जाता है।
- तिलक ने **1893 ई. में गणपति एवं 1895 ई. में शिवाजी उत्सव** मनाना प्रारंभ किया। वेलेन्टाइल शिरॉले ने बाल गंगाधर तिलक को **भारतीय असन्तोष का जनक** कहा था।
- प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने 30 अप्रैल, 1908 ई. को मुजफ्फरपुर के जज किंग्ज़फोर्ड की हत्या का प्रयत्न किया। गलती से बम केनेडी की गाड़ी पर गिरा दिया गया जिससे दो महिलाओं की मृत्यु हो गयी। चाकी ने आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोस को 15 वर्ष की अवस्था में 1 अगस्त, 1908 ई. को फांसी दे दी गयी।
- 1905 ई. में लन्दन में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडियन होमरूल सोसायटी की स्थाना की।
- 30 दि., 1906 को ढांका के नवाब सलीम उल्ला खां के निमंत्रण पर सम्मेलन हुआ। नवाब वकारुल मुल्क इसके अध्यक्ष थे। इसी सम्मेलन में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का उदय हुआ। लीग का संविधान 1907 में करांची में बना और इस संविधान के अनुसार प्रथम अधिवेशन 1908 में अमृतसार में हुआ जहां आगा खां को इसका अध्यक्ष बना दिया गया।
- वायसराय लॉर्ड हार्डिंग ने 1911 ई. में दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन इंगलैंड के सम्राट् **जॉर्ज पंचम** एवं **मेरी** के स्वागत में किया। इस दरबार में निम्न घोषणाएं हुईं–

  (*i*) बंगाल-विभाजन को रद्द किया गया।

  (*ii*) बंगाली भाषी क्षेत्रों को मिलाकर अलग एक प्रांत बनाया गया।

  (*iii*) बिहार एक अलग राज्य बना, जिसमें उड़ीसा भी शामिल था।

  (*iv*) राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा हुई।
- 1912 ई. में दिल्ली, भारत की राजधानी बनी।
- 23 दिसम्बर, 1912 ई. को रासबिहारी बोस ने दिल्ली में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर बम, फेका। इसके परिणाम स्वरूप 13 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये इसमें प्रमुख थे–मास्टर अमीचन्द, दीनानाथ, अवधबिहारी लाल, बाल मुकुंद, बसंत कुमार विश्वास, हनुमंत सहाय एवं बलराज। दीनानाथ दबवा में आकर सरकारी गवाह बन गये और मास्टर अमीचन्द अबधबिहारी लाल, बाल मुकुंद एवं बसंत कुमार विश्वास को फांसी दे दी गयी।
- **1915 ई.** में अंग्रेज सरकार ने **कैसर-ए-हिन्द** की उपाधि से **महात्मा गांधी** को सम्मानित किया।
- कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन *(1916 ई.)* में कांग्रेस के दोनों दलों में एकता हो गयी इसी अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने भी कांग्रेस से मिलकर एक संयुक्त समिति की स्थापना की।
- बाल गंगाधन तिलक ने स्वशासन प्राप्ति हेतु मार्च, 1916 ई. को पुना में होमरूल लीग की स्थापना की।
- ऐसी बेसेन्ट ने सितम्बर, 1916 ई. में मद्रास में होमरुल लीग की स्थापना की। जार्ज अरुण्डेल को लीग का सचिव बनाया।
- गांधीजी ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय लोगों को सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया। इसलिए लोगों ने इन्हें **भर्ती कराने वाला सार्जेन्ट** कहने लगे।
- **1916 ई.** में गांधीजी ने अहमदाबाद के निकट साबरमती आश्रम की स्थापना की।
- बिहार के एक किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण आने को प्रेरित किया।

examtrix Free Education Platform

- **गांधीजी ने 'सत्याग्रह' का सर्वप्रथम प्रयोग द. अफ्रीका में किया। भारत में 'सत्याग्रह' का पहला प्रयोग 1917 ई. में (चम्पारण) *(बिहार)* में किया गया।**
- चम्पारण विद्रोह के कारण अंग्रेजों को **तीनकठिया प्रथा** को समाप्त करना पड़ा।
- महात्मा गांधी ने **पहली बार भूख हड़ताल** अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल *(1918 ई.)* के समर्थन में की थी।
- **19 मार्च, 1919 ई. को रौलट ऐक्ट** लागू किया गया। इसके अनुसार किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए गिरफ्तार किया जा सकता था, परन्तु उसके विरूद्ध **'न कोई अपील, न कोई दलील और न कोई वकील'** किया जा सकता था।
- गांधी ने इस कानून के विरुद्ध 6 अप्रैल, 1919 ई. को देशव्यापी हड़ताल करवायी।
- **13 अप्रैल, 1919 ई. को अमृतसर में जलियांवाला बाग हत्याकांड** हुआ। डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में हो रही जनसभा पर जनरल डायर ने अंआधुंध गोली चलवायी। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार इसमें 379 व्यक्ति एवं कांग्रेस समिति के अनुसार लगभग 1000 व्यक्ति मारे गए।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड में हंसराज नामक भारतीय ने डायर का सहयोग किया था।
- जालियांवाला बाग हत्या कांड के विरोध में महात्मा गांधी ने **'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि,** जमनालाल बजाज ने **'राय बहादुर' की उपाधि एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 'सर' की उपाधि** वापस लौटा दी।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए सरकार ने 19 अक्टूबर, 1919 ई. में **लार्ड हंटर** की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया। इसमें पांच अंग्रेज एवं तीन भारतीय (सर चिमन लाल सीतलवाड, साहबजादा सुल्तान अहमद एवं जगत नारायण) सदस्य थे।
- कांग्रेस ने जालियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक आयोग नियुक्त किया। इसके अन्य सदस्यों में मोलीलाल नेहरू और गांधीजी थे।
- खिलाफत आंदोलन भारतीय मुसलमानों का मित्र राष्ट्रों के विरूद्ध विशेषकर ब्रिटेन के खिलाफ टर्की के खलीफा के समर्थन में आंदोलन था।
- 19 अक्टूबर, 1919 ई. को समूचे देश में **'खिलाफत दिवस'** मनाया गया।
- 23 नवम्बर, 1919 ई. को हिन्दू और मुसलमानों की एक संयुक्त कांफ्रेंस हुई, जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की।
- **रॉलेट ऐक्ट, जलियांवाला बाग कांड** और **खिलाफत आंदोलन के प्रतिरोध** में गांधी जी ने 1 अगस्त, 1920 को **असहयोग आंदोलन** प्रारंभ किया। असहयोग आन्दोलन की पुष्टि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने दिसम्बर, 1920 ई. के नागापुर अधिवेशन में की।
- **मुहम्मद अली जिन्ना, ऐनी बेसेंट** तथा **विपिन चन्द्रपाल** कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन से सहमत नहीं थे, अत: उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी।
- **5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा** नामक स्थान पर असहयोग आन्दोलनकारियों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी, जिससे एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से दुखित होकर गांधीजी ने **11 फरवरी, 1922 ई.** को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया।
- 13 मार्च, 1922 ई. को गांधीजी को गिरफ्तार कर 6 वर्ष की कड़ी कारावास की सजा सुनाई गयी। स्वास्थ्य संबंध ी कारणों से गांधी को 5 फरवरी, 1924 ई. को रिहा कर दिया गया।
- 1923 ई. में इलाहाबाद में चितरंजनदास एवं मोतीलाल नेहरू के कांग्रेस के अंतर्गत स्वराज्य पार्टी की स्थापना की।
- **महात्मा गांधी सिर्फ एक बार कांग्रेस के बेलगांव** अधिवेशन (1924) में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।
- शचीन्द्र सान्याल ने 1924 ई. में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन' की स्थापना की। भगत सिंह ने 1928 ई. को इसका नाम बदल कर **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन'** रख दिया।
- 9 अगस्त, 1925 ई. को जब रेलगाड़ी से सरकारी खजाना सहारनपुर से लखनऊ की ओर जा रहा था, तो इसे **काकोरी स्टेशन पर** लूट लिया गया, इसे ही काकोरी कांड कहा गया। सरकारी खज़ाना लूटने का विचार राम प्रसाद बिस्मल का था। इसमें राम प्रसाद बिस्मल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह एवं अशफाकउल्ला खां को दिसम्बर, 1927 ई. में

Examtrix Free Education Platform

फांसी दे दी गई एवं शचीन्द्र सान्याल को आजीवन कारावास की सजा मिली। मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष की कैद हुई। राम प्रसाद बिस्मिल यह कहते हुए कि "मैं राज्य के पतन की इच्छा करता हूं" फांसी पर लटक गए।

- संभवत: अशफाकउल्ला खां पहले भारतीय क्रांतिकारी मुसलमान थे, जो देश की स्वतंत्रता के लिए फांसी के तख्ते पर लटके थे।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी, 1928 ई. को भारत आया। इसे **ह्वाइट मैन कमीशन** भी कहते है।
- 30 अक्टूबर, 1928 ई. को लाहौर में साइमन आयोग के विरुद्ध प्रदर्शन करते समय पुलिस की लाठी से लाला लाजपत राय घायल हो गए और बाद में उनकी मृत्यु हो गयी।
- भगत सिंह के नेतृत्व में पंजाब के क्रांतिकारियों ने 17 दिसम्बर,, 1928 ई. को लाहौर के तत्कालीन सहायक पुलिस कप्तान सॉण्डर्स को गोली मार दी।
- **'पब्लिक सेफ्टी बिल'** पास होने के विरोध में 8 अप्रैल, 1929 ई. को **कटुकेश्वर दत्त एवं भगत सिंह ने दिल्ली में सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली** में खाली बेंचों पर बम फेका।
- 1929 ई. के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने **'पूर्ण स्वराज'** का अपना लक्ष्य घोषित किया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू ने रावी नदी के तट पर नव ग्रहीत तिरंगे झण्डे को फहराया। इसी अधिवेशन में **26 जनवरी, 1930 ई. को 'प्रथम स्वाधीनता दिवस'** के रूप में मनाने का निश्च किया गया। इसी के साथ प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाए जाने की परम्परा शुरू हुई।
- **12 मार्च, 1930 ई. को गांधीजी ने अपने 79 समर्थकों के साथ साबरमती दाण्डी में आश्रम** से लगभग 322 किमी. दूर गांधीजी ने नमक कानून तोड़ा।
- सुभाष चन्द्र बोस ने गांधीजी के नमक सत्याग्रह की तुलना नेपोलियन के एल्बा से पेरिस यात्रा से की थी।
- 8 मार्च, 1931 ई. को **गांधी-इरविन पैक्ट** हुआ, इसके बाद गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया। गांधी इरविन समझौता को दिल्ली समझौता के नाम से भी जाना जाता है।
- दूसरा गोलमे सम्मेलन 7 सितम्बर, 1931 को हुआ। महात्मा गांधी ने कांग्रेस के तीसरा प्रतिनिधि के रूप में इसमें भाग लिया; परन्तु यह सम्मेलन साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के कारण असफल रहा।
- तीनों गोलमेज सम्मेलन के समय इंगलैंड का प्रधानमंत्री **जेम्स रेम्जे मैकाडोनाल्ड** था।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने लंदन में हुई तीनों गोलमेज सभाओं में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद गांधी ने 3 जनवरी, 1932 ई. पुन: सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन अंतिम रूप से 7 अप्रैल, 1934 की वापस लिया गया।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन में पठान सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से **गढ़वाल राइफल्स** ने इन्कार कर दिया।
- 23 मार्च, 1931 ई. को सुखदेव, भगत सिंह एवं राजगुरु को फांसी पर लटका दिया गया।
- मई, 1934 ई. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।
- 1939 ई. में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित प्रत्याशी **पट्टाभि सीतारमैय्या** को हराकर सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।
- 1 मई, 1939 ई. को सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के भीतर ही एक नए गुट का गठन किया, जिसे **फारवर्ड ब्लाक** *(Forward Block) कहा गया। सुभाष चन्द्र बोस ने स्वंत्रता संघर्ष के दौरान फ्री इण्डियन लीजन नामक सेना बनायी थी।*
- गांधी जी ने 17 अक्टूबर, 1940 ई. को **पावनार** में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन के प्रथम **सत्याग्रही बिनोबाभावे**, **दूसरे सत्याग्रही जवाहर लाल नेहरू** एवं तीसरे **सत्याग्रही ब्रह्मदत्त** थे। इस आन्दोलन को 'दिल्ली चलो' आन्दोलन भी कहा गया।
- 24 मार्च, 1940 ई. को मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में अध्यक्षता करते हुए मुहम्मद अली जिन्ना ने भारत से अलग मुस्लिम राष्ट्र **पाकिस्तान** की मांग की। मुस्लिम लीग के 1940 ई. के दिल्ली अधिवेशन *(अध्यक्ष अल्लाबक्स)* में खलीकुज्जमान ने पाकिस्तान नाम से अलग राष्ट्र का प्रस्ताव रखा।
- वर्धा *(1942 ई.)* में कांग्रेस ने **'अंग्रेजो भारत छोड़ों'** प्रस्ताव पारित किया।

examtrix Free Education Platform

- 7 अगस्त, 1942 ई. को कांग्रेस की बैठक बम्बई के ऐतिहासिक **ग्वलिया टैंक** में हुई।
- गांधी के भारत छोड़ो प्रस्ताव को कांग्रेस कार्य समिति ने 8 अगस्त, 1942 ई. को स्वीकार कर लिया। **भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरुआत 9 अगस्त, 1942 ई.** को हुई। इसी आन्दोलन में गांधीजी ने **'करो या मरो'** का नारा दिया।
- 9 अगस्त, 1942 ई. को सवेरे ही गांधीजी एवं कांग्रेस के अन्य सभी महत्त्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए। गांधीजी को पूना के आगा खां महल में तथा कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को अहमदनगर के दुर्ग में रखा गया था। राजेन्द्र प्रसाद को भी नजरबंद कर दिया गया था। 9 मई, 1944 ई. को गांधी जी को जेल से छोड़ा गया।
- **आज़ाद हिन्द फौज** की स्थापना का विचार सर्वप्रथम **कैप्टन मोहन सिंह** के मन में आया।
- आज़ाद हिन्द फौज का सफलतापूर्वक स्थापना का श्रेय **रास बिहारी बोस** को दिया जाता है।
- अक्टूबर, 1943 ई. में सुभाष चन्द्र बोस को **आजाद हिन्द फौज** का सर्वोच्च सेनापति बनाया गया था। आज़ाद हिन्द फौज के तीन ब्रिगेडों के नाम **सुभाष ब्रिगेड, गांधी ब्रिगेड एवं नेहरू ब्रिगेड एवं महिलाओं** के **ब्रिगेड का नाम 'लक्ष्मीबाई रेजीमेंट'** था। आज़ाद हिन्द फौज का झंडा कांग्रेस के तिरंगे झंडे की भांति था, जिस पर **दहाड़ते हुए शेर का चिह्न** था।
- 8 नवम्बर, 1943 ई. को जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दिए। नेता जी ने इनका नाम क्रमशः **'शहीद द्वीप'** और **'स्वराज द्वीप'** रखा। *सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई. को कटक (तत्कालीन बंगाल -उड़ीसा) में हुआ था।*
- टोकियो जाते हुए फार्मूसा द्वीप के बाद अचानक हवाई जहाज में आग लग जाने से सुभाष चन्द्र बोस 18 अगस्त, 1945 ई. को मारे गए, परन्तु इस दुर्घटना को अभी तक प्रमाणिक नहीं माना गया है।
- कैबिनेट मिशन योजना को मुस्लिम लीग ने 6 जून, 1946 ई. को और कांग्रेस ने 25 जून, 1946 ई. को स्वीकार कर लिया।
- कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार किए जाने के पश्चात् संविधान सभा के निर्माण के लिए हुए चुनाव *(जुलाई 1946 ई.)* में कांग्रेस ने 214 सामान्य स्थानों में से 205 स्थान प्राप्त किए और मुस्लिम लीग ने 78 मुस्लिक स्थानों में से 73 स्थान प्राप्त किए। कांग्रेस को 4 सिक्ख सदस्यों का भी समर्थन प्राप्त था।
- **27 मार्च, 1947 ई. को मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान दिवस के रूप में मनाया।**
- स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय कांग्रेस के अध्यक्ष जे.बी. कृपलानी एवं **ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री क्लीमेन्ट एटली** *(लेबर पार्टी)* थे।
- महात्मा गांधी द्वारा स्थापित **हरिजन सेवक संघ** के संस्थापक अध्यक्ष **घनश्याम दास बिड़ला** थे।
- **गांधीजी ने कांग्रेस की सदस्यता से दो बार त्यागपत्र दिया-1925 में और 1930 ई. में।**
- **''मैं देश की बालू से ही कांग्रेस से भी बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दूंगा''**–महात्मा गांधी ने कहा।
- 'बांटो और छोड़ो' का नारा लीग ने दिसम्बर 1943 ई. के करांची अधिवेशन में दिया।
- दीनबंधु मित्र का नाटक **'नील दर्पण'** में नील की खेती करनेवाले पर हुए अत्याचार का उल्लेख है।
- राष्ट्रवादी अहरार आंदोलन **मजहर-उल-हक** ने प्रारंभ किया।
- आत्मसम्मान आंदोलन की शुरुआत **रामस्वामी नायकर** ने की।
- ब्रह्मसमाज का प्रतिज्ञापत्र **देवेन्द्रनाथ ठाकुर** ने तैयार किया।
- **'भारत, भारतीयों के लिए'** का नारा **आर्यसमाज** ने दिया।
- अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना **लखनऊ 1936 ई.** में हुई।
- स्वामी विवेकानन्द ने 1893 ई. में शिकागो में विश्व धर्मसम्मेलन को संबोधित किया।
- अलीपुर केस में सरकारी गवाह **नरेन्द्र गोसाई** बन गया था।
- सबसे कम उम्र में फांसी की सजा पानेवाला क्रान्तिकारी **खुदीराम बोस** था।

नारा / उक्तियां एवं उपाधियां

- **'इन्कलाब जिन्दाबाद'** का नारा **भगत सिंह** ने दिया।

examtrix Free Education Platform

- **शहीद-ए-आजम** के नाम से **भगत सिंह** को जाना जाता है।
- सबके लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर का नारा श्री **नारायण गुरु** ने दिया।
- सवर्ण हिन्दुओं की फांसीवादी कांग्रेस कहकर कांग्रेस का चरित्र-चित्रण **मोहम्मद अली जिन्ना** ने किया।
- महात्मा गांधी को रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम **'महात्मा'** कहा।
- बल्लभ भाई पटेल को **'सरदार की उपाधि'** बारदोली सत्याग्रह की सफलता के बाद वहां के महिलाओं की ओर से **गांधी जी** ने प्रदान की।
- सुभाष चन्द्र बोस की सर्वप्रथम **'नेताजी'** एडोल्फ **हिटलर** ने कहा था।
- गोखले के आध्यात्मिक गुरु **गोपाल कृष्ण गोखले** थे।
- सुभाष चन्द्र बोस के राजनीतिक गुरु **देशबन्धु चित्तरंजन दास** थे।
- भारत का बिस्मार्क **सरदार बल्लभ भाई पटेल** को कहा जाता है।
- शुद्धि आंदोलन के प्रवर्त्तक **स्वामी दयानन्द सरस्वती** थे।
- 19वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का पिता राजा राममोहन राय को कहा जाता है।
- **अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना महात्मा गांधी** ने की थी।
- **चर्चिल ने** महात्मा गांधी को **अर्धनग्न फकीर** कहा था।
- कांग्रेस ने मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में **भारत छोड़ो प्रस्ताव** को पारित किया।
- **भारत के पितामह** *(ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया)* **दादाभाई नौरोजी** को कहा जाता है।
- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष **बदरुद्दीन तैयबजी** थे।
- **रौलेट एक्ट को बिना अपील, बिना वकील तथा बिना दलील का कानून कहा गया।**
- मुहम्मद अली एवं शौकतअली ने 1920 ई. में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाले भारतीय नेता थे–डॉ. **भीमराव अम्बेडकर**।
- 22 दिसम्बर 1939 ई. को कांग्रेस मंत्रिमंडल ने सामूहिक रूप से त्यागपत्र दिया। इन दिन को मुस्लिम लीग ने **'मुक्ति दिवस'** के रूप में मनाया।
- **पाकिस्तान** शब्द के जन्मदाता **चौधरी रहमत अली** थे।
- इण्डिपेण्डस फोर इंडिया लीग की स्थापना जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने की थी।
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान आन्दोलनकारियों को **'काला पानी की सजा'** कुख्यात सेलुलर जेल अण्डमान में दी जाती थी।
- आर्य महिला सभा की स्थापना पंडित रमाबाई ने की।

Examtrix Free Education Platform

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित
महत्त्वपूर्ण संगठन एवं संस्थाएं

संस्थाएं	स्थापना वर्ष	संस्थापक
1. एशियाटिक सोसाइटी	1784	विलियम जोन्स
2. आत्मीय सभा	1815	राजा राममोहन राय
3. ब्रह्म समाज	1828	राजा राममोहन राय
4. तत्त्वबोधिनी सभा	1839	देवेन्द्रनाथ ठाकुर
5. साइंटिफिक सोसाइटी	1864	सर सैय्यद अहमद खां
6. प्रार्थना समाज	1867	केशवचन्द्र के सहयोग से एम. जी. रानाडे. आत्माराम पांडुकर, देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि
7. वेद समाज	1867	आचार्य केशवचन्द्र सेन
8. सत्यशोधक समाज	1873	ज्योतिबा फुले

9. इंडियन लीग	1875	शिशिर कुमार घोष
10. आर्यसमाज	1875	स्वामी दयानन्द सरस्वती
11. थियोसोफिकल सोसाइटी	1882	मैडम ब्लाटवस्की एवं कर्नल अल्काट
12. वेलूर मठ	1887	स्वामी विवेकानन्द
13. शारदा सदन	1889	रमाबाई
14. रामकृष्ण मिशन	1897	स्वामी विवेकानन्द
15. अभिनव भारत संस्था	1904	विनायक दामोदर सावरकर
16. मुस्लिम लीग	1906	आगा खां एवं सलीम उल्ला
17. अनुशीलन समिति	1907	श्री वारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र दत्त
18. विश्व भारती	1912	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
19. गदर पार्टी	1913	लाला हरदयाल, काशी राम
20. हिन्दू महासभा	1915	मदन मोहन मालवीय
21. होमरूल लीग	1916	तिलक एवं ऐनी बेसेन्ट
22. खिलाफत आन्दोल	1919	अली बन्धु
23. अखिल भा. ट्रेड यूनियन	1920	एन.एम. जोशी
24. स्वराज पार्टी	1923	मोती लाल नेहरू एवं चित्तरंजन दास
25. बहिष्कृत हितकारिणी सभा	1924	बी.आर. अम्बेदकर
26. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	1927	डॉ. हेडगेवार एवं बी.एम. मुंजे
27. हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	1928	भगत सिंह
28. हरिजन सेवक संघ (पूणे)	1932	महात्मा गाँधी
29. फॉरवर्ड ब्लॉक	1939	सुभाष चन्द्र बोस
30. आजाद हिन्द फौज	1942	रास बिहारी बोस
31. आजाद हिन्द सरकार	1943	सुभाष चन्द्र बोस

examtrix Free Education Platform

ब्रिटिश कालीन सामाचार पत्र/पत्रिकाएं

- भारत में प्रथम समाचार पत्र निकालने का श्रेय जेम्स ऑगस्ट्स हिक्की को मिला। उसने 1780 में **बंगाल गजट** का प्रकाशन किया।
- पहला भारतीय अंग्रेजी समाचार पत्र 1816 में कलकत्ता में **गंगाधर भट्टाचार्य** द्वारा **बंगाल गजट** निकाला गया।
- राजाराम मोहन राय ने **चंद्रिका** (धार्मिक कट्टरता का विरोध), **मिरातुल अखबार** एवं **ब्रह्मनिकल** मैंगजीन का प्रकाशन किया।
- हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक **क्रिस्टोदास पाल** को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जाता है।

पत्र-पत्रिका	वर्ष	संस्थापक	संस्थान	भाषा
सोम प्रकाश	1859	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	कलकत्ता	बंगाली
इंडियन मिरर	1861	देवेन्द्रनाथ टैगोर	कलकत्ता	अंग्रेजी
टाइम्स ऑफ इंडिया	1861	अंग्रेजी प्रेस	मुंबई	मराठी
इन्दु प्रकाश	1862	रानाडे	मुंबई	मराठी
नेटिव ओपिनियन	1864	वी.एन. मांडलिक	मुबई	अंग्रेजी
कविवचन सुधा	1867	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	वाराणसी	हिन्दी

अमृत बाजार पत्रिका	1868	मोतीलाल घोष	कलकत्ता	बंगाली
बंग दर्शन	1873	बंकिम चंद्र चटर्जी	कलकत्ता	बंगाली
हिन्दी प्रदीप	1877	बालकृष्ण भट्ट	वाराणसी	हिन्दी
स्टेट्समैन	1878	राबर्ट नाइट	कलकत्ता	अंग्रेजी
हिन्दू	1878	वी. राघवाचारी	मद्रास	अंग्रेजी
मराठा केसरी	1881	तिलक	मुंबई	
इंडिया	1890	दादाभाई नौरोजी	मुंबई	अंग्रेजी
हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड	1899	सच्चिदानन्द सिन्हा	दिल्ली	अंग्रेजी
इंडियन ओपिनियन	1903	महात्मा गांधी	द. अफ्रीका	अंग्रेजी
इंडियन सोशियोलॉजिस्ट	1905	श्यामजी कृष्णवर्मा	लन्दन	अंग्रेजी
प्रताप	1910	गणेश शं. विद्यार्थी	कानपुर	हिन्दी
अल हिलाल	1912	अबुल कलाम आजाद	कलकत्ता	उर्दू
गदर	1913	लाला हरदयाल	सैनफ्रांसिस्को	अंग्रेजी
कॉमन ह्वील	1914	एनी बेसेन्ट	मुंबई	अंग्रेजी
न्यू इंडिया	1914	एनी बेसेन्ट	मुंबई	अंग्रेजी
इंडिपेंडेन्ट	1919	मोतीलाल नेहरू	इलाहाबाद	अंग्रेजी
नवजीवन	1919	महात्मा गांधी	अहमदाबाद	गुजराती
यंग इंडिया	1922	महत्मा गांधी	अहमदाबाद	अंग्रेजी
हिन्दुस्तान टाइम्स	1922	के.एम. पणिक्कर	मुंबई	अंग्रेजी

examtrix Free Education Platform

राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाएं

आन्दोलन एवं घटनाएं	वर्ष	विषय एवं व्यक्ति
1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	1885	ए.ओ. ह्यूम *(बम्बई)*
2. बंग-भंग आन्दोलन *(स्वदेशी आंदोलन)*	1905	बंगाल के विभाजन के विरुद्ध
3. मुस्लिम लीग की स्थापना	1906	आगा खां एवं सलीम उल्ला खां *(ढाका)*
4. कांग्रेस का विभाजन विभाजित *(सूरत फूट)*	1907	नरम एवं गरम दल में
5. लखनऊ पैक्ट	दिस., 1916	कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच समझौता
6. रौलेक्ट एक्ट	19 मार्च, 1919	काला कानून, जिसके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार गिरफ्तार किया जा सकता था।
7. जलियांवाला बाग	13 अप्रैल, 1919	जेनरल डायर हत्याकाण्ड *(अमृतसर)*
8. खिलाफत आंदोलन	1920	शौकत अली, मोहम्मद अली
9. हण्टर कमेटी की रिपोर्ट जालियांवाला बाग से		28 मई, 1920 प्रकाशित संबंधित
10. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन	दिसम्बर, 1920	असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित

11. चौरी-चौरा काण्ड	5 फरवरी, 1922	गोरखपुर जिले *(उत्तर प्रदेश)* की इस घटना के बाद असहयोग आंदोलन स्थगित
12. साइमन कमीशन की अध्यक्षता	8 नवम्बर, 1927	जॉन साइमन की नियुक्ति में सात सदस्यीय आयोग का गठन
13. साइमन कमीशन का भारत आगमन	3 फरवरी, 1928	भारत में लाजपत राय के नेतृत्व में विरोध एवं उनपर लाठी प्रहार
14. बारदौली सत्याग्रह	अक्टूबर, 1928	गुजरात के किसानों का लगान-वृद्धि के विरोध में सरदार बल्लभ भाई के नेतृत्व में आन्दोलन
15. लाहौर षड्यंत्र केस	8 अप्रैल, 1929	भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा ब्रिटिश असेम्बली में बम फेंकना
16. कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन	दिसम्बर, 1929	पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव
17. नमक सत्याग्रह	12 मार्च, 1930 से	महात्मा गांधी के द्वारा 5 अप्रैल, 1930 साबरमती आश्रम से डांडी जाकर नमक बनाकर 'नमक कानून' का उल्लंघन करना
18. प्रथम गोलमेज सम्मे.		
19. द्वितीय गोलमेज सम्मे.	7 सितम्बर, 1931	गांधीजी ने सम्मेलन में भाग लिया
20. तृतीय गोलमेज सम्मेलन	17 नवम्बर, 1932	इसमें कांग्रेस ने भाग नहीं लिया
21. गांधी-इरविन समझौता	8 मार्च, 1931	महात्मा गांधी और वायसराय इरविन के मध्य सम्पन्न तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने की घोषणा
22. पूना पैक्ट	सितम्बर, 1932	गांधी जी और डॉ. अम्बेडकर के बीच एक समझौता, जिसके सांप्रदायिक पंचाट में दलितो के लिए प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं में प्रारंभ में राज्यों में 71 स्थान सुरक्षित किए गए थे, जो अब बढ़ाकर 148 कर दिए गए।
23. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन	मई, 1934	जयप्रकाश नारायण, मीनू मसानी और एस.एम. जोशी
24. पाकिस्तान की मांग	24 मार्च, 1940	मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में
25. अगस्त प्रस्ताव	8 अगस्त, 1940	वायसराय लिनलिथगो
26. क्रिप्स मिशन का	मार्च, 1942	स्टीफर्ड क्रिप्स प्रस्ताव
27. भारत छोड़ो प्रस्ताव	8 अगस्त, 1942	महात्मा गांधी
28. शिमला सम्मेलन	25 जून, 1945	सभी राजनैतिक दलों का सम्मेलन
29. प्रधानमंत्री एटली की घोषणा	15 मार्च, 1946	भारत को स्वतंत्र करने का आश्वासन
30. स्वतंत्रता की प्राप्ति	15 अगस्त, 1947	भारत स्वतंत्रता अधिनियम द्वारा
31. भारतीय गणतंत्र की स्थापना	26 जनवरी, 1950	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति

examtrix Free Education Platform

भारत के महान शहीद

नाम	संबंधित घटनाएं	सजा
• **खुदीराम बोस**	1908 में सेशन जज किंग्ज़फोर्ड की गाड़ी पर बम फेकने के कारण बेणी रेलवे स्टेशन पर	11अ., 1908 ई. को फांसी दे दी गई

	गिरफ्तार हुए।	
• **अशफाकउल्ला खां**	19 अगस्त, 1925 ई. को काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के अभियोग में बंदी बनाया गया।	18 दि., 1927ई. को फांसी दे दी गई।
• **ऊधम सिंह**	13 मार्च, 1940 ई. को सर माइकल-ओ-डायर को कैक्सटन हॉल लंदन में गोली मारने के कारण गिरफ्तार हुए।	31 जु., 1940 ई. को फांसी दे दी गई।
• **भगत सिंह**	सॉन्ड्र्स की हत्या तथा 8 अप्रैल, 1929 ई. को केन्द्रीय विधान सभा में बम फेकने सिलसिले में गिरफ्तारी। सॉन्ड्र्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई।	23 मा., 1931 ई. को फांसी पर चढ़कर शहीद हो गए।
• **सुखदेव**	सॉन्ड्र्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई। 15 अप्रैल, 1929 ई. को गिरफ्तार हुए।	27 मार्च,1931ई. को भगत सिंह के साथ फांसी दे दी गई।
• **चन्द्रशेखर आज़ाद**	काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के मुख्य अभियुक्त तथा अंग्रेजी सरकार ने इन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए तीस हजार रुपये पुरस्कार की घोषणा की।	27 फ., 1931 ई. को एल्फ्रेड पार्क *(इलाहाबाद)* में शहीद हुए।
• **राजगुरु**	17 दिसम्बर, 1928 को सौन्ड्र्स की हत्या में भाग लेने के कारण 30 दिसम्बर, 1929 को पूना में एक मोटर गैराज में गिरफ्तार हुए।	23 मार्च, 1931 को केन्द्रीय जेल लाहौर में भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी दे दी गइ।
• **राजेन्द्र लाहिड़ी**	दक्षिणेश्वर बम काण्ड तथा काकोरी डाक गाड़ी डकैती काण्ड के सिलसिले में गिरफ्तार हुए।	17 दि., 1927 ई. को गोण्डा की जेल में इन्हें फांसी दे दी गइ।
• **लाला लाजपत राय**	सामइन कमीशन का विरोध करने पर पुलिस के द्वारा क्रुर लाठी प्रहारों के शिकार हुए।	17 न., 1928 ई. को लाठी प्रहार के एक महीने के बाद उनका देहांत हो गया।

examtrix Free Education Platform

भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलन के प्रमुख वचन एवं नारे

प्रमुख नारे	नाम
1. **इन्कलाब जिन्दाबाद**	भगत सिंह
2. **दिल्ली चलो**	सुभाष चन्द्र बोस
3. **करो या मरो**	महात्मा गांधी
4. **जय हिन्द**	सुभाष चन्द्र बोस
5. **पूर्ण स्वराज्य**	जवाहर लाल नेहरू
6. **वेदों की ओर लौटो**	दयानन्द सरस्वती
7. **आराम हराम है**	जवाहर लाल नेहरू
8. **भारत छोड़ो**	महात्मा गांधी
9. **जय जवान, जय किसान**	लाल बहादुर शास्त्री *(1965 के पाकिस्तान युद्ध के समय)*
10. **सम्पूर्ण क्रांति**	जयप्रकाश नारायण
11. **विजयी विश्व तिरंगा प्यारा**	श्याम लाल गुप्ता पार्षद
12. **वन्दे मातरम्**	बंकिमचन्द्र चटर्जी
13. **जन-गण-मन अधिनायक जय हे**	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
14. **साम्राज्यवाद का नाश हो**	भगत सिंह
15. **स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है**	बाल गंगाधर तिलक
16. **सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है**	राम प्रसाद बिस्मिल
17. **"सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा"**	इकबाल
18. **मेरे सिर पर लाठी का एक-एक प्रहार, अंग्रेजी शासन के ताबूत की कील साबित होगा**	लाला लाजपत राय

examtrix Free Education Platform

प्रमुख समाज सुधारक संस्थाएं एवं संस्थापना

1. **ब्रह्म समाज**–राजा राममोहन राय (1828)
2. **तत्वबोधिनी सभा**–देवेन्द्र नाथ टैगोर (1839)
3. **प्रार्थना समाज**–आत्माराम पांडुरंग (1867)
4. **देव समाज**-शिवनारायण अग्निहोत्री (1887, लाहौर)
5. **आर्य समाज**-दयानन्द सरस्वती (1875, मम्बई)
6. **इण्डियन एसोसिएशन**–सुरेन्द्र नाथ बनर्जी (1876)
7. **थियोसॉफीकल सोसाइटी**–मैडम ब्लैवात्सकी व कर्नल अल्काट (1875, न्यूयॉर्क, भारत अड्यार में 1889)
8. **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस**–ए.ओ. ह्यूम (1885)
9. **रामकृष्ण मिशन**–स्वामी विवेकानंद (1897, बेलूर)
10. **वेद समाज**–के.के. श्रीधरालु नायडू
11. **सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी**–गोपाल कृष्ण गोखले (1905)
12. **मुस्लिम लीग**–सलीम उल्ला व आगा खां (1906)
13. **गदर पार्टी**–लाला हरदयाल, परमानन्द, काशीराम (1913, अमेरिका)
14. **होमरूल लीग**–बाल गंगाधर तिलक (1916)
15. **अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)**–एन.एम. जोशी (1920)
16. **स्वराज पार्टी**–मोतीलाल नेहरू व चितरंजन दास (1923)

17. **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी**–चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह (1928)
18. **खुदाई खिदमतगार**–खान अब्दुल गफ्फार खां (1937)
19. **खाकसार पार्टी**–अल्लामा मशरिकी
20. **सिख धर्म**–गुरु नानक देव
21. **खालसा पंथ**–गुरु गोबिन्द सिंह
22. **फॉरवर्ड ब्लॉक**–सुभाष चन्द्र बोस (1939)

उपाधि, प्राप्तकर्त्ता एवं दाता

उपाधि	प्राप्तकर्त्ता	दाता
गुरूदेव	रवीन्द्रनाथ टैगोर	महात्मा गांधी
महात्मा	महात्मा गांधी	रवीन्द्र नाथ टैगोर
नेताजी	सुभाष चन्द्र बोस	एडोल्फ हिटलर
सरदार	बल्लभ भाई पटेल	बारदोली की महिलाएं
देशरत्न	डा. राजेन्द्र प्रसाद	महात्मा गांधी
कायदे आजम	मोहम्मद अली जिन्ना	महात्मा गांधी
देश नायक	सुभाष चन्द्र बोस	रवीन्द्र नाथ टैगोर
विवेकानन्द	स्वामी विवेकानन्द	महाराजा खेतड़ी
राष्ट्रपिता	महात्मा गांधी	सुभाष चन्द्र बोस
राजा	राजा राम मोहन राय	अकबर द्वितीय

स्वतंत्रता पूर्व महत्वपूर्ण निर्णय

- **शिमला सम्मेलन (1945) : 25 जून, 1945** को शिमला में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में **कुल 22 प्रतिनिधियों** ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख नेता थे – **जवाहर लाल नेहरू, मोहम्मद जिन्ना, इस्माइल खां, सरदार पटेल, अबुल कलाम आदाज, खान अब्दुल गफ्फार खां तथा तारा सिंह**। सम्मेलन के दौरान मुस्लिम लीग द्वारा यह शर्त रखी गई कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में नियुक्त होने वाले सभी मुस्लिम सदस्यों का चयन वह स्वयं करेगी।
- **माउन्टबेटन योजना :** 3 जून, 1947 को माउन्टबेटन योजना प्रस्तुत की गई जिसमें निम्न बातें कही गई –
  (1) वर्तमान परिस्थितियों में भारत के विभाजन से ही समस्या सुलझ सकती है।
  (2) बंगाल, पंजाब एवं असम में विधान मण्डलों के अधिवेशन दो भागें में किये जायेंगे-प्रथम भाग में उन जिलों के प्रतिनिधि हिस्सा लेगें जहां मुसलमानों की बहुलता है और द्वितीय भाग में उन जिलों के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं, दोनों यह निर्णय स्वयं लेंगे कि उन्हें भारत में रहना है या पाकिस्तान में।
  (3) उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में जनमत संग्रह द्वारा यह पता लगाया जाये कि वे किस भाग में – भारत या पाकिस्तान में रहना चाहते हैं।
  (4) असम के सिलहट जिले के लोगों की भी राय जानने के लिए जनमत संग्रह का सहारा लिया जायेगा।
  (5) पंजाब, बंगाल व असम के विभाजन के लिए एक सीमा आयोग की नियुक्ति होगी जो उक्त प्रांतों की सीमा निश्चित करेगा।
  (6) **देशी रियासतों से भी 15 अगस्त, 1947 से ब्रिटिश सर्वोच्चता** हटा ली जायेगी तथा उन्हें भारत या पाकिस्तान से मिलने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी।

स्वातंत्रयोत्तर भारत के ऐतिहासिक निर्णय

- **26 नवंम्बर, 1949** को स्वतंत्र भारत का संविधान स्वीकृत हुआ। संविधान 26 जनवरी, 1950 से प्रवृत्त हुआ।
- संविधान के अनुसार भारत एक संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक, समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य

examtrix Free Education Platform

बना।

- संविधान में मूल अधिकार, मूल कर्त्तव्य, स्वतंत्र न्यायपालिका, प्रजातांत्रिक शासन जैसी विशिष्टताएं थी।
- **देशी रियासतों का सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में भारतीय संघ में विलय हुआ।** भारतीय संघ में शामिल प्रमुख भारतीय थे – **जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद, पांडिचेरी व गोवा।**
- भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ। **फजल अली आयोग** की सिफारिशों के आधार पर नए राज्य बनें।
- स्वतंत्रता पूर्व से ही नेहरू भारत की आर्थिक परिस्थितियों के प्रति चिंतनशील थे। वे सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्निर्माण हेतु नियोजन को मूलभूत तत्व मान चुके थे।
- भारत में शुरू किया गया **आर्थिक आयोजन सोवियत मॉडल** पर आधारित था। इसमें **पंचवर्षीय योजनाएं** बनी तथा देश आर्थिक विकास के रास्ते पर बढ़ा।
- कृषि में सुधार हुए। **1949** में विभिन्न प्रांतों में जमींदारी उन्मूलन हुआ।
- **विनोवा भावे के नेतृत्व में भूदान आन्दोलन** हुआ जिसके फलस्वरूप देश **समान भूमि वितरण** की ओर अग्रसर हुआ।
- भारत ने गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित विदेश नीति को अपनाया।
- **अप्रैल, 1954** को चीन से पंचशील सिद्धान्त पर आधारित समझौते किए गए।
- **1962 को चीन ने भारत पर हमला किया तथा भारतीय इलाके पर कब्जा कर लिया। परिणामतः सीमा विवाद आज भी चल रहा है।**

examtrix
Free Education Platform